उत्पन्न होनेके प्रथम समय कृष्ण, नील और कापोत लेश्यासे परिणत हो जाते है। (ध २/१,१/७६४/५)।

५. अपर्याप्त कालमें सम्भव लेश्याएँ

ध. २/१,१/पृ./पंक्ति नं. णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणविंतर-जोइसियदेवाणमपज्जत्तकाले किण्ह-णीलकाउलेस्साओ भवंति। सोधम्मादि उवरिमदेवाणमपज्जत्तकाले तेउ-पम्मसुक्कलेस्साओ भवंति (४२२/१०) असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ हवंति (५११/७)। ओरालियमिस्सकायजोगे भावेण छ लेस्साओ। मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीण ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाण किण्ह-णीलकाउलेस्सा चेव हवंति (६५४/१,७)। देव-मिच्छाइट्ठिसासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणाण संकिलेसेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील-काउलेस्साणं एगदमा भवदि। सम्माइट्ठीण पुण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ चिरतणाओ जाव अंतोमुहुत्तं ताव ण णस्सति। (७६४/-५)। = १. नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वान व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएँ होती है। तथा सौधर्मादि ऊपरके देवोंके अपर्याप्त कालमें पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या होती है। ऐसा जानना चाहिए। २ असंयत सम्यग्दृष्टियोके अपर्याप्त कालमें छहों लेश्याएँ होती है। ३ औदारिक मिश्रकाययोगीके भावसे छहों लेश्याएँ होती है। औदारिक-मिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोके भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएँ ही होती है। ४. मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके मरते समय संक्लेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएँ नष्ट होकर कृष्ण, नील और कापोत लेश्यामेसे यथा सम्भव कोई एक लेश्या हो जाती है। किन्तु सम्यग्दृष्टि देवोके चिरतन (पुरानी तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएँ मरण करनेके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त तक नष्ट नही होती है, इसलिए शुक्ल लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि देवोके औदारिककाय नही होता)(ध २/१,१/६५६/१२)।

गो. क/जी. प्र/६२५/४६८/१२ तद्भवप्रथमकालान्तर्मुहूर्ते पूर्वभव-लेश्यासद्भावात्। = वर्तमान भवके प्रथम अन्तर्मुहूर्तकालमे पूर्व-भवकी लेश्याका सद्भाव होनेसे।

६. अपर्याप्त या मिश्र योगमें लेश्या सम्बन्धी शंका समाधान

१. मिश्रयोग सामान्यमें छहों लेश्या सम्बन्धी

ध्र. २/१,१/६५४/६ देवणेरइयसम्माइट्ठिण मणुसगदीए उप्पण्णाणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं अविणट्ठ-पुव्विल्ल-भाव-लेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति त्ति। = देव और नारकी मनुष्यगतिमें उत्पन्न हुए है, औदारिक मिश्रकाय योगमे वर्तमान है, और जिनकी पूर्वभव सम्बन्धी भाव लेश्याएँ अभीतक नष्ट नहीं हुई है, ऐसे जीवोंके भावसे छहो लेश्याएँ पायी जाती है; इसलिए औदारिकमिश्र काययोगी जीवोके छहो लेश्याएँ कही गयी है।

२. मिथ्यादृष्टि व सासादन सम्यग्दृष्टिके शुभ लेश्या सम्बन्धी

दे० लेश्या/५/४ में ध. २/१,१/७६४/५ (मिथ्यादृष्टि व सासादन सम्यग्दृष्टि देवोके मरते समय संक्लेश हो जानेसे पीत, पद्म व शुक्ल लेश्याएँ नष्ट होकर कृष्ण, नील व कापोतमेंसे यथा सम्भव कोई एक लेश्या हो जाती है।)

३. अविरत सम्यग्दृष्टिमें छहों लेश्या सम्बन्धी

ध/२/१,१/७५२/७ छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सासम्माइट्ठिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि त्ति। = छठी पृथिवीसे जो कृष्ण लेश्यावाले अविरत सम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योमें आते है, उनके अपर्याप्त कालमें वेदक सम्यक्त्वके साथ कृष्ण लेश्या पायी जाती है।

दे० लेश्या/५/४ मे ध २/१,१/५११/३ (१-६ पृथिवी तकके असयत सम्यग्दृष्टि नारकी जीव अपने-अपने योग्य कृष्ण, नील व कापोत लेश्याके साथ मनुष्योमें उत्पन्न होते है। उसी प्रकार असंयत सम्यग्दृष्टि देव भी अपने-अपने योग्य पीत, पद्म व शुक्ल लेश्याओके साथ मनुष्योमें उत्पन्न होते है। इस प्रकार अविरत सम्यग्दृष्टि मनुष्योके अपर्याप्त कालमें छहो लेश्याएँ बन जाती हैं।

ध. २/१,१/६५७/३ सम्माइट्ठिणो तहा ण परिणमंति, अंतोमुहुत्तं पुव्विल्ललेस्साहि सह अच्छिय अण्णलेस्सं गच्छंति। किं कारणं। सम्माइट्ठीण बुद्धिट्ठिय परमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीण मरणकाले संकिलासाभावादो। णेरइय-सम्माइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति। = सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्याओ रूपसे परिणत नही होते है, किन्तु तिर्यंच और मनुष्योमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्त तक पूर्व रहकर पीछे अन्य लेश्याओंको प्राप्त होते है। किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो पुरानी चिरंतन लेश्याओके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते है। इस प्रकार सम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त अवस्थामे छहो लेश्याएँ बन जाती है।

७. कपाट समुद्घातमें लेश्या

ध. २/१,१/६५४/६ कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स सुक्कलेस्सा चेव भवदि। = कपाट समुद्घातगत औदारिक मिश्र काययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्ललेश्या होती है।

८. चारों गतियोंमें लेश्या की तरतमता

मू. आ./११३४-११३७ काऊ काऊ तह काउणील णीला य णीलकिण्हाय। किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा रदणादिपुढवीसु।११३४। तेऊ तेऊ तह तेउ पम्म पम्मा य पम्मसुक्का य। सुक्का य परमसुक्का लेस्साभेदो मुणेयव्वो।११३५। तिण्हं दोण्ह दोण्हं छण्हं दोण्ह च तेरसण्हं च। एतो य चोद्दसण्ह लेस्सा भवणादिदेवाणं।११३६। एइंदियवियलिंदिय असण्णिणो तिण्णि होंति असुहाओ। संकादीदाऊणं तिण्णि सुहा छप्पि सेसाण।११३७। = नरकगति—रत्नप्रभा आदि नरककी पृथिवियो मे जघन्य कापोती, मध्यम कापोती, उत्कृष्ट कापोती, तथा जघन्य नील, मध्यम नील उत्कृष्ट नील तथा जघन्य कृष्ण लेश्या और उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या है।११३४। **देवगति**—भवनवासी आदि देवोके क्रमसे जघन्य तेजोलेश्या भवनत्रिकमें है, दो स्वर्गोंमे मध्यम तेजोलेश्या है, दोमे उत्कृष्ट तेजोलेश्या है जघन्य पद्मलेश्या है, छहमें मध्यम पद्मलेश्या है, दोमे उत्कृष्ट पद्मलेश्या है और जघन्य शुक्ल लेश्या है, तेरहमें मध्यम शुक्ललेश्या है और चौदह विमानोंमें चरम शुक्ललेश्या है।११३५-११३६। **तिर्यंच व मनुष्य**—एकेंद्री, विकलेंद्री असंज्ञीपचेंद्रोके तीन अशुभ लेश्या होती है, असंख्यात वर्षकी आयु वाले भोगभूमिया कुभोगभूमिया जीवोके तीन शुभलेश्या है और बाकीके कर्मभूमिया मनुष्य तिर्यंचोके छहों लेश्या होती हैं।११३७। (स सि/३/३/२०७/१,४/२२/२५३/४) (पं. स./प्रा./१/१८५-१८६); (रा. वा./३/३/४/१६४/६,४/२२/२४०/२४); (गो. जी/मू./५२६-५३४)।

लोंच—दे० केश लोच।

लोक—कालका एक प्रमाण विशेष—दे० गणित/I/१।

लोक—

१	**लोक स्वरूपका तुलनात्मक अध्ययन**	
१	लोक निर्देशका सामान्य परिचय।	४४५
२	जैन मताभिमत भूगोल परिचय।	४४६
३	वैदिक धर्माभिमत भूगोल परिचय।	४४६
४	बौद्धाभिमत भूगोल परिचय।	४४९
५	आधुनिक विश्व परिचय।	४५०
६	उपरोक्त मान्यताओंकी तुलना।	४५०
७	चातुर्द्विपिक भूगोल परिचय।	४५३

२ लोक सामान्य निर्देश

* लोकाकाश व लोकाकाशमें द्रव्योंका अवगाह। —दे० आकाश/३।

१ लोकका लक्षण।

२ लोकका आकार।

३ लोकका विस्तार

४ वातवलयोंका परिचय।

- १ वातवलय सामान्य परिचय।
- २ तीन वातवलयोंका अवस्थान क्रम।
- ३ पृथिवियोंके साथ वातवलयोंका स्पर्श।
- ४ वातवलयोंका विस्तार।

५ लोकके आठ रुचक प्रदेश।

६ लोक विभाग निर्देश।

७ त्रस व स्थावर लोक निर्देश।

८ अधोलोक सामान्य परिचय।

९ भावन लोक निर्देश।

१० व्यन्तर लोक निर्देश।

११ मध्य लोक निर्देश।

- १. द्वीप सागर निर्देश।
- २ तिर्यक्लोक मनुष्यलोकादि विभाग।

१२ ज्योतिष लोक सामान्य निर्देश।

* ज्योतिष विमानोंकी संचारविधि। —दे० ज्योतिष/२।

१३ ऊर्ध्वलोक सामान्य परिचय।

३ जम्बूद्वीप निर्देश

१ जम्बूद्वीप सामान्य निर्देश।

२ जम्बूद्वीपमें क्षेत्र पर्वत, नदी, आदिका प्रमाण।

- १. क्षेत्र नगर आदिका प्रमाण।
- २. पर्वतोंका प्रमाण।
- ३ नदियोंका प्रमाण।
- ४. द्रह-कुण्ड आदि।

३ क्षेत्र निर्देश।

४ कुलाचल पर्वत निर्देश।

५ विजयार्ध पर्वत निर्देश।

६ सुमेरु पर्वत निर्देश।

- १ सामान्य निर्देश।
- २. मेरुका आकार।
- ३ मेरुकी परिधियाँ।
- ४. वनखण्ड निर्देश।

७ पाण्डुक शिला निर्देश

८ अन्य पर्वतोंका निर्देश।

९ द्रह निर्देश।

१० कुण्ड निर्देश।

११ नदी निर्देश।

१२ देवकुरु व उत्तरकुरु निर्देश।

१३ जम्बू व शाल्मली वृक्षस्थल।

१४ विदेहके क्षेत्र निर्देश।

* लोक स्थित कल्पवृक्ष व कमलादि। —दे० वृक्ष।

* लोक स्थित चैत्यालय। —दे० चैत्य चैत्यालय/३।

४ अन्य द्वीप सागर निर्देश

१ लवणसागर निर्देश।

२ धातकीखण्ड निर्देश।

३ कालोदसमुद्र निर्देश।

४ पुष्करद्वीप निर्देश।

५ नन्दीश्वरद्वीप निर्देश।

६ कुण्डलवरद्वीप निर्देश।

७ रुचकवरद्वीप निर्देश।

८ स्वयम्भूरमण समुद्र निर्देश।

५ द्वीप-पर्वतों आदिके नाम रस आदि

१ द्वीप समुद्रोंके नाम।

* द्वीप समुद्रोंके अधिपति देव। —दे० व्यन्तर/४/७।

२ जम्बूद्वीपके क्षेत्रोंके नाम

- १ जम्बूद्वीप के महाक्षेत्रोंके नाम।
- २. विदेहके ३२ क्षेत्र व उनके प्रधान नगर।

* द्वीप, समुद्रों आदिके नामोंकी अन्वर्थता। —दे० वह वह नाम।

३ जम्बू द्वीपके पर्वतोंके नाम

- १. कुलाचल आदिके नाम।
- २ नाभिगिरि तथा उनके रक्षक देव।
- ३ विदेह वक्षारोंके नाम।
- ४ गजदन्तोंके नाम।
- ५. यमक पर्वतोंके नाम।
- ६. दिग्गजेन्द्रोंके नाम।

४ जम्बूद्वीपके पर्वतीय कूट व तन्निवासी देव।

- १. भरत विजयार्ध।
- २ ऐरावत विजयार्ध।
- ३. विदेहके ३२ विजयार्ध।
- ४ हिमवान्।
- ५. महाहिमवान्।
- ६. निषध पर्वत।
- ७. नील पर्वत।
- ८ रुक्मि पर्वत।
- ९ शिखरी पर्वत।
- १०. विदेहके १६ वक्षार।
- ११. सौमनस गजदन्त।
- १२. विद्युत्प्रभ गजदन्त।
- १३ गन्धमादन गजदन्त।
- १४ माल्यवान् गजदन्त।

५ सुमेरु पर्वतके वनोंमें कूटोंके नाम व देव।

६ जम्बूद्वीपके द्रहों व वापियोंके नाम।

- १ हिमवान् आदि कुलाचलों पर।
- २ सुमेरु पर्वतके वनोंमें।
- ३. देव व उत्तर कुरु में।

७ महा द्रहके कूटोंके नाम।

८ जम्बूद्वीपकी नदियोंके नाम।

- १. भरतादि महाक्षेत्रोंमें
- २. विदेहके ३२ क्षेत्रोंमें
- ३. विदेह क्षेत्रकी १२ विभंगा नदियोंके नाम।

९ लवण सागरके पर्वत पाताल व तन्निवासी देव।

१० मानुषोत्तर पर्वतके कूटों व देवोंके नाम।

११ नन्दीश्वर द्वीपकी वापियों व उनके देव।

१२ कुण्डलवर पर्वतके कूटों व देवोंके नाम।

१३	रुचक पर्वतके कूटों व देवोंके नाम ।
१४	पर्वतों आदिके वर्ण ।
६	**द्वीप क्षेत्र पर्वत आदिका विस्तार**
१	द्वीप सागरोंका सामान्य विस्तार ।
२	लवण सागर व उसके पातालादि ।
३	अढाई द्वीपके क्षेत्रोंका विस्तार ।
	१ जम्बूद्वीपके क्षेत्र ।
	२, धातकी खण्डके क्षेत्र ।
	३, पुष्करार्धके क्षेत्र ।
४	जम्बूद्वीपके पर्वतों व कूटोंका विस्तार
	१, लम्बे पर्वत ।
	२, गोल पर्वत ।
	३, पर्वतीय व अन्यकूट ।
	४, नदी, कुण्ड, द्वीप व पाण्डुक शिला आदि ।
	५ अढाई द्वीपकी सर्व वेदियाँ ।
५	शेष द्वीपोंके पर्वतों व कूटोंका विस्तार ।
	१ धातकी खण्डके पर्वत ।
	२, पुष्कर द्वीपके पर्वत व कूट ।
	३, नन्दीश्वर द्वीपके पर्वत ।
	४, कुण्डलवर पर्वत व उसके कूट ।
	५ रुचकवर पर्वत व उसके कूट ।
	६. स्वयंभूरमण पर्वत ।
६	अढाई द्वीपके वनखण्डोंका विस्तार ।
	१ जम्बूद्वीपके वनखण्ड ।
	२. धातकी खण्डके वनखण्ड ।
	३ पुष्करार्ध द्वीपके वनखण्ड ।
	४ नन्दीश्वर द्वीपके वन ।
७	अढाई द्वीपकी नदियोंका विस्तार ।
	१. जम्बूद्वीपकी नदियाँ ।
	२. धातकीखण्डकी नदियाँ ।
	३ पुष्करद्वीपकी नदियाँ ।
८	मध्यलोककी वापियों व कुण्डोंका विस्तार ।
	१. जम्बूद्वीप सम्बन्धी ।
	२. अन्यद्वीपों सम्बन्धी
९	अढाई द्वीपके कमलोंका विस्तार ।
७	**लोकके चित्र**
१-४	वैदिक धर्माभिमत भूगोल—
	१. भूलोक
	२. जम्बू द्वीप
	३ पाताल लोक
	४. सामान्य लोक
५-७	बौद्ध धर्माभिमत भूगोल
	५. भूमण्डल
	६. जम्बू द्वीप
	७. भूलोक सामान्य
८	चातुर्द्वीपिक भूगोल
९	तीन लोक
१०-११	अधोलोक
	१०. अधोलोक सामान्य
	११. प्रत्येक पटलमें इन्द्रक व श्रेणीबद्ध
	* रत्नप्रभा पृथिवी
	* अब्बहुल भागमे नरकोंके पटल
	* भावन लोक
*	ज्योतिष लोक
	१. मध्यलोकमें चरज्योतिष विमानोंका अवस्थान ।
	२ ज्योतिष विमानोका आकार ।
	३. अचर ज्योतिष विमानोका अवस्थान ।
	४. ज्योतिष विमानोकी सचारविधि ।
*	ऊर्ध्व लोक
	१. स्वर्गलोक सामान्य । —दे० स्वर्ग
	२. प्रत्येक पटलमें इन्द्रक व श्रेणीबद्ध ।—दे० स्वर्ग
	३ सौधर्म युगलके ३१ पटल ।—दे० स्वर्ग
	४. लौकान्तिकलोक । —दे० लौकान्तिक
१२	मध्यलोक सामान्य ।
१३	जम्बू द्वीप ।
१४	{ भरतक्षेत्र ।
	{ गंगानदी ।
*	पद्मद्रह । —दे० चित्र सं० २४
१५	विजयार्धपर्वत ।
१६-२०	सुमेरु पर्वत ।
	१६. सुमेरुपर्वत सामान्य व चूलिका ।
	१७. नन्दन व सौमनस वन ।
	१८ इन वनोकी पुष्करिणी
	१९. पाण्डुक वन ।
	२० पाण्डुक शिला ।
२१	नाभिगिरि पर्वत
२२	गजदन्त पर्वत
२३	यमक व काञ्चन गिरि
२४	पद्म द्रह
२५	पद्म द्रहके मध्यवर्ती कमल
२६	देव कुरु व उत्तर कुरु
२७	विदेहका कच्छा क्षेत्र
२८	पूर्वापर विदेह—दे० चित्र सं० १३
२९-३२	जम्बू व शाल्मली वृक्ष स्थल
	२९. सामान्य स्थल ।
	३० पीठ पर स्थित मूल वृक्ष ।
	३१. १२ भूमियोंका सामान्य परिचय ।
	३२. वृक्षकी मूलभूत प्रथम भूमि ।
३३-३५	लवण सागर ।
	३३. सागर तल
	३४. उत्कृष्ट पाताल
	३५. लवण सागर
३६	मानुषोत्तर पर्वत ।
३७	अढाई द्वीप ।
३८	नन्दीश्वर द्वीप ।
३९	कुण्डलवर पर्वत व द्वीप ।
४०	रुचकवर पर्वत व द्वीप । (प्रथम दृष्टि)
४१	रुचकवर पर्वत व द्वीप (द्वि० दृष्टि)

१. लोक स्वरूपका तुलनात्मक अध्ययन

१. लोकनिर्देशका सामान्य परिचय

पृथिवी, इसके चारो ओरका वायुमण्डल, इसके नीचेकी रचना तथा इसके ऊपर आकाशमें स्थित सौरमण्डलका स्वरूप आदि, इनके ऊपर रहनेवाली जीव राशि, इनमें उत्पन्न होनेवाले पदार्थ, एक दूसरेके साथ इनका सम्बन्ध ये सब कुछ वर्णन भूगोलका विषय है। प्रत्यक्ष होनेसे केवल इस पृथिवी मण्डलकी रचना तो सर्व सम्मत है, परन्तु अन्य बातोंका विस्तार जाननेके लिए अनुमान ही एकमात्र आधार है। यद्यपि आधुनिक यन्त्रोसे इसके अतिरिक्त कुछ अन्य भूखण्डोंका भी प्रत्यक्ष करना सम्भव है पर असीम लोककी अपेक्षा वह किसी गणनामें नही है। यन्त्रोसे भी अधिक विश्वस्त योगियोंकी सूक्ष्म दृष्टि है। आध्यात्मिक दृष्टिकोणसे देखनेपर लोकोकी रचनाके रूपमें यह सब कथन व्यक्तिकी आध्यात्मिक उन्नति व अवनतिका प्रदर्शन मात्र है। एक स्वतन्त्र विषय होनेके कारण उसका दिग्दर्शन यहाँ कराया जाना सम्भव नहीं है। आज तक भारतमें भूगोलका आधार वह दृष्टि ही रही है। जैन, वैदिक व बौद्ध आदि सभी दर्शनकारोंने अपने-अपने ढंगसे इस विषयका स्पर्श किया है और आजके आधुनिक वैज्ञानिकोने भी। सभीकी मान्यताएँ भिन्न-भिन्न होती हुई भी कुछ अंशोमें मिलती है। जैन व वैदिक भूगोल काफी अशोमे मिलता है। वर्तमान भूगोलके साथ किसी प्रकार भी मेल बैठता दिखाई नहीं देता, परन्तु यदि विशेषज्ञ चाहे तो इस विषयकी गहराइयोंमें प्रवेश करके आचार्योंके प्रतिपादनकी सत्यता सिद्ध कर सकते है। इसी सब दृष्टियोकी संक्षिप्त तुलना इस अधिकारमें की गयी है।

२. जैनाभिमत भूगोल परिचय

जैसा कि अगले अधिकारोंपरसे जाना जाता है, इस अनन्त आकाशके मध्यका वह अनादि व अकृत्रिम भाग जिसमे कि जीव पुद्गल आदि षट् द्रव्य समुदाय दिखाई देता है, वह लोक कहलाता है, जो इस समस्त आकाशकी तुलनामे नाके बराबर है।—लोक नामसे प्रसिद्ध आकाशका यह खण्ड मनुष्याकार है तथा चारो ओर तीन प्रकारकी वायुओंसे वेष्टित है। लोकके ऊपरसे लेकर नीचे तक बीचोंबीच एक राजू प्रमाण विस्तार युक्त त्रसनाली है। त्रस जीव इससे बाहर नहीं रहते पर स्थावर जीव सर्वत्र रहते है। यह तीन भागोंमें विभक्त है—अधोलोक, मध्यलोक व ऊर्ध्वलोक। अधोलोकमें नारकी जीवोंके रहनेके अति दुखमय रौरव आदि सात नरक है, जहाँ पापी जीव मरकर जन्म लेते है और ऊर्ध्वलोकमें करोडो योजनोके अन्तरालसे एकके ऊपर एक करके १६ स्वर्गोंमें कल्पवासी विमान है। जहाँ पुण्यात्मा जीव मरकर जन्मते है। उनसे भी ऊपर एक भवावतारी लौकान्तिकोके रहनेका स्थान है, तथा लोकके शीर्षपर सिद्धलोक है जहाँ कि मुक्त जीव ज्ञानमात्र शरीरके साथ अवस्थित है। मध्यलोकमें वलयाकार रूपसे अवस्थित असंख्याती द्वीप व समुद्र एकके पीछे एकको वेष्टित करते है। जम्बू, धातकी, पुष्कर आदि तो द्वीप है और लवणोद कालोद, वारुणीवर, क्षीरवर, इक्षुवर, आदि समुद्र है। प्रत्येक द्वीप व समुद्र पूर्व पूर्वकी अपेक्षा दूने विस्तार युक्त है। सबके बीचमे जम्बू द्वीप है, जिसके बीचोबीच सुमेरु पर्वत है। पुष्कर द्वीपके बीचोबीच वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है, जिससे उसके दो भाग हो जाते है।

जम्बूद्वीप, धातकी व पुष्करका अभ्यन्तर अर्धभाग, ये अढाई द्वीप हैं इनसे आगे मनुष्योका निवास नहीं है। शेष द्वीपोमे तिर्यंच व भूतप्रेत आदि व्यन्तर देव निवास करते है।—जम्बूद्वीपमें सुमेरुके दक्षिणमें हिमवान, महाहिमवान व निषध, तथा उत्तरमें नील, रुक्मि व शिखरी ये छ' कुलपर्वत है जो इस द्वीपको भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत व ऐरावत नामवाले सात क्षेत्रोमें विभक्त करते है। प्रत्येक पर्वतपर एक एक महाह्रद है जिनमेसे दो-दो नदियाँ निकलकर प्रत्येक क्षेत्रमे पूर्व व पश्चिम दिशा मुखसे बहती हुई लवण सागरमें मिल जाती है। उस उस क्षेत्रमें वे नदियाँ अन्य सहस्रो परिवार नदियोको अपनेमे समा लेती है। भरत व ऐरावत क्षेत्रोमे बीचोबीच एक-एक विजयार्धपर्वत है। इन क्षेत्रोकी दो-दो नदियो व इस पर्वतके कारण ये क्षेत्र छ छ' खण्डोमे विभाजित हो जाते है, जिनमे मध्यवर्ती एक खण्डमे आर्य जन रहते है और शेष पाँचमें म्लेच्छ। इन दोनो क्षेत्रोमे ही धर्म-कर्म व सुख-दुख आदिकी हानि वृद्धि होती है, शेष क्षेत्र सदा अवस्थित है।—विदेह क्षेत्रमे सुमेरुके दक्षिण व उत्तरमें निषध व नील पर्वतस्पर्शी सौमनस, विद्युत्प्रभ तथा गन्धमादन व माल्यवान नामके दो दो गजदन्ताकार पर्वत है, जिनके मध्य देवकुरु व उत्तरकुरु नामकी दो उत्कृष्ट भोगभूमियाँ है, जहाँके मनुष्य व तिर्यंच बिना कुछ कार्य करे अति सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते है। उनकी आयु भी असख्यातों वर्षकी होती है। इन दोनो क्षेत्रोमे जम्बू व शाल्मली नामके दो वृक्ष है। जम्बू वृक्षके कारण ही इसका नाम जम्बूद्वीप है। इसके पूर्व व पश्चिम भागमेसे प्रत्येकमे १६,१६ क्षेत्र हैं। जो ३२ विदेह कहलाते है। इनका विभाग वहाँ स्थित पर्वत व नदियोके कारणसे हुआ है। प्रत्येक क्षेत्रमे भरतक्षेत्रवत् छह खण्डोकी रचना है। इन क्षेत्रोमें कभी धर्म विच्छेद नही होता।—दूसरे व तीसरे आधे द्वीपमें पूर्व व पश्चिम विस्तारके मध्य एक एक सुमेरु है। प्रत्येक सुमेरु सम्बन्धी छ' पर्वत व सात क्षेत्र है जिनकी रचना उपरोक्तवत् है।—लवणोदके तलभाग में अनेकों पाताल है, जिनमे वायुकी हानि-वृद्धिके कारण सागरके जलमे भी हानि-वृद्धि होती रहती है। पृथिवीतलसे ७६० योजन ऊपर आकाशमें क्रमसे सितारे, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, बुध, शुक्र, वृहस्पति, मंगल व शनीचर इन ज्योतिष ग्रहोके सचार क्षेत्र अवस्थित है, जिनका उल्लंघन न करते हुए वे सदा सुमेरुकी प्रदक्षिणा देते हुए घूमा करते है। इसीके कारण दिन, रात, वर्षा ऋतु आदिकी उत्पत्ति होती है। जैनाम्नायमे चन्द्रमाकी अपेक्षा सूर्य छोटा माना जाता है।

३. वैदिक धर्माभिमत भूगोल परिचय

—दे० आगे चित्र सं० १ से ४।

(विष्णु पुराण/२/२-७ के आधारपर कथित भावार्थ) इस पृथिवीपर जम्बू, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर ये सात द्वीप, तथा लवणोद, इक्षुरस, सुरोद, सर्पिस्सलिल, दधितोय, क्षीरोद और स्वादुसलिल ये सात समुद्र है (२/२-४) जो चूडीके आकार रूपसे एक दूसरेको वेष्टित करके स्थित है। ये द्वीप पूर्व पूर्व द्वीपकी अपेक्षा दूने विस्तारवाले है। (२/४,८८)।

इन सबके बीचमें जम्बूद्वीप और उसके बीचमे ८४००० योजन ऊँचा सुमेरु पर्वत है। जो १६००० योजन पृथिवीमे घुसा हुआ है। सुमेरुसे दक्षिणमें हिमवान, हेमकूट और निषध तथा उत्तरमें नील, श्वेत और शृंगी ये छ वर्ष पर्वत है। जो इसको भारतवर्ष, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्यमय और उत्तर कुरु, इन सात क्षेत्रोमें विभक्त कर देते है।—नोट—जम्बूद्वीपकी चातुर्द्वीपिक भूगोलके साथ तुलना (-दे० आगे शीर्षक न० ७)। मरु पर्वतकी पूर्व व पश्चिममें इलावृतकी मर्यादाभूत माल्यवान व गन्धमादन नामके दो पर्वत है जो निषध व नील तक फैले हुए है। मेरुके चारो ओर पूर्वादि दिशाओंमें मन्दर, गन्धमादन, विपुल, और सुपार्श्व ये चार पर्वत है। इनके ऊपर क्रमश' कदम्ब, जम्बू, पीपल व बट ये चार वृक्ष है। जम्बूवृक्षके नामसे ही यह द्वीप जम्बूद्वीप नामसे प्रसिद्ध है। वर्षोंमें भारतवर्ष कर्मभूमि है। और शेष वर्ष भोगभूमियाँ है। क्योकि भारतमें ही कृतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग, ये चार काल

वर्तते है और स्वर्ग मोक्षके पुरुषार्थकी सिद्धि है। अन्य क्षेत्रोंमें सदा त्रेता युग रहता है और वहाँके निवासी पुण्यवान व आधि व्याधिसे रहित होते है। (अध्याय २)।

भरतक्षेत्रमें महेन्द्र आदि छः कुलपर्वत है, जिनसे चन्द्रमा आदि अनेक नदियाँ निकलती है। नदियोके किनारोपर कुरु पाचाल आदि (आर्य) और पौण्ड्र कलिग आदि (म्लेच्छ) लोग रहते है। (अध्याय ३) इसी प्रकार प्लक्षद्वीपमें भी पर्वत व उनसे विभाजित क्षेत्र है। वहाँ प्लक्ष नामका वृक्ष है और सदा त्रेता काल रहता है। शाल्मल आदि शेष सर्व द्वीपोकी रचना प्लक्ष द्वीपवत् है। पुष्कर-द्वीपके बीचोबीच वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है। जिससे उसके दो खण्ड हो गये है। अभ्यन्तर खण्डका नाम धातकी है। यहाँ भोग-भूमि है इस द्वीपमें पर्वत व नदियाँ नही है। इस द्वीपको स्वादूदक समुद्र वेष्टित करता है। इससे आगे प्राणियोका निवास नही है। (अध्याय ४)।

इस भूखण्डके नीचे दस दस हजार योजनके सात पाताल है—अतल, वितल, नितल, गभस्तिमत्, महातल, सुतल और पाताल। पातालोके नीचे विष्णु भगवान् हजारो फनोसे युक्त शेषनागके रूपमें स्थित होते हुए इस भूखण्डको अपने सिरपर धारण करते है। (अध्याय ५) पृथिवीतल और जलके नीचे रौरव, सूकर, रोध, ताल, विशसन, महाज्वाल, तप्तकुम्भ, लवण, विलोहित, रुधिराम्भ, वैतरणी, कृमीश, कृमिभोजन, असिपत्र वन, कृष्ण, लालाभक्ष, दारुण, पूयवह, पाप, वह्निज्वाल, अधःशिरा, सन्दंश, कालसूत्र, तमस्, अवीचि, श्वभोजन, अप्रतिष्ठ, और अरुचि आदि महाभयंकर नरक है, जहाँ पापी जीव मरकर जन्म लेते है। (अध्याय ६) भूमि से एक लाख योजन ऊपर जाकर, एक एक लाख योजनके अन्तरालसे सूर्य, चन्द्र व नक्षत्र मण्डल स्थित है, तथा उनके ऊपर दो-दो लाख योजनके अन्तरालसे बुध, शुक्र, मगल, बृहस्पति, शनि, तथा इसके ऊपर एक एक लाख योजनके अन्तरालसे सप्तऋषि व ध्रुव तारे स्थित है। इससे १ करोड योजन ऊपर महर्लोक है जहाँ कल्पो तक जीवित रहनेवाले कल्पवासी भृगु आदि सिद्धगण रहते है। इससे २ करोड योजन ऊपर जनलोक है जहाँ ब्रह्माजीके पुत्र सनकादि रहते है। आठ करोड योजन ऊपर तप लोक है जहाँ वैराज देव निवास करते है।

चित्र १

भू लोक

सप्त द्वीप व सप्तसागर पूर्व पूर्व की अपेक्षा उत्तरोत्तर दूना विस्तार है

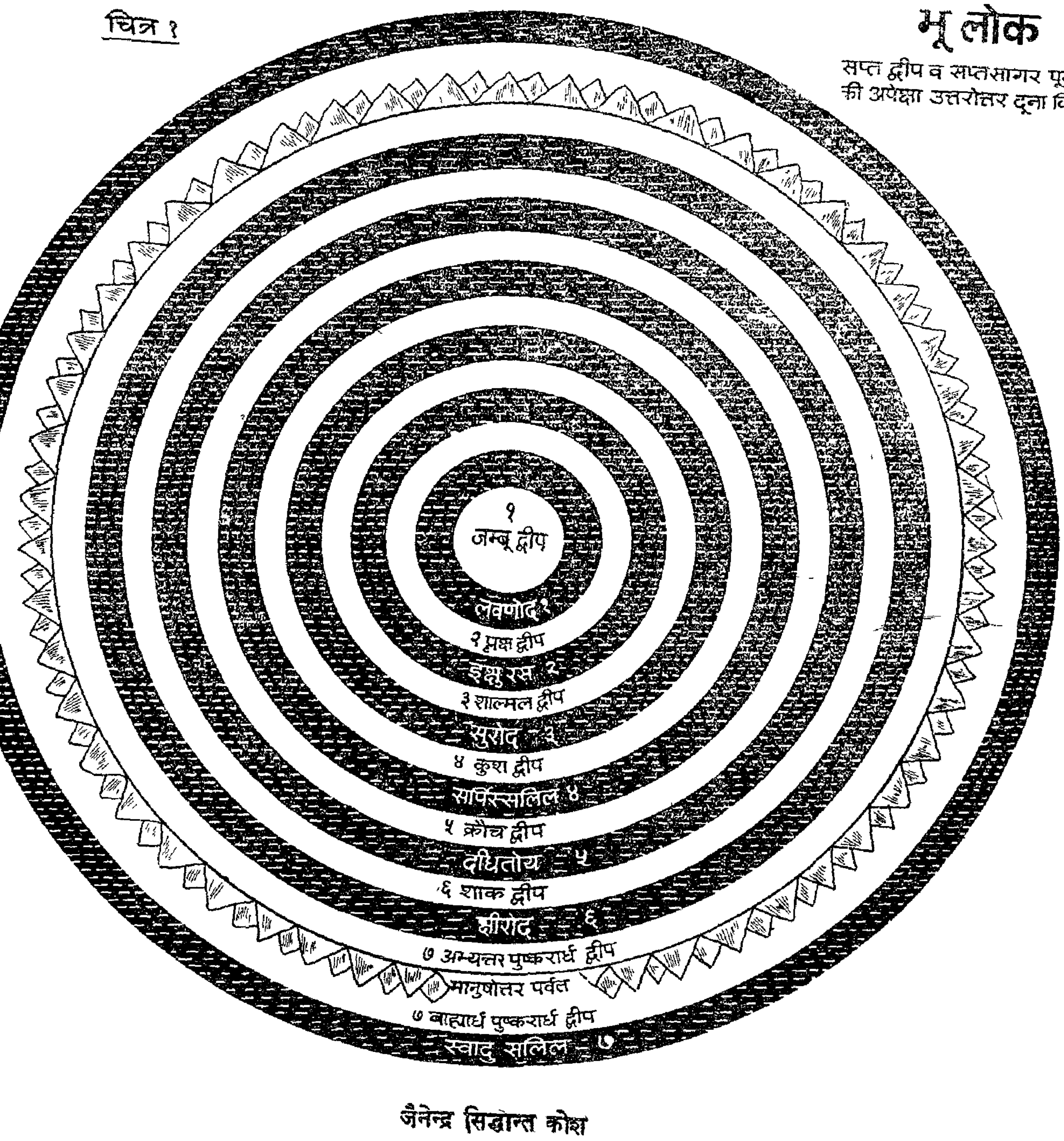

१२ करोड योजन ऊपर सत्यलोक है, जहाँ फिरसे न मरनेवाले जीव रहते हैं, इसे ब्रह्मलोक भी कहते है। भूलोक व सूर्यलोकके मध्यमें मुनिजनोंसे सेवित भुवर्लोक है और सूर्य तथा ध्रुवके बीचमें १४ लाख योजन स्वर्लोक कहलाता है। ये तीनों लोक कृतक है। जनलोक, तपलोक व सत्यलोक ये तीन अकृतक हैं। इन दोनो कृतक व अकृतकके मध्यमें महर्लोक है। इसलिए यह कृताकृतक है। (अध्याय ७)।

चित्र-२ जम्बू द्वीप

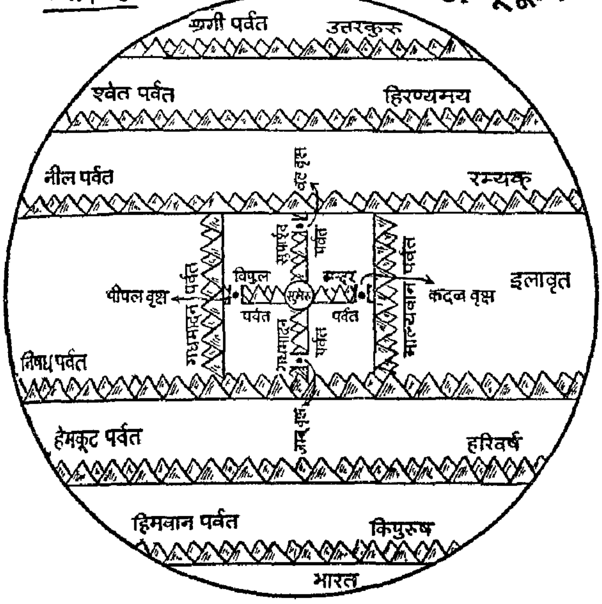

भूलोक के नीचे पाताल लोक

भूलोकके नीचे सप्त पाताल है। तथा उनके नीचे शेष शायी भगवान विष्णु विश्राम करते हैं

चित्र ३

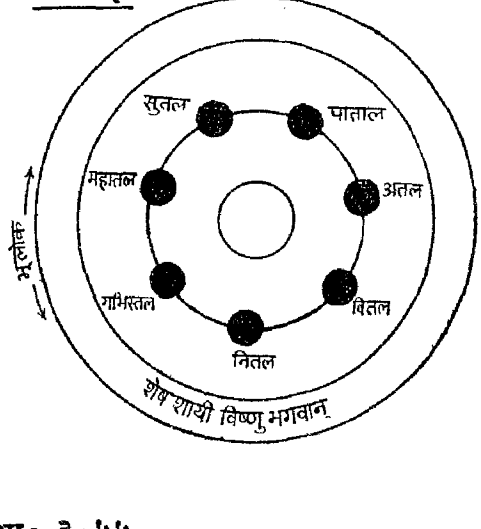

चित्र-४ सामान्य लोक

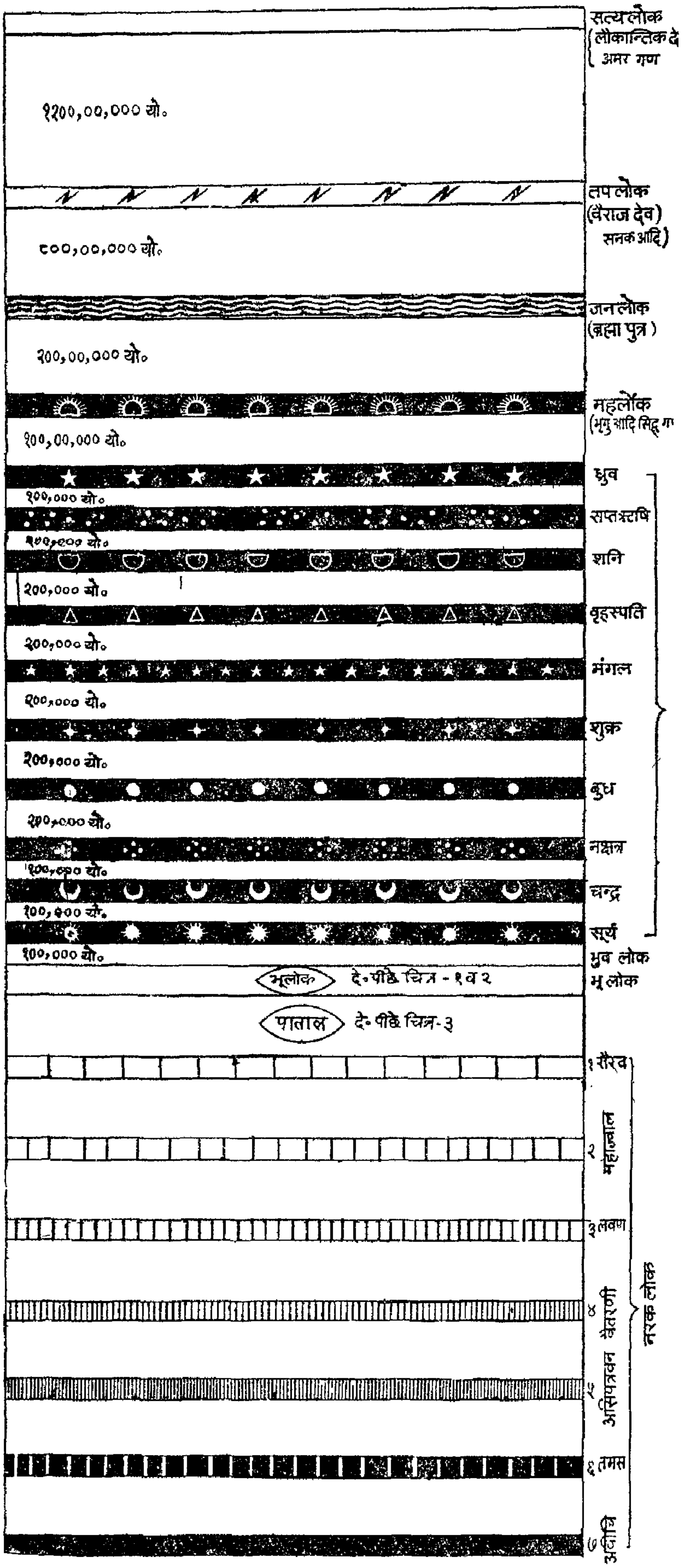

४. बौद्धाभिमत भूगोल परिचय

(५वीं शताब्दीके वसुबन्धुकृत अभिधर्मकोशके आधारपर ति प./ प्र ८७/ H. L. Jain द्वारा कथितका भावार्थ)। लोकके अधोभाग-में १६००,००० योजन ऊँचा अपरिमित वायुमण्डल है। इसके ऊपर ११२०,००० योजन ऊँचा जलमण्डल है। इस जलमण्डलमे ३२०,००० यो० भूमण्डल है। इस भूमण्डलके बीचमें मेरु पर्वत है। आगे ८० ००० योजन विस्तृत सीता (समुद्र) है जो मेरुको चारो ओरसे वेष्टित करके स्थित है। इसके आगे ४०,००० योजन विस्तृत युगन्धर पर्वत वलयाकारसे स्थित है। इसके आगे भी इसी प्रकार एक एक सीता (समुद्र) के अन्तरालसे उत्तरोत्तर आधे आधे विस्तारसे युक्त क्रमश' ईषाधर, खदिरक, सुदर्शन, अश्वकर्ण, विनतक, और निमिधर पर्वत है। अन्तमें लोहमय चक्रवाल पर्वत है। निमिन्धर और चक्रवाल पर्वतोके मध्यमे जो समुद्र स्थित है उसमे मेरुकी पूर्वादि दिशाओमे क्रमसे अर्धचन्द्राकार पूर्वविदेह, शकटाकार जम्बूद्रीप, मण्डलाकार अवरगोदानीय और समचतुष्कोण उत्तर-कुरु ये चार द्वीप स्थित है। इन चारोके पार्श्व भागोमे दो-दो अन्त-र्द्वीप है। उनमेसे जम्बूद्वीपके पासवाले चमरद्वीपमे राक्षसोका और शेष द्वीपोंमे मनुष्योंका निवास है। जम्बूद्वीपमे उत्तरकी ओर ६ कीटाद्रि (छोटे पर्वत) तथा उनके आगे हिमवान पर्वत अवस्थित है। उसके आगे अनवतप्त नामक अगाध सरोवर है, जिसमेसे गगा सिन्धु वक्षु और सीता ये नदियाँ निकलती है। उक्त सरोवरके समीप-में जम्बू वृक्ष है। जिसके कारण इस द्वीपका 'जम्बू' ऐसा नाम पड़ा है। जम्बूद्वीपके नीचे २०,००० योजन प्रमाण अवीचि नामक नरक है। उसके ऊपर क्रमश प्रतापन आदि सात नरक और है। इन नरकोके चारो पार्श्व भागोमें कुकूल, कुणप क्षुरमार्गादिक और खारोदक (असिपत्रवन, श्यामशबल-श्व-स्थान, अय शाल्मली वन और वैतरणीनदी) ये चार उत्सद है। इन नरकोके धरातलमें आठ शीत नरक और है। भूमिसे ४०,००० योजन ऊपर जाकर चन्द्र सूर्य

चित्र-५

भूमण्डल

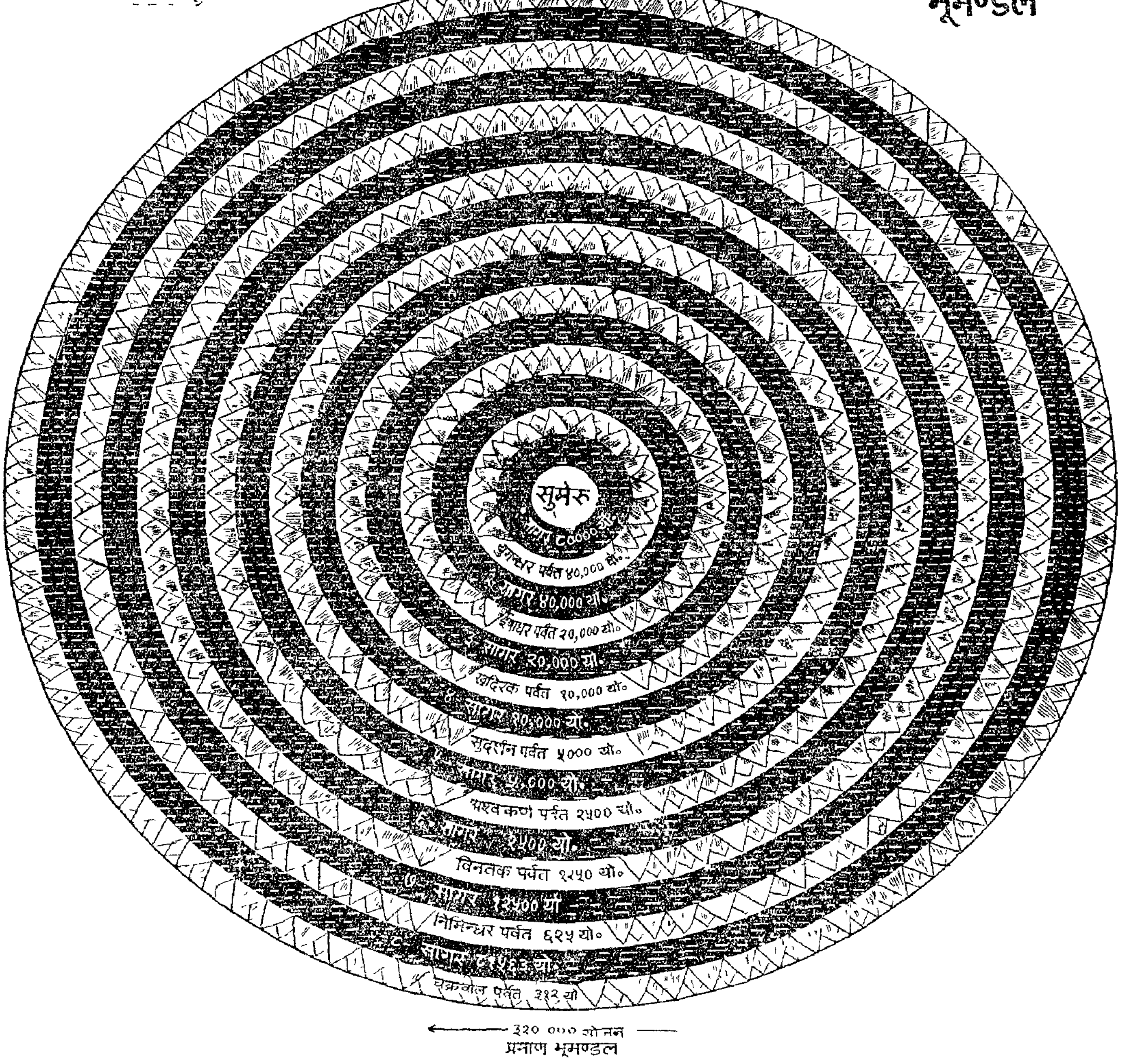

← ३२० ००० योजन —
प्रमाण भूमण्डल

परिभ्रमण करते हैं। जिस समय जम्बूद्वीपमें मध्याह्न होता है उस समय उत्तरकुरुमें अर्धरात्रि, पूर्वविदेहमे अस्तगमन और अवर-गोदानीयमें सूर्योदय होता है। मेरु पर्वतकी पूर्वादि दिशाओंमें उसके चार परिषण्ड (विभाग) है, जिनपर क्रमसे यक्ष, मालाधार, सदामद और चातुर्महाराजिक देव रहते है। इसी प्रकार शेष सात पर्वतोंपर भी देवोके निवास है। मेरुशिखरपर त्रयस्त्रिश (स्वर्ग) है। इससे ऊपर विमानोमे याम, तुषित आदि देव रहते है। उपरोक्त देवोमें चातुर्महाराजिक, और त्रयस्त्रिश देव मनुष्यवत् काम-

चित्र ६

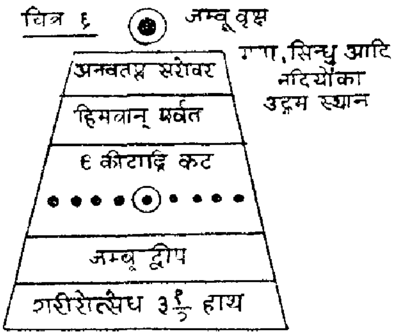

भूगोल सामान्य चित्र-७(क)

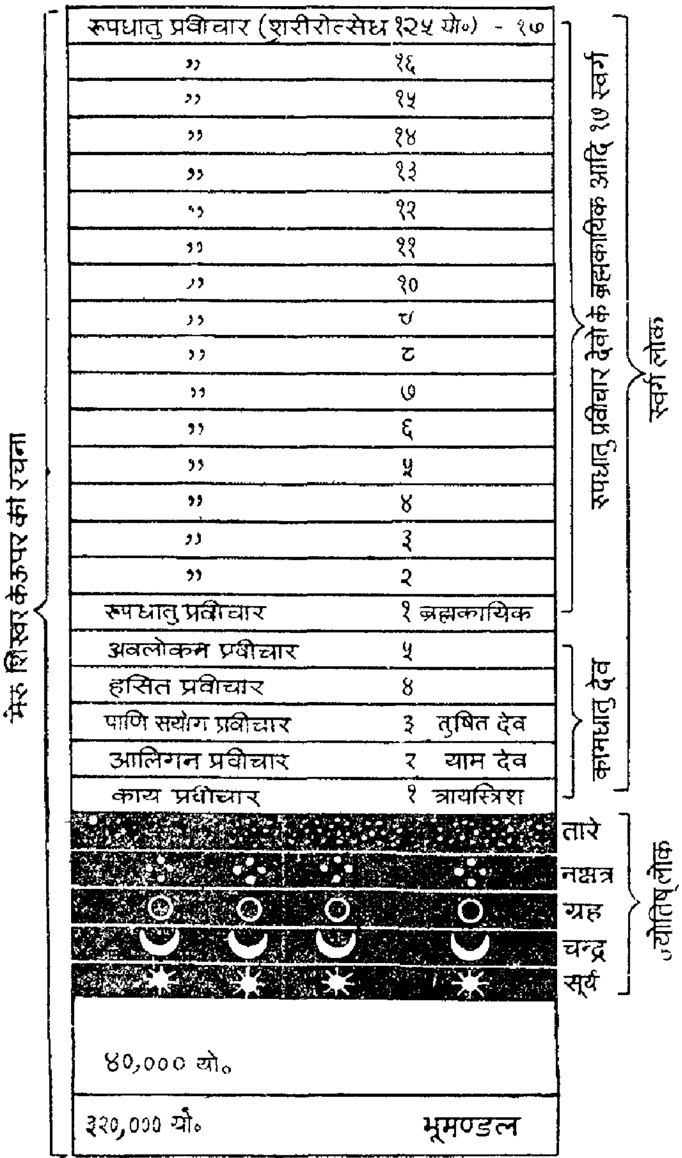

नोट - भूमण्डलसे नीचेकी रचना - दे० चित्र ७(ख)

भोग भोगते है। याम तुषित आदि क्रमश आलिगन, पाणिसयोग, हसित और अवलोकनसे तृप्तिको प्राप्त होते है। उपरोक्त कामधातु देवोके ऊपर रूपधातु देवोके ब्रह्मकायिक आदि १७ स्थान है। ये सब क्रमश ऊपर-ऊपर अवस्थित है। जम्बूद्वीप वासी मनुष्योंकी ऊँचाई केवल ३½ हाथ है। आगे क्रमसे बढ़ती हुई अनभ्र देवोके शरीरकी ऊँचाई १२५ योजन प्रमाण है।

५. आधुनिक विश्व परिचय

लोक के स्वरूप का निर्देश करने के अन्तर्गत दो बातें जाननीय है—खगोल तथा भूगोल। खगोल की दृष्टि से देखने पर इस असीम आकाश में असख्यातो गोलाकार भूखण्ड है। सभी भ्रमणशील है। भौतिक पदार्थों के आण्विक विधान की भाँति इनके भ्रमण में अनेक प्रकार की गतिये देखी जा सकती है। पहली

चित्र-७(ख)

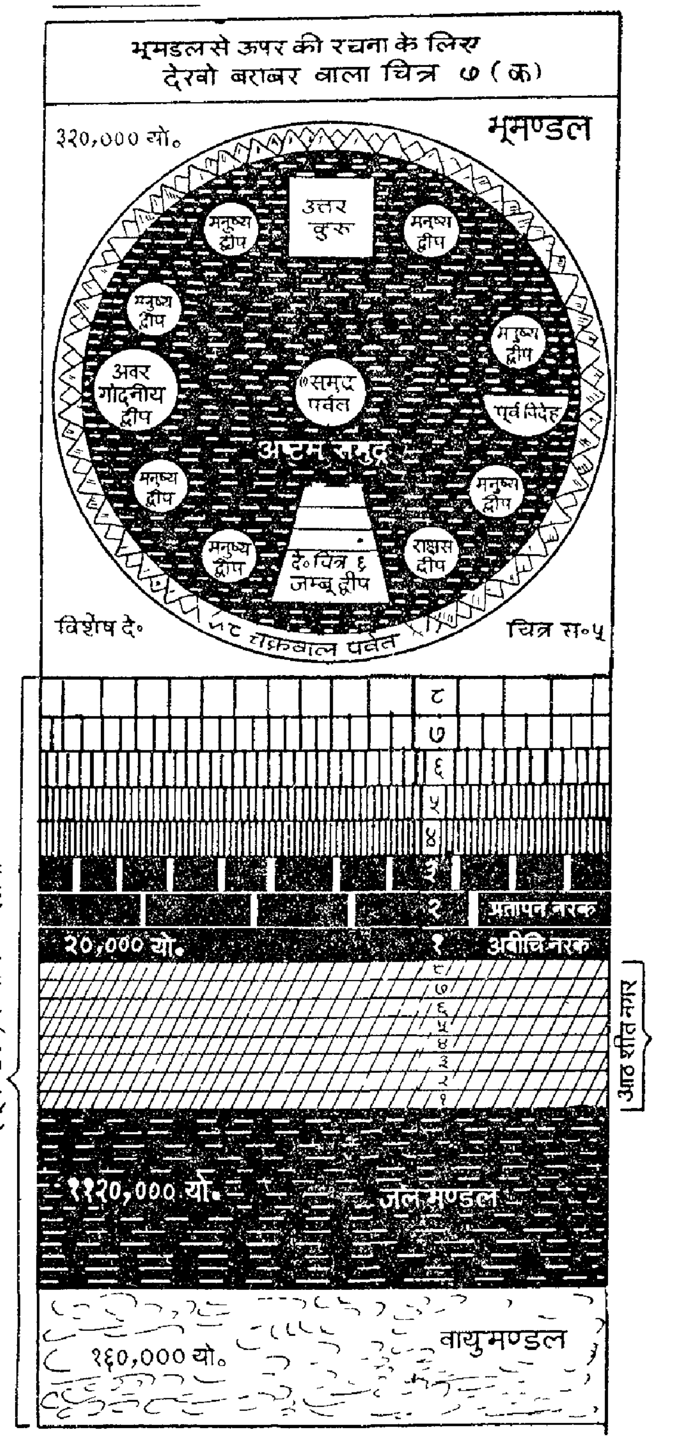

गति है प्रत्येक भूखण्ड का अपने स्थान पर अवस्थित रहते हुए अपनी ही धुरी पर लट्टू की भाँति घूमते रहना। दूसरी गति है सूर्य जैसे किसी बडे भूखण्ड को मध्यम में स्थापित करके गाडी के चक्के में लगे अरों की भाँति अनेको अन्य भूखण्डों का उसकी परिक्रमा करते रहना, परन्तु परिक्रमा करते हुए भी अपनी परिधि का उल्लंघन न करना। परिक्रमाशील इन भूखण्डो के समुदाय को एक सौर मण्डल या एक ज्योतिष मण्डल कहा जाता है। प्रत्येक सौर मण्डल में केन्द्रवर्ती एक सूर्य होता है और अरो के स्थानवर्ती अनेको अन्य भूखंड होते है, जिनमें एक चन्द्रमा, अनेको ग्रह, अनेकों उपग्रह तथा अनेकों पृथिवियें सम्मिलित है। ऐसे-ऐसे सौर मण्डल इस आकाश में न जाने कितने है। प्रत्येक भूखण्ड गोले की भाँति गोल है परन्तु प्रत्येक सौर मण्डल गाडी के पहिये की भाँति चक्राकार है। तीसरी गति है किसी सौर मडल को मध्य में स्थापित करके अन्य अनेकों सौर मण्डलो द्वारा उसकी परिक्रमा करते रहना, और परिक्रमा करते हुए भी अपनी परिधि का उल्लघन न करना।

इन भूखडों में से अनेको पर अनेक आकार प्रकार वाली जीव राशि का वास है, और अनेकों पर प्रलय जैसी स्थिति है। जल तथा वायु का अभाव हो जाने के कारण उन पर आज बसती होना सम्भव नहीं है। जिन पर आज बसती बनी है उन पर पहले कभी प्रलय थी और जिन पर आज प्रलय है उन पर आगे कभी बसती हो जाने वाली है। कुछ भूखंडों पर बसने वाले अत्यन्त सुखी है और कुछ पर रहने वाले अत्यन्त दुःखी, जैसे कि अन्तरिक्ष की आधुनिक खोज के अनुसार मंगल पर जो बसती पाई गई है वह नारकीय यातनायें भोग रही है।

जिस भूखण्ड पर हम रहते है यह भी पहले कभी अग्नि का गोला था जो सूर्य में से छिटक कर बाहर निकल गया था। पीछे इसका ऊपरी तल ठण्डा हो गया। इसके भीतर अब भी ज्वाला धधक रही है। वायुमंडल धरातल से लेकर इसके ऊपर उत्तरोत्तर विरल होते हुए ५०० मील तक फैला हुआ है। पहले इस पर जीवों का निवास नहीं था, पीछे क्रम से सजीव पाषाण आदि, वनस्पति, नमी में रहने वाले छोटे-छोटे कोकले, जल में रहने वाले मत्स्यादि, पृथिवी तथा जल दोनों में रहने वाले मेढक, कछुआ आदि बिलों में रहने वाले सरीसृप आदि, आकाश में उडने वाले भ्रमर, कीट, पतंग व पक्षी, पृथिवी पर रहने वाले स्तनधारी पशु बन्दर आदि और अन्त में मनुष्य उत्पन्न हुए। तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार और भी असख्य जीव जातियें उत्पन्न हो गयीं।

इस भूखण्ड के चारों ओर अनन्त आकाश है, जिसमें सूर्य चन्द्र तारे आदि दिखाई देते है। चन्द्रमा सबसे अधिक समीप में है। तत्पश्चात् क्रमश शुक्र, बुद्ध, मगल, बृहस्पति, शनि आदि ग्रह, इनसे साढे नौ मील दूर सूर्य, तथा उससे भी आगे असंख्यातो मील दूर असख्य तारागण है। चन्द्रमा तथा ग्रह स्वय प्रकाश न होकर सूर्य के प्रकाश से प्रकाशवत् दीखते है। तारे यद्यपि दूर होने के कारण बहुत छोटे दीखते है परन्तु इनमें से अधिकर सूर्य की अपेक्षा लाखो गुणा बडे है तथा अनेको सूर्य की भाँति स्वयं जाज्वल्यमान है।

भूगोल की दृष्टि से देखने पर इस पृथिवी पर ऐशिया, योरुप, अफ्रीका, अम्रीका, आस्ट्रेलिया आदि अनेकों उपद्वीप है। सुदूर पूर्व में ये सब सम्भवत परस्पर में मिले हुए थे। भारतवर्ष ऐशिया का दक्षिणी पूर्वी भाग है। इसके उत्तर मे हिमालय और मध्य में विन्ध्यगिरि, सतपुडा आदि पहाडियो की अटूट श्रृंखला है। पूर्व तथा पश्चिम के सागर में गिरने वाली गगा तथा सिन्धु नामक दो प्रधान नदियाँ है जो हिमालय से निकलकर सागर की ओर जाती है। इसके उत्तर में आर्य जाति और पश्चिम दक्षिण आदि दिशाओं में द्राविड, भील, कौल, नाग आदि अन्यान्य प्राचीन अथवा म्लेच्छ जातिया निवास करती है।

६. उपरोक्त मान्यताओंकी तुलना

१. जैन व वैदिक मान्यता बहुत अशोंमें मिलती है। जैसे—१ चूडीके आकाररूपसे अनेको द्वीपो व समुद्रोका एक दूसरेको वेष्टित किये हुए अवस्थान। २ जम्बूद्वीप, सुमेरु, हिमवान, निषध, नील, श्वेत (रुक्मि), शृगी (शिखरी) ये पर्वत, भारतवर्ष (भरत क्षेत्र) हरिवर्ष, रम्यक, हिरण्मय (हैरण्यवत) उत्तरकुरु ये क्षेत्र, माल्यवान व गन्धमादन पर्वत, जम्बूवृक्ष इन नामोंका दोनों मान्यताओंमें समान होना। ३ भारतवर्षमे कर्मभूमि तथा अन्य क्षेत्रोंमें त्रेतायुग (भोगभूमि) का अवस्थान। मेरुकी चारो दिशाओंमें मन्दर आदि चार पर्वत जैनमान्य चार गजदन्त है। ४ कुल पर्वतोसे नदियोका निकलना तथा आर्य व म्लेच्छ जातियोका अवस्थान। ५ प्लक्ष द्वीपमे प्लक्षवृक्ष जम्बूद्वीपवत् उसमें पर्वतो व नदियो आदिका अवस्थान वैसा ही है जैसा कि धातकी खण्डमे धातकी वृक्ष व जम्बूद्वीपके समान दुगनी रचना। ६ पुष्करद्वीपके मध्य वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत तथा उसके अभ्यन्तर भागमे धातकी नामक खण्ड। ७ पुष्कर द्वीपसे परे प्राणियोका अभाव लगभग वैसा ही है, जैसा कि पुष्करार्धसे आगे मनुष्योका अभाव। ८ भूखण्डके नीचे पातालोका निर्देश लवण सागरके पातालोसे मिलता है। ९. पृथिवीके नीचे नरकोका अवस्थान। १० आकाशमे सूर्य, चन्द्र आदिका अवस्थान क्रम। १० कल्पवासी तथा फिरसे न मरनेवाले (लौकान्तिक) देवोके लोक। २ इसी प्रकार जैन व बौद्ध मान्यताएँ भी बहुत अंशोंमें मिलती हैं। जैसे—१ पृथिवीके चारो तरफ वायु व जलमण्डलका अवस्थान जैन मान्य वातवलयोके समान है। २. मेरु आदि पर्वतोका एक-एक समुद्रके अन्तरालसे उत्तरोत्तर वेष्टित वलायाकाररूपेण अवस्थान। ३ जम्बूद्वीप, पूर्वविदेह, उत्तरकुरु, जम्बूवृक्ष, हिमवान, गगा, सिन्धु आदि नामोकी समानता। ४. जम्बूद्वीपके उत्तरमें नौ क्षुद्रपर्वत, हिमवान, महासरोवर व उनसे गगा, सिन्धु आदि नदियोका निकास ऐसा ही है जैसा कि भरतक्षेत्रके उत्तरमें ११ कूटो युक्त हिमवान पर्वतपर स्थित पद्म द्रहसे गंगा सिन्धु व रोहितास्या नदियोका निकास। ५ जम्बूद्वीपके नीचे एकके पश्चात् एक करके अनेको नरकोका अवस्थान। ६ पृथिवीसे ऊपर चन्द्र सूर्यका परिभ्रमण। ७ मेरु शिखरपर स्वर्गोंका अवस्थान लगभग ऐसा ही है जैसा कि मेरु शिखरसे ऊपर केवल एक बाल प्रमाण अन्तरसे जैन मान्य स्वर्गकके प्रथम 'ऋतु' नामक पटलका अवस्थान। ८ देवोमें कुछका मैथुनसे और कुछका स्पर्श या अवलोकन आदिसे काम भोगका सेवन तथा ऊपरके स्वर्गोंमे कामभागका अभाव जैनमान्यतावत् ही है (दे० देव/II/२/१०)। ९ देवोका ऊपर ऊपर अवस्थान। १०. मनुष्योकी ऊँचाईसे लेकर देवोके शरीरोकी ऊँचाई तक क्रमिक वृद्धि लगभग जैन मान्यताके अनुसार है (दे० अवगाहना/३,४)। ३-आधुनिक भूगोलके साथ यद्यपि जैन भूगोल स्थूल दृष्टिमे देखनेपर मेल नहीं खाता पर आचार्योकी सुदूरवर्ती सूक्ष्मदृष्टि व उनकी सूत्रात्मक कथन पद्धतिको ध्यानमे रखकर विचारा जाये तो वह भी बहुत अंशोमे मिलता प्रतीत होता है। यहाँ यह बात अवश्य ध्यानमें रखने योग्य है कि वैज्ञानिक जनोके अनुमानका आधार पृथिवीका कुछ करोडवर्ष मात्र पूर्वका इतिहास है, जब कि आचार्योंकी दृष्टि कल्पो पूर्वके इतिहासको स्पर्श करती है। जैसे कि—१ पृथिवीके लिए पहले अग्निका गोला होनेकी कल्पना, उसका धीरे-धीरे ठण्डा होना और नये सिरेसे उसपर जीवों व मनुष्याकी उत्पत्तिका विकास लगभग जैनमान्य प्रलयके स्वरूपसे मेल खाता है (दे० प्रलय)। २ पृथिवीके चारो ओरके वायु-

मण्डलमें ५०० मील तक उत्तरोत्तर तरलता जैन मान्य तीन वात-वलयोंवत् ही है। ३. एशिया आदि महाद्वीप जैनमान्य भरतादि क्षेत्रोके साथ काफी अशमें मिलते है (दे० अगला शीर्षक)। ४. आर्य व म्लेच्छ जातियोंका यथायोग्य अवस्थान भी जैनमान्यताको सर्वथा उल्लघन करनेको समर्थ नही। ५ सूर्य-चन्द्र आदिके अव-स्थानमें तथा उनपर जीव राशि सम्बन्धी विचारमें अवश्य दोनो मान्यताओमे भेद है। अनुसधान किया जाय तो इसमें भी कुछ न कुछ समन्वय प्राप्त किया जा सकता है।

सातवीं आठवीं शताब्दी के वैदिक विचारकों ने लोक के इस चित्रण को बासना के विश्लेषण के रूप मे उपस्थित किया है (जै /२/१)। यथा—अधोलोक बासना ग्रस्त व्यक्ति की तम पूर्ण वह स्थिति जिसमें कि उसे हिताहित का कुछ भी विवेक नहीं होता और स्वार्थ सिद्धि के क्षेत्र में बडे से बडे अन्याय तथा अत्याचार करते हुए भी जहां उसे यह प्रतीति नहीं होती कि उसने कुछ बुरा किया है। मध्य लोक उसकी वह स्थिति है जिसमें कि उसे हिताहित का विवेक जागृत हो जाता है परन्तु वासना की प्रबलता के कारण अहित से हटकर हित की ओर झुकने का सत्य पुरुषार्थ जागृत करने की सामर्थ्य उसमें नही होती है। इसके ऊपर ज्योतिष लोक या अन्तरिक्ष लोक उसकी साधना वाली वह स्थिति है जिसमे उसके भीतर उत्तरोत्तर उन्नत पारमार्थिक अनुभूतिये झलक दिखाने लगती है। इसके अन्तर्गत पहले विद्युत्लोक आता है जिसमें क्षण भर को तत्त्व दर्शन होकर लुप्त हो जाता है। तदनन्तर तारा लोक आता है जिसमें तात्त्विक अनुभूतियों की झलक टिमटिमाती या आख मिचौनी खेलती प्रतीत होती है। अर्थात् कभी स्वरूप में प्रवेश होता है और कभी पुन विषयासक्ति जागृत हो जाती है। इसके पश्चात् सूर्य लोक आता है जिसमें ज्ञान सूर्य का उदय होता है, और इसके पश्चात् अन्त में चन्द्र लोक आता है जहां पहुँचने पर साधक समता भूमि में प्रवेश पाकर अत्यन्त शान्त हो जाता है। उर्ध्व लोक के अन्तर्गत तीन भूमिये है—महर्लोक, जनलोक और तप लोक। पहली भूमि में वह अर्थात् उसकी ज्ञान चेतना लोकालोक में व्याप्त होकर महान हो जाती है, दूसरी भूमियें कृतकृत्यता की और तीसरी भूमिमें अनन्त आनन्द की अनुभूति में वह सदा के लिए लय हो जाती है। यह मान्यता जैन के अध्यात्म के साथ शत प्रतिशत नहीं तो ८० प्रतिशत मेल अवश्य खाती है।

७. चातुर्द्वीपिक भूगोल परिचय

(ज. प./प्र. १३८/H. L. Jain का भावार्थ) १ काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थमें दिये गये, श्री रायकृष्णदासजीके एक लेखके अनुसार, वैदिक धर्म मान्य सप्तद्वीपिक भूगोल (दे० शीर्षक न० ३) की अपेक्षा चातुर्द्वीपिक भूगोल अधिक प्राचीन है। इसका अस्तित्व अब भी वायुपुराणमें कुछ-कुछ मिलता है। चीनी यात्री मेगस्थनीजके समयमें भी यही भूगोल प्रचलित था, क्योंकि वह लिखता है—भारतके सीमान्तपर तीन और देश माने जाते है—सीदिया, बैक्ट्रिया तथा एरियाना। सीदियासे उसके भद्राश्व व उत्तरकुरु तथा बैक्ट्रिया व एरियानासे केतुमाल द्वीप अभिप्रेत है। अशोकके समयमें भी यही भूगोल प्रचलित था, क्योंकि उसके शिलालेखोंमें जम्बूद्वीप भारतवर्षकी सज्ञा है। महाभाष्यमें आकर सर्वप्रथम सप्तद्वीपिक भूगोलकी चर्चा है। अतएव वह अशोक तथा महाभाष्यकालके बीचकी कल्पना जान पडती है। २ सप्तद्वीपिक भूगोलकी भॉति यह चातुर्द्वीपिक भूगोल कल्पनामात्र नही है, बल्कि इसका आधार वास्तविक है। उसका सामजस्य आधुनिक भूगोलसे हो जाता है। ३ चातुर्द्वीपिक भूगोलमें जम्बूद्वीप पृथिवीके चार महाद्वीपोमें से एक है और भारतवर्ष जम्बूद्वीपका ही दूसरा नाम है। वही सप्तद्वीपिक भूगोलमें आकर इतना बडा हो जाता है कि उसकी बराबरीवाले अन्य तीन द्वीप (भद्राश्व, केतुमाल व उत्तरकुरु) उसके वर्ष बनकर रह जाते है। और भारतवर्ष नामवाला एक अन्य वर्ष (क्षेत्र) भी उसीके भीतर कल्पित कर लिया जाता है। ४. चातुर्द्वीपी भूगोलका भारत (जम्बूद्वीप) जो मेरु तक पहुँचता है, सप्तद्वीपिक भूगोलमें जम्बूद्वीपके तीन वर्षों या क्षेत्रोमें विभक्त हो गया है—भारतवर्ष, किपुरुष व हरिवर्ष। भारतका वर्ष पर्वत हिमालय है। किपुरुष हिमालयके परभागमें मगोलोकी बस्ती है, जहाँसे सरस्वती नदीका उद्गम होता है, तथा जिसका नाम आज भी कन्नौरमें अवशिष्ट है। यह वर्ष पहले तिब्बत तक पहुँचता था, क्योंकि वहाँ तक मगालोकी बस्ती पायी जाती है। तथा इसका वर्ष पर्वत हेमकूट है, जो कतिपय स्थानोमें हिमालयान्तर्गत ही वर्णित हुआ है। (जैन मान्यतामे किपुरुषके स्थानपर हैमवत और हिमकूटके स्थानपर महाहिमवानका उल्लेख है)। हरिवर्षसे हिरातका तात्पर्य है जिसका पर्वत निषध है, जो मेरु तक पहुँचता है। इसी हरिवर्षका नाम अवेस्तामे हरिवर्जी मिलता है। ५ इस प्रकार रम्यक, हिरण्यमय और उत्तरकुरु नामक वर्षोंमे विभक्त होकर चातुर्द्वीपिक भूगोलवाले उत्तरकुरु महाद्वीपके तीन वर्ष बन गये है। ६. किन्तु पूर्व और पश्चिमके भद्राश्व व केतुमाल द्वीप यथापूर्व दोके दो ही

चातुर्द्वीपिक भूगोल परिचय

(वायु पुराण)
(सप्त द्वीपिक भूगोल की अपेक्षा यह अधिक प्राचीन है

चित्र-८

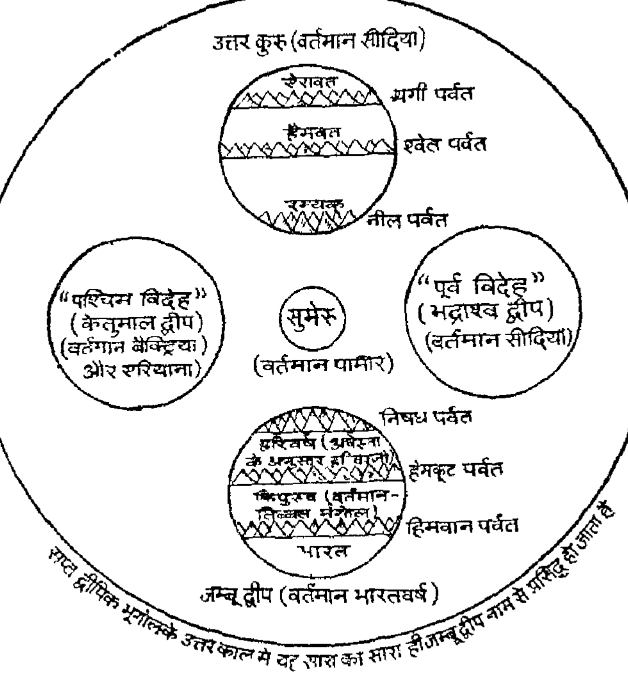

नोट १ अशोकके अनुसार 'जम्बूद्वीप' भारतवर्षका ही नाम है
२- मेगस्थनीजके अनुसार भारतवर्षकी सीमापर सीदिया बैक्ट्रिया और एरियाना द्वीप अवस्थित है

रह गये। अन्तर केवल इतना है कि यहाँ वे दो महाद्वीप न होकर एक द्वीपके अन्तर्गत दो वर्ष या क्षेत्र है। साथ ही मेरुको मेखलित करनेवाला, सप्तद्वीपिक भूगोलका, इलावृत भी एक स्वतन्त्र वर्ष बन गया है। ७. यो उक्त चार द्वीपोसे पल्लवित भारतवर्ष आदि तीन दक्षिणी, हरिवर्ष आदि तीन उत्तरी, भद्राश्व व केतुमाल ये दो पूर्व व पश्चिमी तथा इलावृत नामका केन्द्रीय वर्ष, जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंकी रचना कर रहा है। ८ [जैनाभिमत भूगोलमें ६ की बजाय १० वर्षोंका उल्लेख है। भारतवर्ष, किपुरुष व हरिवर्षके स्थानपर भरत, हैमवत व हरि ये तीन मेरुके दक्षिणमें है। रम्यक, हिरण्यमय तथा उत्तरकुरुके स्थानपर रम्यक हैरण्यवत व ऐरावत ये तीन मेरुके उत्तरमें है। भद्राश्व व केतुमालके स्थानपर पूर्व विदेह व पश्चिमविदेह ये दो मेरुके पूर्व व पश्चिममें है। तथा इलावृतके स्थानपर देवकुरु व

उत्तरकुरु ये दो मेरुके निकटवर्ती है। यहाँ वैदिक मान्यतामे तो मेरुके चौगिर्द एक ही वर्ष मान लिया गया और जैन मान्यतामें उसे दक्षिण व उत्तर दिशावाले दो भागोमे विभक्त कर दिया है। पूर्व व पश्चिमी भद्राश्व व केतुमाल द्वीपोमें वैदिकजनोने क्षेत्रोका विभाग न दर्शाकर अखण्ड रखा पर जैन मान्यतामें उनके स्थानीय पूर्व व पश्चिम विदेहोको भी १६,१६ क्षेत्रोमें विभक्त कर दिया गया]। ६. मेरु पर्वत वर्तमान भूगोलका पामीर प्रदेश है। उत्तरकुरु पश्चिमी तुर्किस्तान है। सीता नदी यारकन्द नदी है। निषध पर्वत हिन्दुकुश पर्वतोकी शृंखला है। हैमवत भारतवर्षका ही दूसरा नाम रहा है। (दे० वह-वह नाम)।

२. लोकसामान्य निर्देश

१. लोकका लक्षण

दे. आकाश/१/३ [१ आकाशके जितने भागमे जीव पुद्गल आदि षट् द्रव्य देखे जाये सो लोक है और उसके चारो तरफ शेष अनन्त आकाश अलोक है, ऐसा लोकका निरुक्ति अर्थ है। २ अथवा षट् द्रव्योका समवाय लोक है]।

दे. लौकान्तिक/१। [३. जन्म-जरामरणरूप यह ससार भी लोक कहलाता है।]

रा. वा /५/१२/१०-१३/४५५/२० यत्र पुण्यपापफललोकनं स लोक ।१०। क पुनरसौ। आत्मा। लोकति पश्यत्युपलभते अर्थानिति लोक ।११। सर्वज्ञेनानन्ताप्रतिहतकेवलदर्शनेन लोक्यते य स लोक । तेन धर्मादीनामपि लोकत्व सिद्धम् ।१३।=जहाँ पुण्य व पापका फल जो सुख-दुःख वह देखा जाता है सो लोक है इस व्युत्पत्तिके अनुसार लोकका अर्थ आत्मा होता है। जो पदार्थोंको देखे व जाने सो लोक इस व्युत्पत्तिसे भी लोकका अर्थ आत्मा है। आत्मा स्वय अपने स्वरूपका लोकन करता है अत लोक है। सर्वज्ञके द्वारा अनन्त व अप्रतिहत केवलदर्शनसे जो देखा जाये सो लोक है, इसप्रकार धर्म आदि द्रव्योंका भी लोकपना सिद्ध है।

२. लोकका आकार

ति प /१/१३७-१३८ हेट्ठिमलोयायारो वेत्तासणसण्णिहो सहावेण। मज्झिमलोयायारो उब्भियमुरअद्धसारिच्छो। १३७। उवरिमलोयाआरो उब्भियमुरवेण होइ सरिसत्तो। सठाणो एदाण लोयाणं एण्हि साहेमि ।१३८।=इन (उपरोक्त) तीनोमेंसे अधोलोकका आकार स्वभावसे वेत्रासनके सदृश है, और मध्यलोकका आकार खडे किये हुए आधे मृदगके ऊर्ध्वभागके समान है।१३७। ऊर्ध्वलोकका आकार खडे किये हुए मृदगके सदृश है।१३८। (ध. ४/१,३,२/गा० ६/११) (त्रि सा./६), (ज प /४/४-६), (द्र स./टी / ३५/११२/११)।

ध ४/१,३,२/गा, ७/११ तलरुक्खसठाणो ।७। =यह लोक तालवृक्षके आकारवाला है।

ज, प /प्र /२४ प्रो. लक्ष्मीचन्द—मिस्रदेशके गिरजेमें बने हुए महास्तूपसे यह लोकाकाशका आकार किचित् समानता रखता प्रतीत होता है।

३. लोकका विस्तार

ति. प /१/१४९-१६३ सेढिपमाणायाम भागेसु दक्खिणुत्तरेसु पुढ। पुव्वावरेसु वास भूमिमुहे सत्त येक्कपचेक्का ।१४९। चोद्दसरज्जुपमाणो उच्छेहो होदि सयललोगस्स। अद्धमुरज्जस्सुदवो समग्गमुखोदयसरिच्छो ।१५०। व हेट्ठिममज्झिमउवरिमलोउच्छेहो कमेण रज्जूवो। सत्त य जोयणलक्ख जायणलक्खूणसगरज्जू ।१५१। इह रयणसक्करावालुपकधूमतममहातमादिपहा। सुरवद्धम्मि महीओ सत्त च्चिय रज्जुअन्तरिआ ।१५२। घम्मावसामेघाअजणरिट्ठाणउब्भमघवीओ। माघविया इय ताण पुढवीण गोत्तणामाणि ।१५३। मज्झिमजगस्स हेट्ठिमभागादो णिग्गदा पढमरज्जू। सक्करपहपुढवीए हेट्ठिमभागम्मि णिट्ठादि ।१५४। तत्तो दोइरज्जू वालुवपहहेट्ठि समप्पेदि। तह य तइज्जारज्जू पकपहहेट्ठास्स भागम्मि ।१५५। धूमपहाए हेट्ठिमभागम्मि समप्पदे तुरियरज्जू। तह पंचमिया रज्जू तमप्पहाहेट्ठिमपएसे ।१५६। महतमहेट्ठिमयते छट्ठी हि समप्पदे रज्जू। तत्तो सत्तमरज्जू लोयस्स तलम्मि णिट्ठादि ।१५७। मज्झिमजगस्स उवरिमभागादु दिवड्ढरज्जुपरिमाणं। इगिजोयणलक्खूण सोहम्मविमाणधयदडे ।१५८। वच्चदि दिवड्ढरज्जू माहिंदसणक्कुमारउवरिम्मि। णिट्ठादि अद्धरज्जू बम्हुत्तर उड्ढभागम्मि ।१५९। अवसादि अद्धरज्जू काविट्ठस्सोवरिट्ठभागम्मि । स च्चियमहसुक्कोवरि सहसारोवरि अ स च्चेय ।१६०। तत्तो य अद्धरज्जू आणदकप्पस्स उवरिमपएसे। स य आरणस्स कप्पस्स उवरिमभागम्मि गेविज्ज ।१६१। तत्तो उवरिमभागे णवाणुत्तरओ होति एक्करज्जूवो। एवं उवरिमलोए रज्जुविभागो समुद्दिट्ठ ।१६२। णियणिय चरिमिदयदंडग्ग कप्पभूमिअवसाणं कप्पादीदमहीए विच्छेदो लोयविच्छेदो ।१६३।=१. दक्षिण और उत्तर भागमें लोकका आयाम जगश्रेणी प्रमाण अर्थात् सात राजू है। पूर्व और पश्चिम भागमें भूमि और मुखका व्यास क्रमसे सात, एक, पाँच और एक राजू है। तात्पर्य यह है कि लोककी मोटाई सर्वत्र सात राजू है, और विस्तार क्रमसे लोकके नीचे सात राजू, मध्यलोकमें एक राजू, ब्रह्म स्वर्गपर पाँच राजू और लोकके अन्तमें एक राजू है।१४९। २ सम्पूर्ण लोककी ऊँचाई १४ राजू प्रमाण है। अर्धमृदगकी ऊँचाई सम्पूर्ण मृदंगकी ऊँचाईके सदृश है। अर्थात् अर्धमृदग सदृश अधोलोक जैसे सात राजू ऊँचा है उसी प्रकार ही पूर्ण मृदगके सदृश ऊर्ध्वलोक भी सात ही राजू ऊँचा है।१५०। क्रमसे अधोलोककी ऊँचाई सात राजू, मध्यलोककी ऊँचाई १००,००० योजन, और ऊर्ध्वलोककी ऊँचाई एक लाख योजन कम सात राजू है।१५१। (ध ४/१, ३, २/गा ८/११), (त्रि सा /११३), (ज प./४/११,१६-१७)। ३. तहाँ भी —तीनो लोकोंमेसे अर्धमृदंगाकार अधोलोकमे रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम -प्रभा और महातमप्रभा, ये सात पृथिवियाँ एक राजूके अन्तरालसे है।१५२। घर्मा, वशा, मेघा, अजना, अरिष्टा, मघवी और माघवी ये इन उपर्युक्त पृथिवियोके अपरनाम है।१५३। मध्यलोकके अधोभागसे प्रारम्भ होकर पहला राजू शर्कराप्रभा पृथिवीके अधोभागमें समाप्त होता है।१५४। इसके आगे दूसरा राजू प्रारम्भ होकर बालुकाप्रभाके अधोभागमे समाप्त होता है। तथा तीसरा राजू पकप्रभाके अधोभागमें।१५५। चौथा धूमप्रभाके अधोभागमे, पाँचवाँ तम प्रभाके अधोभागमे।१५६। और छठा राजू महातम प्रभाके अन्तमे समाप्त होता है। इससे आगे सातवाँ राजू लोकके तलभागमें समाप्त होता है।१५७। [इस प्रकार अधोलोककी ७ राजू ऊँचाईका विभाग है।] ४ रत्नप्रभा पृथिवीके तीन भागोमे से खरभाग १६००० यो० पक भाग ८४००० यो० और अब्बहुल भाग ८०,००० योजन मोटे है। दे० रत्नप्रभा/२। ५ लोकमें मेरुके तलभागसे उसकी चोटी पर्यन्त १००,००० योजन ऊँचा व १ राजू प्रमाण विस्तार युक्त मध्यलोक है। इतना ही तिर्यक्लोक है।—दे० तिर्यंच/३/१)। मनुष्यलोक चित्रा पृथिवीके ऊपरसे मेरुकी चोटी तक ९९००० योजन विस्तार तथा अढाई द्वीप प्रमाण ४५००,००० योजन विस्तार युक्त है।—दे० मनुष्य/४/१। ६. चित्रा पृथिवीके नीचे खर व पक भागमें १००,००० यो० तथा चित्रा पृथिवीके ऊपर मेरुकी चोटी तक ९९००० योजन ऊँचा और एक राजू प्रमाण विस्तार युक्त भावनलोक है।–दे०व्यन्तर/४/१-५। इसी प्रकार व्यन्तरलोक भी जानना।—दे०व्यतर/४/१-५। चित्रा पृथिवीसे ७९० योजन ऊपर जाकर ११० योजन बाहल्य व १ राजू विस्तार युक्त ज्योतिष लोक है।—दे० ज्योतिषलोक/१। ७ मध्यलोकके ऊपरी भागसे सौधर्म विमानका ध्वजदण्ड १००,००० योजन कम $1\frac{1}{2}$ राजू प्रमाण ऊँचा है।१५८। इसके आगे $1\frac{1}{2}$ राजू माहेन्द्र व सनत्कुमार स्वर्गके ऊपरी भागमे, १/२ राजू ब्रह्मोत्तरके ऊपरी भागमें।१५९। १/२ राजू कापिष्ठके ऊपरी भागमे, १/२ राजू महाशुक्रके ऊपरी भागमें, १/२ राजु सहस्रारके ऊपरी भागमें।१६०। १/२ राजू आनतके ऊपरी भागमें और १/२ राजू आरण-अच्युतके

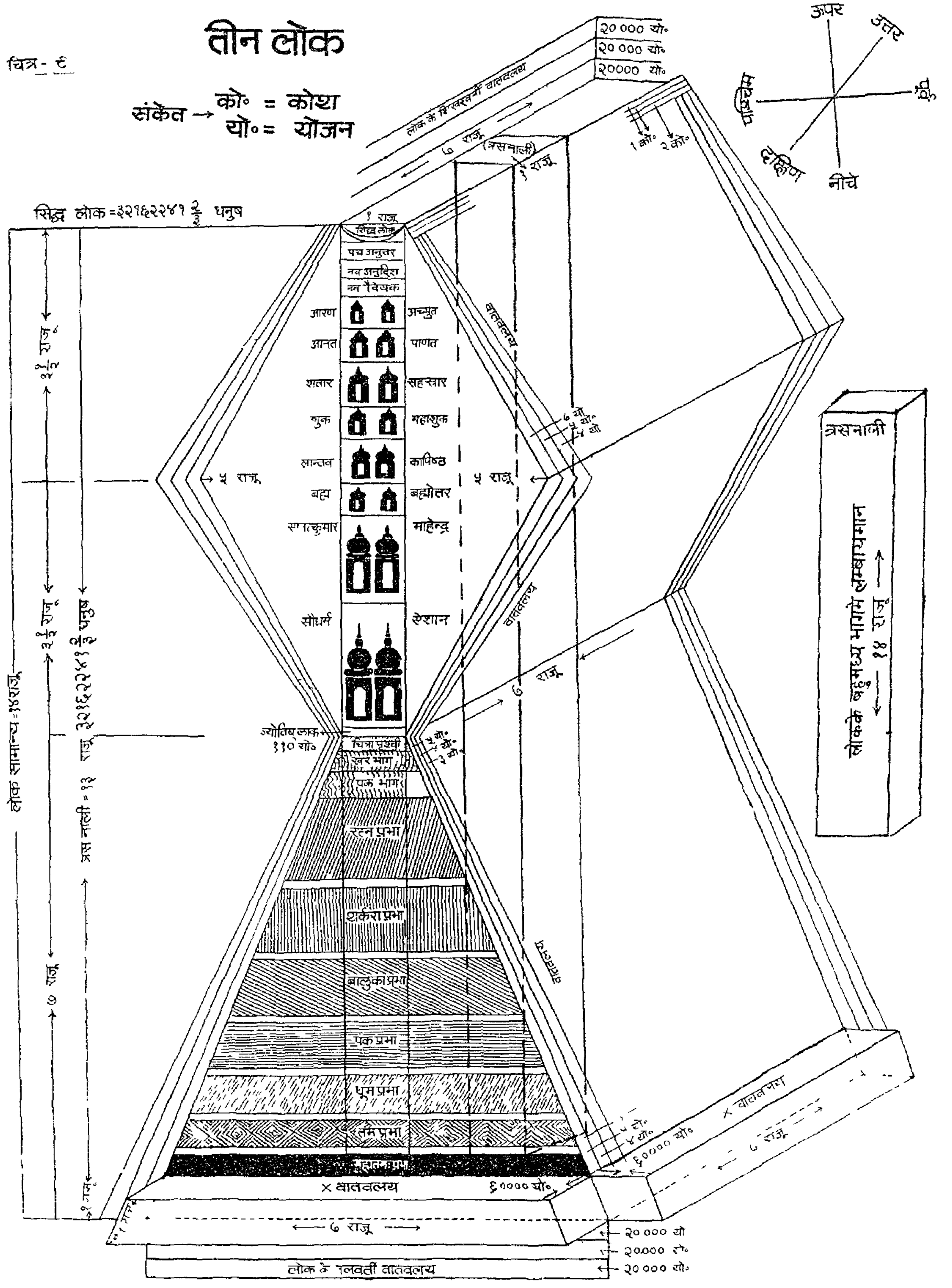

× लोक के नीचे वाले एक राजू प्रमाण कलकल नामक स्थावर लोक को चारो ओर से घेर कर अवस्थित ६०,००० यो० मोटा वातवलय।

ऊपरी भागमें समाप्त हो जाता है ।१६१। उसके ऊपर एक राजूकी ऊँचाईमे नवग्रैवेयक, नव अनुदिश, और ५ अनुत्तर विमान है । इस प्रकार **ऊर्ध्वलोकमें ७ राजूका विभाग कहा गया** ।१६२। अपने-अपने अन्तिम इन्द्रक-विमान सम्बन्धी ध्वजदण्डके अग्रभाग तक उन-उन स्वर्गोंका अन्त समझना चाहिए । और कल्पातीत भूमिका जो अन्त है वही लोकका भी अन्त है ।१६३। ८. [लोक शिखरके नीचे ४२५ धनुष और २१ योजन मात्र जाकर अन्तिम सर्वार्थसिद्धि इन्द्रक स्थित है (दे० स्वर्ग/५/१) सर्वार्थसिद्धि इन्द्रकके ध्वजदण्डसे १२ योजन मात्र ऊपर जाकर अष्टम पृथिवी है । वह ८ योजन मोटी व एक राजू प्रमाण विस्तृत है । उसके मध्य ईषत प्राग्भार क्षेत्र है । वह ४५००,००० योजन विस्तार युक्त है । मध्यमें ८ योजन और सिरोंपर केवल अंगुल प्रमाण मोटा है । इस अष्टम पृथिवीके ऊपर ७०५० धनुष जाकर **सिद्धलोक** है (दे० मोक्ष/१/७)]

४. वातवलयोंका परिचय

१. वातवलय सामान्य परिचय

ति प./१/२६८ गोमुत्तमुग्गवण्णा वणोदधी तह घणाणिलओ वाऊ । तणुवादो बहुवण्णो रुक्खस्स तय व वलयातियं ।२६८। =गोमूत्रके समान वर्णवाला घनोदधि, मूगके समान वर्णवाला घनवात तथा अनेक वर्णवाला तनुवात । इस प्रकार ये तीनो वातवलय वृक्षकी त्वचाके समान (लोकको घेरे हुए) है ।२६८। (रा वा./३/१/८/१६०/१६); (त्रि. सा /१२३), (दे० चित्र सं० ६ पृ ४३६) ।

२. तीन वातवलयोंका अवस्थान क्रम

ति. प /१/२६६ पढमो लोयाधारो घणोवही इह घणाणिलो ततो । तप्परदो तणुवादो अतम्मि णह णिआधारं ।२६६। =इनमेंसे प्रथम घनोदधि वातवलय लोकका आधारभूत है, इसके पश्चात घनवातवलय, उसके पश्चात तनुवातवलय और फिर अतमें निजाधार आकाश है । ।२६६। (स. सि /३/१/२०४/३), (रा वा./३/१/८/१६०/१४); (तत्त्वार्थ वृत्ति/३/१/श्लो. १-२/११२) ।

तत्त्वार्थ वृत्ति/३/१/१११/१६ सर्वा सप्तापि भूमयो घनवातप्रतिष्ठा वर्तन्ते । स च घनवात अम्बुवातप्रतिष्ठोऽस्ति । स चाम्बुवातस्तनुवातस्तनुप्रतिष्ठो वर्तते । स च तनुवात आकाशप्रतिष्ठो भवति । आकाशस्यालम्बनं किमपि नास्ति ।=दृष्टि न. २ --ये सभी सातों भूमियाँ घनवातके आश्रय स्थित है । वह घनवात भी अम्बु (घनोदधि) वातके आश्रय स्थित है और वह अम्बुवात तनुवातके आश्रय स्थित है । वह तनुवात आकाशके आश्रय स्थित है, तथा आकाशका कोई भी आलम्बन नहीं है ।

३. पृथिवियोंके साथ वातवलयोंका स्पर्श

ति. प /२/२४ सत्तच्चिय भूमीओ णवदिसभाएण घणोवहिविलग्गा । अट्ठमभूमीदसदिस भागेसु घणोवहि छिवदि ।२४।

ति.प ८/२०६-२०७ सोहम्मदुगविमाणा घणस्सरूवस्स उवरि सलिलस्स । चेट्ठते पवणोवरि माहिंदसणक्कुमाराणि ।२०६। बम्हाई चत्तारो कप्पा चेट्ठंति सलिलवादूढ । आणदपाणदपहुदी सेसा सुद्धम्मि गयणयले ।२०७।=सातो (नरक) पृथिवियाँ ऊर्ध्व दिशाको छोडकर शेष नौ दिशाओमें घनोदधि वातवलयसे लगी हुई है, परन्तु आठवीं पृथिवी दशो दिशाओमे ही वातवलयको छूती है ।२४। सौधर्म युगलके विमान घनस्वरूप जलके ऊपर तथा माहेन्द्र व सनत्कुमार कल्पके विमान पवनके ऊपर स्थित है ।२०६। ब्रह्मादि चार कल्प जल व वायु दोनोके ऊपर, तथा आनत प्राणत आदि शेष विमान शुद्ध आकाशतलमें स्थित है ।२०७।

४. वातवलयोंका विस्तार

ति. प /१/२७०-२८१ जोयणवीससहस्सं बहलंतम्मारुदाण पत्तेक्कं । अट्ठाखिदीण हेट्ठेलोअतले उवरि जाव इगिरज्जू ।२७०। सगपण चउजोयणयं सत्तमणारयम्मि पुहविपणधीए । पंचचउतियपमाणं तिरीयखेत्तस्स पणिधीए ।२७१। सगपचचउसमाणा पणिधीए होंति बम्हकप्पस्स । पणचउतिय जोयणया उवरिमलोयस्स यंतम्मि ।२७२। कोसदुगमेक्ककोसं किंचूणेक्कं च लोयसिहरम्मि । ऊणपमाण दंडा चउस्सया पचवीस जुदा ।२७३। तीस इगिदालदल कोसा तियभाजिदा य उणवणया । सत्तमखिदिपणिधीए बम्हजुदे वाउबहलत्तं । ।२८०। दो छब्बारस भागब्भहिओ कोसो कमेण वाउघणं । लोयउवरिम्मि एव लोय विभायम्मि पण्णत्त ।२८१। =दृष्टि न० १—आठ पृथिवियोके नीचे लोकके तलभागसे एक राजूकी ऊँचाई तक इन वायुमण्डलोमेंसे प्रत्येककी मोटाई २० ००० योजन प्रमाण है ।२७०। सातवे नरकमें पृथिवियोके पार्श्व भागमें क्रमसे इन तीनो वातवलयोंकी मोटाई ७,५ और ४ तथा इसके ऊपर तिर्यग्लोक (मर्त्यलोक) के पार्श्वभागमें ५,४ और ३ योजन प्रमाण है ।२७१। इसके आगे तीनो वायुओकी मोटाई ब्रह्म स्वर्गके पार्श्व भागमे क्रमसे ७,५ और ४ योजन प्रमाण, तथा ऊर्ध्वलोकके अन्तमे (पार्श्व भागमे) ५, ४ और ३ योजन प्रमाण है ।२७२। लोकके शिखरपर (पार्श्व भागमे) उक्त तीनो वातवलयोका बाहल्य क्रमश २ कोस, १ कोस और कुछ कम १ कोस है । यहाँ कुछ कमका प्रमाण ४२५ धनुष समझना चाहिए ।२७३। [शिखर पर प्रत्येककी मोटाई २०,००० योजन है —दे० मोक्ष/१/७] (त्रि सा./१२४-१२६) । दृष्टि न० २—सातवीं पृथिवी और ब्रह्म युगलके पार्श्वभागमें तीनो वायुओकी मोटाई क्रमसे ३०, ४१/२ और ४१/३ कोस है ।२८०। लोक शिखरपर तीनो वातवलयोंकी मोटाई क्रमसे $१\frac{१}{३}$, $१\frac{१}{६}$ और $१\frac{१}{१२}$ कोस प्रमाण है । ऐसा लोक विभागमें कहा गया है ।२८१।—विशेष दे चित्र स. ६ पृ. ४३६.

५. लोकके आठ रुचक प्रदेश

रा वा /१/२०/१२/७६/१३ मेरुप्रतिष्ठावज्रवैडूर्यपटलान्तररुचकसंस्थिता अष्टावाकाशप्रदेशलोकमध्यम् । =मेरु पर्वतके नीचे बज्र व वैडूर्य पटलोके बीचमें चौकोर सस्थान रूपसे अवस्थित आकाशके आठ प्रदेश लोकका मध्य है ।

६. लोक विभाग निर्देश

ति. प /१/१३६ सयलो एस य लोओ णिप्पण्णो सेढिविंदमाणेण । तिवियप्पो णादव्वो हेट्ठिममज्झिमउड्ढ भेएण ।१३६। =श्रेणी वृन्द्रके मानसे अर्थात जगश्रेणीके घन प्रमाणसे निष्पन्न हुआ यह सम्पूर्ण लोक, अधोलोक मध्यलोक और ऊर्ध्वलोकके भेदसे तीन प्रकारका है ।१३६। (बा. अ./३६), (ध. १३/५,५,५०/२८८/४) ।

७. त्रस व स्थावर लोक निर्देश

[पूर्वोक्त वेत्रासन व मृदगाकार लोकके बहु मध्य भागमें, लोक शिखरसे लेकर उसके अन्त पर्यन्त १३ राजू लम्बी व मध्यलोक समान एक राजू प्रमाण विस्तार युक्त नाडी है । त्रस जीव इस नाडीसे बाहर नही रहते इसलिए यह **त्रसनाली** नामसे प्रसिद्ध है । (दे० त्रस/२/३,४) । परन्तु **स्थावर जीव** इस लोकमें सर्वत्र पाये जाते है । (दे० स्थावर/६) तहाँ भी सूक्ष्म जीव तो लोकमे सर्वत्र ठसाठस भरे है, पर बादर जीव केवल त्रसनालीमे होते है (दे० सूक्ष्म/३/७) उनमें भी तेजसकायिक जीव केवल कर्मभूमियोमें ही पाये जाते है अथवा अधोलोक व भवनवासियोके विमानोमें पाँचो कायोके जीव पाये जाते है, पर स्वर्ग लोकमे नहीं — दे० काय/२/५ । विशेष दे. चित्र स ६ पृ. ४३६ ।

८. अधोलोक सामान्य परिचय

[सर्वलोक तीन भागोमे विभक्त है—अधो, मध्य व ऊर्ध्व—दे० लोक/२/२, इस मेरु तलके नीचेका क्षेत्र **अधोलोक** है, जो वेत्रासनके आकार वाला है । ७ राजू ऊँचा व ७ राजू मोटा है । नीचे ७ राजू व ऊपर १ राजू प्रमाण चौडा है । इसमे ऊपरसे लेकर नीचे तक क्रम-

चित्र सं०-१०

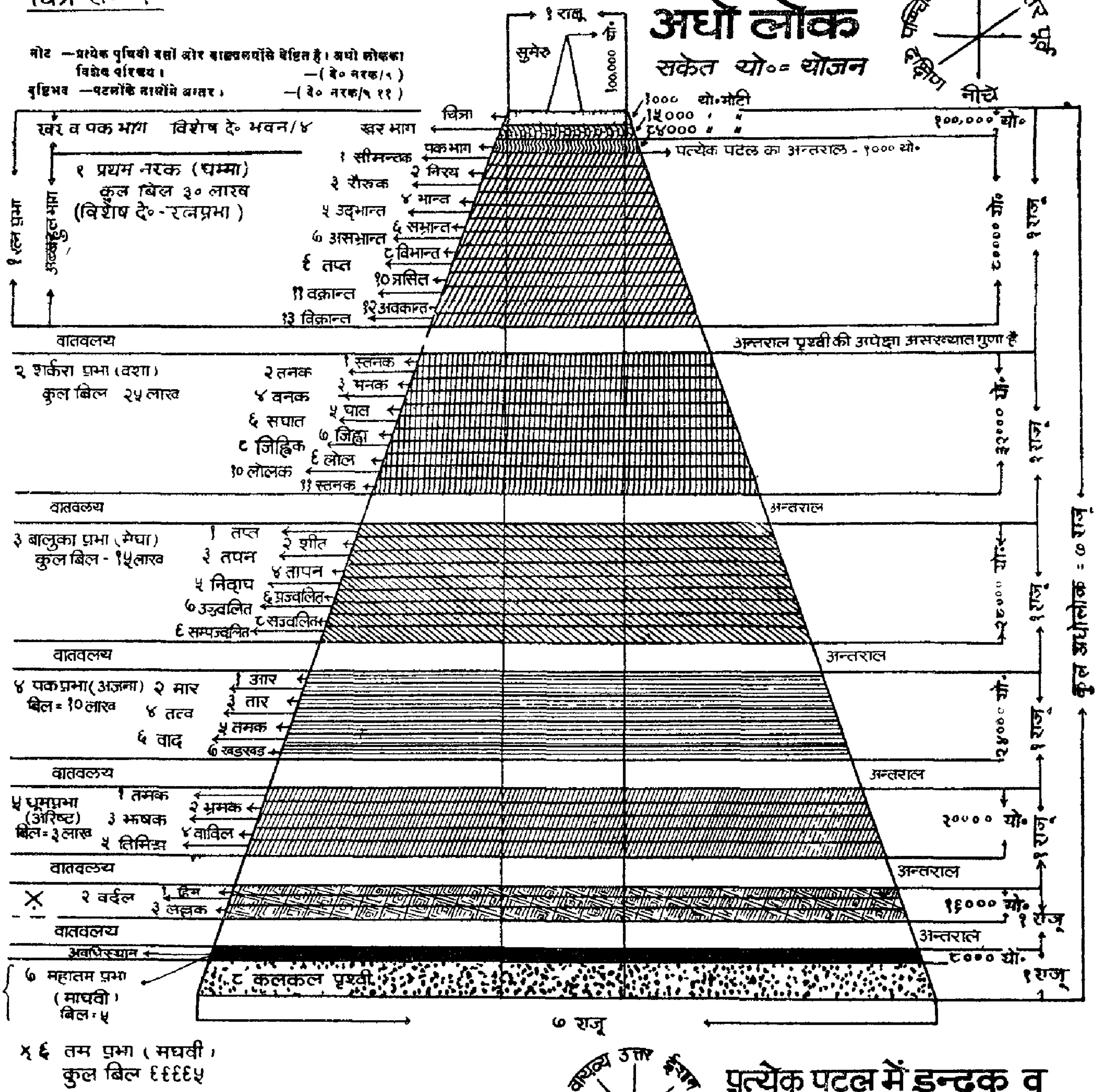

प्रत्येक पटल में इन्द्रक व श्रेणी बद्ध

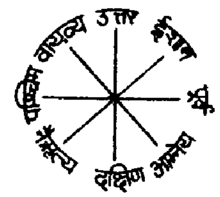

चित्र स० ११

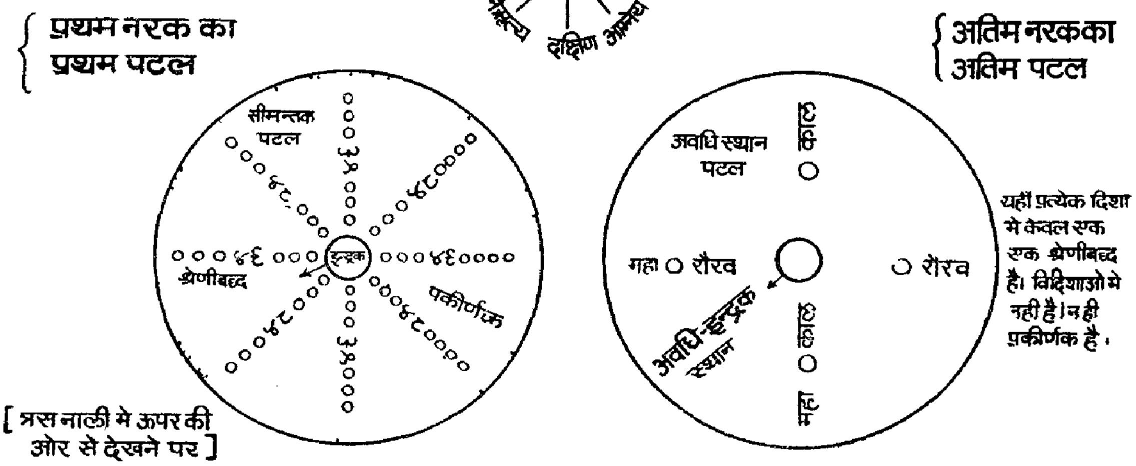

से रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा व महातमप्रभा नामकी ७ **पृथिवियाँ** लगभग एक राजू अन्तरालसे स्थित है। प्रत्येक पृथिवीमें यथायोग्य १३,११ आदि पटल १००० योजन अन्तरालसे अवस्थित है। कुल **पटल ४९** है। प्रत्येक पटलमें अनेकों बिल या गुफाएँ है। पटलका मध्यवर्ती बिल इन्द्रक कहलाता है। इसकी चारो दिशाओं व विदिशाओंमें एक श्रेणीमें अवस्थित बिल श्रेणीबद्ध कहलाते है और इनके बीचमे रत्नराशिवत् बिखरे हुए बिल प्रकीर्णक कहलाते है। इन बिलोंमें नारकी जीव रहते हैं। (दे० नरक/५/१-३)। सातों पृथिवियों के नीचे अन्तमें एक राजू प्रमाण क्षेत्र खाली है। (उसमे केवल निगोद जीव रहते है) —दे० चित्र सं. १० पृ. ४४१।

★ **रत्नप्रभा पृथिवीके खर व पंक भागका चित्र**—दे० भवन/४।

★ **रत्नप्रभा पृथिवीके अब्बहुल भाग का चित्र**—दे० रत्नप्रभा।

९. भावनलोक निर्देश

[उपरोक्त सात पृथिवियोमे जो रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी है, वह तीन भागोमें विभक्त है—खरभाग, पंकभाग व अब्बहुल भाग। खरभाग भी चित्रा, वैडूर्य, लोहिताक आदि १६ प्रस्तरोंमें विभक्त है। प्रत्येक प्रस्तर १००० योजन मोटा है। उनमे **चित्रा** नामका प्रथम प्रस्तर अनेको रत्नों व धातुओंकी खान है। (दे० रत्नप्रभा)। तहाँ खर व पंकभागमें भावनवासी देवोंके भवन है और अब्बहुल भागमें नरक पटल है (दे० भवन/४/१)। इसके अतिरिक्त तिर्यक् लोकमें भी यत्र-तत्र-सर्वत्र उनके पुर, भवन व आवास है। (दे० व्यंतर/४/१-५)। (विशेष दे० भवन/४)]

१०. व्यन्तर लोक निर्देश

[चित्रा पृथिवीके तल भागमे लेकर सुमेरुकी चोटी तक तिर्यग्-लोक प्रमाण विस्तृत सर्वक्षेत्र व्यन्तरोके रहनेका स्थान है। इसके अतिरिक्त खर व पंकभागमें भी उनके भवन है। मध्यलोकके सर्व-द्वीप समुद्रोकी वेदिकाओंपर, पर्वतोके कूटोंपर, नदियोके तटोंपर इत्यादि अनेक स्थलोपर यथायोग्य रूपमें उनके पुर, भवन व आवास है। (विशेष दे० व्यन्तर/४/१-५)।

११. मध्यलोक निर्देश

१. द्वीप-सागर आदि निर्देश

ति. प./५/८-१०,२७ सव्वे दीवसमुद्दा संखादीदा भवंति समवट्टा। पढमो दीओ उवही चरिमो मज्झम्मि दीउवही।८। चित्तोवरि बहुमज्झे रज्जूपरिमाणदीहविक्खंभे। चेट्ठंति दीवउवही एक्केक्कं वेढिऊण हु प्परिदो।९। सव्वे वि वाहिणीसा चित्तखिदि खंडिदूण चेट्ठंति। वज्जखिदीए उवरिं दीवा वि हु उवरि चित्ताए।१०। जम्बूदीवे लवणो उवही कालो त्ति वादईसंडे। अवसेसा वारिणिही वत्तव्वा दीव-समणामा।२८। =१ सब द्वीप-समुद्र असंख्यात एवं समवृत्त है। इनमेंसे पहला द्वीप, अन्तिम समुद्र और मध्यमें द्वीप समुद्र है।८। चित्रा पृथिवीके ऊपर बहुमध्य भागमें एकराजू लम्बे-चौड़े क्षेत्रके भीतर एक-एकको चारो ओरसे घेरे हुए द्वीप व समुद्र स्थित है।९। सभी समुद्र चित्रा पृथिवीको खण्डित कर वज्रा पृथिवीके ऊपर, और सब द्वीप चित्रा पृथिवीके ऊपर स्थित है।१०। (मू. आ./१०७६), (त. सू./३/७-८), (ह. पु./५/२,६२६-६२७), (ज. प./१/१९)। २. जम्बूद्वीपमें लवणोदधि और धातकीखण्डमे कालोद नामक समुद्र है। शेष समुद्रोके नाम द्वीपोके नामके समान ही कहना चाहिए।।२८। (मू. आ./१०७७), (रा. वा./३/३८/७/२०८/१७), (ज. प./११/१८३)।

त्रि. सा./८८९ वज्जमयमूलभागा वेलुरियकयाइरम्मा सिहरजुदा। दीवो वहीणमंते पायारा होंति सव्वत्थ।८८९। =सभी द्वीप व समुद्रोके अन्तमें परिधि रूपसे वैडूर्यमयी **जगती** होती है, जिनका मूल वज्रमयी होता है तथा जो रमणीक शिखरोसे संयुक्त है। (—विशेष दे० लोक/३/१ तथा ४/१।

नोट—[द्वीप-समुद्रोंके नाम व समुद्रोके जलका स्वाद—दे० लोक/५/१]।

२. तिर्यक्लोक, मनुष्यलोक आदि विभाग

ध. ४/१,३,१/९/३ देसभेएण तिविहो, मंदरचूलियादो, उवरिमुड्ढ-लोगो, मंदरमूलादो हेट्ठा अधोलोगो, मंदरपरिच्छिण्णो मज्झलोगो त्ति। =देशके भेदसे क्षेत्र तीन प्रकारका है। मन्दराचल (सुमेरु-पर्वत) की चूलिकासे ऊपरका क्षेत्र ऊर्ध्वलोक है। मन्दराचलके मूल-से नीचेका क्षेत्र अधोलोक है। मन्दराचलसे परिच्छिन्न अर्थात् तत्प्र-माण मध्यलोक है।

ह. पु./५/१ तनुवातान्तपर्यन्तस्तिर्यग्लोको व्यवस्थित। लक्षिताबधि-रूर्ध्वाधो मेरुयोजनलक्षया।१। =१ तनुवातवलयके अन्तभाग तक तिर्यग्लोक अर्थात् मध्यलोक स्थित है। मेरु पर्वत एक लाख योजन विस्तारवाला है। उसी मेरु पर्वत द्वारा ऊपर तथा नीचे इस तिर्य-ग्लोकको अवधि निश्चित है।१। [इसमें असंख्यात द्वीप, समुद्र एक दूसरेको वेष्टित करके स्थित है दे० लोक/२/११। यह साराका सारा **तिर्यक्लोक** कहलाता है, क्योंकि तिर्यंच जीव इस क्षेत्रमें सर्वत्र पाये जाते है। २. उपरोक्त तिर्यग्लोकके मध्यवर्ती, जम्बूद्वीपसे लेकर मानुषोत्तर पर्वत तक अढाई द्वीप व दो सागरसे रुद्ध ४५०० ००० योजन प्रमाण क्षेत्र **मनुष्यलोक** है। देवो आदिके द्वारा भी उनका मानुषोत्तर पर्वतके पर भागमें जाना सम्भव नही है। (—दे० मनुष्य/४/१)।३ मनुष्य लोकके इन अढाई द्वीपोमेसे जम्बूद्वीपमें १ और धातकी व पुष्करार्धमें दो-दो मेरु है। प्रत्येक मेरु सम्बन्धी ६ कुलधर पर्वत होते है, जिनसे वह द्वीप ७ क्षेत्रोमे विभक्त हो जाता है। मेरुके प्रणिधि भागमे दो कुरु तथा मध्यवर्ती विदेह क्षेत्रके पूर्व व पश्चिमवर्ती दो विभाग होते है। प्रत्येकमे ८ वक्षार पर्वत, ६ विभंगा नदियाँ तथा १६ क्षेत्र है। उपरोक्त ७ व इन ३२ क्षेत्रोमेसे प्रत्येकमें दो-दो प्रधान नदियाँ है। ७ क्षेत्रोंमेंसे दक्षिणी व उत्तरीय दो क्षेत्र तथा ३२ विदेह इन सबके मध्यमें एक-एक विजयार्ध पर्वत है, जिनपर **विद्याधरोंकी बस्तियाँ है**। (दे० लोक३/५)।४. इस अढाई द्वीप तथा अन्तिम द्वीप सागरमें ही **कर्म-भूमि** है, अन्य सर्व द्वीप व सागरमें सर्वदा **भोगभूमिकी** व्यवस्था रहती है। कृष्यादि षट्कर्म तथा धर्म-कर्म सम्बन्धी अनुष्ठान जहाँ पाये जाये वह कर्मभूमि है, और जहाँ जीव बिना कुछ किये प्राकृतिक पदार्थोंके आश्रयपर उत्तम भोग भोगते हुए सुखपूर्वक जीवन-यापन करे वह भोगभूमि है। अढाई द्वीपके सर्व क्षेत्रोमे भी सर्व विदेह क्षेत्रोंमें त्रिकाल उत्तम प्रकारकी कर्मभूमि रहती है। दक्षिणी व उत्तरी दो-दो क्षेत्रोंमें षट्काल परिवर्तन होता है। तीन कालोमे उत्तम, मध्यम व जघन्य भोगभूमि और तीन कालोमे उत्तम, मध्यम व जघन्य कर्मभूमि रहती है। दोनो कुरुओमे सदा उत्तम भोगभूमि रहती है, इनके आगे दक्षिण व उत्तर-वर्ती दो क्षेत्रोंमें सदा मध्यम भोगभूमि और उनसे भी आगेके शेष दो क्षेत्रोंमें सदा जघन्य भोगभूमि रहती है (दे० भूमि) भोगभूमिमे जीवकी आयु शरीरोत्सेध बल व सुख क्रमसे वृद्धिगत होता है और कर्मभूमिमें क्रमश हानिगत होता है। —दे० काल/४। ५ मनुष्य लोक व अन्तिम स्वयंप्रभ द्वीप व सागरको छोडकर **शेष सभी द्वीप सागरोंमें विकलेन्द्रिय व जलचर नही** होते है। इसी प्रकार सर्व ही भोगभूमियोमें भी वे नही होते है। वैर वश देवोके द्वारा ले जाये गये वे सर्वत्र सम्भव है।—दे० तिर्यंच/३।

१२. ज्योतिष लोक सामान्य निर्देश

[पूर्वोक्त चित्रा पृथिवीसे ७९० योजन ऊपर जाकर ११० योजन पर्यन्त आकाशमें एक राजू प्रमाण विस्तृत ज्योतिष लोक है। नीचेसे

चित्र सं० - १२

मध्य लोक सामान्य

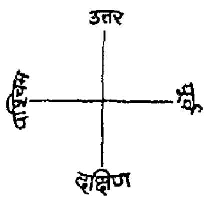

द्वीप सागरों के नाम दे॰लोक /५/१

संकेत यो० = योजन

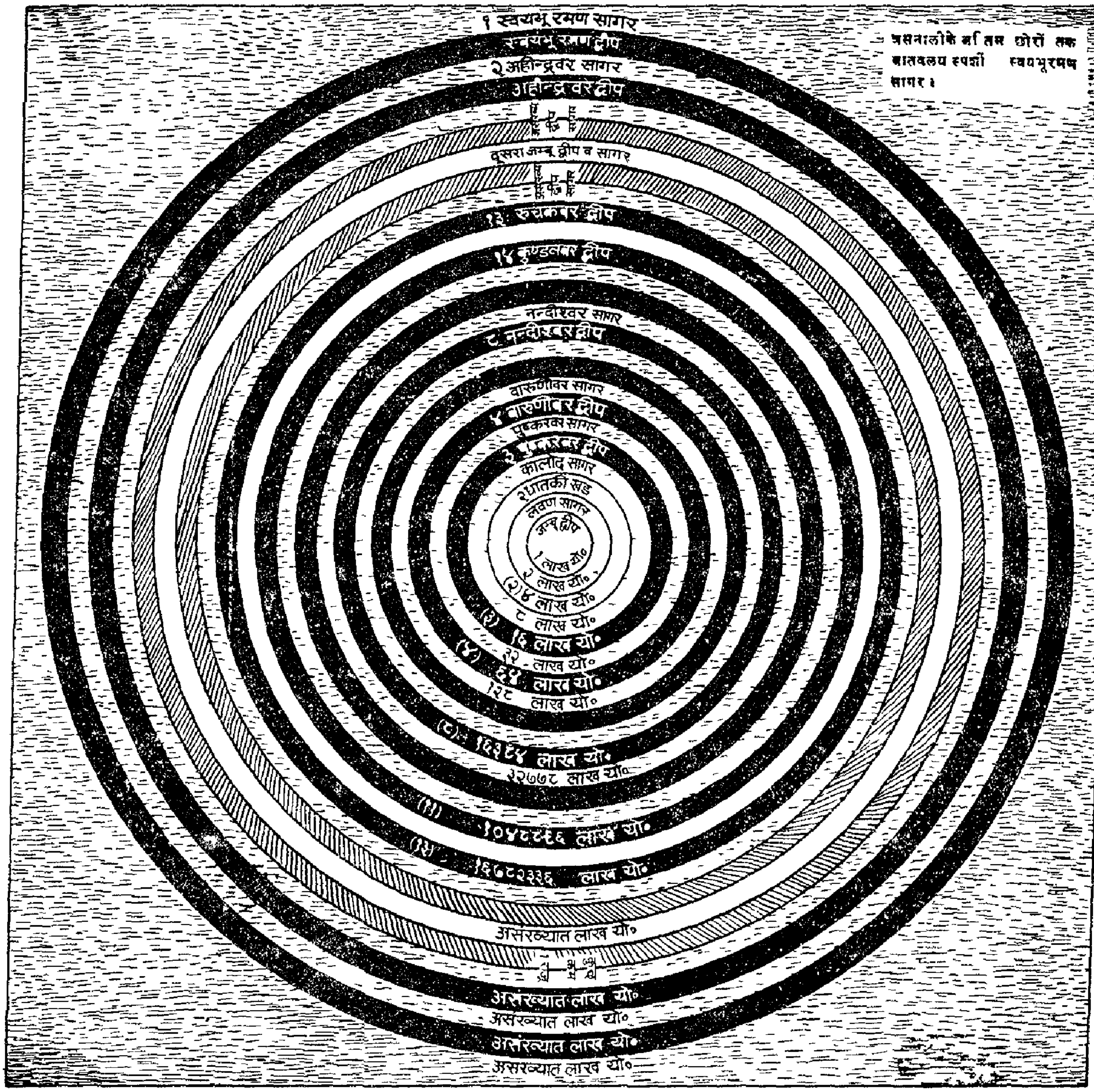

नोट — त्रस नाली मे ऊपर की ओर से देखने पर ऐसा दिखाई देता है।

ऊपरकी ओर क्रमसे तारागण, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, शुक्र, बृहस्पति, मंगल, शनि व शेष अनेक ग्रह अवस्थित रहते हुए अपने-अपने योग्य संचार क्षेत्रमें मेरुकी प्रदक्षिणा देते रहते हैं। इनमेंसे चन्द्र इन्द्र है और सूर्य प्रतीन्द्र। १ सूर्य, ८८ ग्रह, २८ नक्षत्र व ६६६७५ तारे, ये एक चन्द्रमाका परिवार है। जम्बूद्वीपमें दो, लवणसागरमें ४, धातकी खण्डमें १२, कालोदमें ४२ और पुष्करार्धमें ७२ चन्द्र है। ये सब तो चर अर्थात् चलनेवाले ज्योतिष विमान हैं। इससे आगे पुष्करके परार्धमें ८, पुष्करोदमें ३२, वारुणीवर द्वीपमें ६४ और इससे आगे सर्व द्वीप समुद्रोंमें उत्तरोत्तर दुगुने चन्द्र अपने परिवार सहित स्थित हैं। ये अचर ज्योतिष विमान हैं—दे० ज्योतिष लोक।

११. ऊर्ध्वलोक सामान्य परिचय

[सुमेरु पर्वतकी चोटीसे एक बाल मात्र अन्तरसे ऊर्ध्वलोक प्रारम्भ होकर लोक-शिखर पर्यन्त १००४०० योजनकम ७ राजू प्रमाण ऊर्ध्वलोक है। उसमें भी लोक शिखरसे २१ योजन ४२५ धनुष नीचे तक तो स्वर्ग है और उससे ऊपर लोक शिखर पर सिद्ध लोक है। स्वर्गलोकमें ऊपर-ऊपर स्वर्ग पटल स्थित हैं। इन पटलोंमें दो विभाग हैं→कल्प व कल्पातीत। इन्द्र सामानिक आदि १० कल्पनाओं युक्त देव कल्पवासी हैं और इन कल्पनाओंसे रहित अहमिन्द्र कल्पातीत विमानवासी हैं। आठ युगलों रूपसे अवस्थित कल्प पटल १६ हैं—सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, और अच्युत। इनसे ऊपर ग्रैवेयेक, अनुदिश व अनुत्तर ये तीन पटल कल्पातीत हैं। प्रत्येक पटल लाखों योजनोंके अन्तरालसे ऊपर-ऊपर अवस्थित है। प्रत्येक पटलमें असंख्यात योजनोंके अन्तरालसे अन्य क्षुद्र पटल हैं। सर्वपटल मिलकर ६३ हैं। प्रत्येक पटलमें विमान हैं। नरकके बिलोंवत् ये विमान भी इन्द्रक श्रेणिबद्ध व प्रकीर्णकके भेदसे तीन प्रकारोंमें विभक्त हैं। प्रत्येक क्षुद्र पटलमें एक-एक इन्द्रक है और अनेकों श्रेणीबद्ध व प्रकीर्णक। प्रथम महापटलमें ३३ और अन्तिममें केवल एक सर्वार्थसिद्धि नामका इन्द्रक है, इसकी चारों दिशाओंमें केवल एक-एक श्रेणीबद्ध है। इतना यह सब **स्वर्गलोक** कहलाता है (नोटः-चित्र सहित विस्तारके लिए दे.स्वर्ग/५) सर्वार्थसिद्धि विमानके ध्वजदण्डसे २६ योजन ४२५ धनुष ऊपर जाकर **सिद्धलोक** है। जहाँ मुक्तजीव अवस्थित हैं। तथा इसके आगे लोकका अन्त हो जाता है (दे० मोक्ष/१/७)।]

३. जम्बूद्वीप निर्देश

१. जम्बूद्वीप सामान्य निर्देश

त. सू./३/६-२३ तन्मध्ये मेरुनाभिवृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।६। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनील-रुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।११। हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजत-हेममयाः ।१२। मणिविचित्रपार्श्वा उपरि मूले च तुल्यविस्ताराः ।१३। पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्डरीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।१४। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।१७। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपम-स्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।१९। गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।२०। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।२१। शेषास्त्वपरगाः ।२२। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ।२३। —१. उन सब (पूर्वोक्त असंख्यात द्वीप समुद्रों—दे० लोक/२/११) के बीचमें गोल और १००,००० योजन विष्कम्भवाला जम्बूद्वीप है। जिसके मध्यमें मेरु पर्वत है ।६। (ति. प./४/११ व ५/८); (ह. पु./५/३); (ज. प./१/२०)। २. उसमें भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष ये **सात वर्ष अर्थात् क्षेत्र हैं** ।१०। उन क्षेत्रोंको विभाजित करनेवाले और पूर्व-पश्चिम लम्बे ऐसे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी, और शिखरी ये **छह वर्षधर या कुलाचल** पर्वत हैं ।११। (ति. प./४/९०-९४); (ह. पु./५/१३-१५); (ज. प./२/२ व ३/२); (त्रि. सा./५६४)। ३. ये छहों पर्वत क्रमसे सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी, और सोना इनके समान रंगवाले हैं ।१२। इनके पार्श्वभाग मणियोंसे चित्र विचित्र हैं। तथा ये ऊपर, मध्य और मूलमें समान विस्तारवाले हैं ।१३। (ति. प./४/९४-९५); (त्रि. सा./५६६)। ४. इन कुलाचल पर्वतोंके ऊपर क्रमसे पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक, और पुण्डरीक, ये तालाब हैं ।१४। (ह. पु./५/१२०-१२१); (ज. प./३/६९)। ५. पहिला जो पद्म नामका तालाब है उसके मध्य एक योजनका **कमल है** [इसके चारों तरफ अन्य भी अनेकों कमल हैं—दे० आगे लोक/३/९।] **इससे** आगेके ह्रदोंमें भी **कमल हैं**। वे तालाब व कमल उत्तरोत्तर दूने विस्तार वाले हैं ।१७-१८। (ह. पु./५/१२६); (ज. प./३/६९)। ६. पद्म ह्रदको आदि लेकर इन कमलोंपर क्रमसे श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये देवियाँ, अपने-अपने सामानिक, परिषद् आदि परिवार देवोंके साथ रहती हैं—(दे० व्यंतर/-३/२) ।१९।(ह. पु./५/१३०)। ७. [उपरोक्त पद्म आदि द्रहोंमेंसे निकल कर भरत आदि क्षेत्रोंमेंसे प्रत्येकमें दो-दो करके क्रमसे] गंगा-सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित-हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता-रक्तोदा **नदियाँ बहती हैं** ।२०। (ह. पु./५/१२२-१२५)। [तिनमें भी गंगा, सिन्धु व रोहितास्या ये तीन पद्म द्रहसे, रोहित व हरिकान्ता महापद्म द्रहसे, हरित व सीतोदा तिगिंछ द्रहसे, सीता व नरकान्ता केशरी द्रहसे, नारी व रूप्यकूला महापुण्डरीकसे तथा सुवर्णकूला, रक्ता व रक्तोदा पुण्डरीक सरोवरसे निकली हैं—(ह. पु./५/१३२-१३५)]। ८. उपरोक्त युगलरूप दो-दो नदियोंमेंसे पहली-पहली नदी पूर्व समुद्रमें गिरती हैं और पिछली-पिछली नदी पश्चिम समुद्रमें गिरती हैं ।२१-२२। (ह. पु./५/१६०); (ज. प./३/१९२-१९३)। ९. गंगा सिन्धु आदि नदियोंको चौदह-चौदह हजार परिवार नदियाँ हैं। [यहाँ यह विशेषता है कि प्रथम गंगा सिन्धु युगलमेंसे प्रत्येकको १४०००, द्वि. युगलमें प्रत्येकको २८००० इस प्रकार सीतोदा नदी तक उत्तरोत्तर दूनी नदियाँ हैं। तदनन्तर शेष तीन युगलोंमें पुनः उत्तरोत्तर आधी-आधी हैं। (स. सि./३/२३/२२०/१०); (रा. वा./३/२३/३/१९०/१३), (ह. पु./५/२७५-२७६)]।

ति. प./४/गा. का भावार्थ—१०. यह द्वीप एक जगती करके वेष्टित है ।१५। (ह. पु./५/३), (ज. प./१/२६)। ११. इस जगतीको पूर्वादि चारों दिशाओंमें विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित नामके चार द्वार हैं ।४१-४२। (रा. वा./३/९/१/१७०/२९); (ह. पु./५/३९०); (त्रि. सा./८९२); (ज. प./१/३८,४२)। १३. इनके अतिरिक्त यह द्वीप अनेकों वन उपवनों, कुण्डों, गोपुर द्वारों, देव नगरियों व पर्वत, नदी, सरोवर, कुण्ड आदि सबकी वेदियों करके शोभित हैं ।९२-९९। १४. [प्रत्येक पर्वतपर अनेकों कूट होते हैं (दे० आगे उन उन पर्वतोंका निर्देश) प्रत्येक पर्वत व कूट, नदी, कुण्ड, द्रह, आदि वेदियों करके संयुक्त होते हैं—(दे० अगला शीर्षक)। प्रत्येक पर्वत, कुण्ड, द्रह, कूटोंपर भवनवासी व व्यन्तर देवोंके पुर, भवन व आवास हैं—(दे० व्यन्तर/४/१-५)। प्रत्येक पर्वत आदिके ऊपर तथा उन देवोंके भवनोंमें जिन चैत्यालय होते हैं। (दे० चैत्यालय/३/२)]।

९. जम्बूद्वीपमें क्षेत्र पर्वत नदी आदिका प्रमाण

१. क्षेत्र, नगर आदिका प्रमाण

(ति. प./४/२३९६–२३९७); (ह. पु./५/८–११); (ज. प./१/५५)।

नं.	नाम	गणना	विवरण
१	महाक्षेत्र	७	भरत हैमवत आदि (दे० लोक/३/३।
२	कुरुक्षेत्र	२	देवकुरु व उत्तर कुरु।
३	कर्मभूमि	३४	भरत, ऐरावत व ३२ विदेह।
४	भोगभूमि	६	हैमवत, हरि, रम्यक व हैरण्यवत तथा दोनों कुरुक्षेत्र।
५	आर्यखण्ड	३४	प्रति कर्मभूमि एक।
६	म्लेच्छ खण्ड	१७०	प्रति कर्मभूमि पाँच।
७	राजधानी	३४	प्रति कर्मभूमि एक।
८	विद्याधरोंके नगर।	३७५०	भरत व ऐरावतके विजयार्धोंमेंसे प्रत्येकपर ११५ तथा ३२ विदेहोंके विजयार्धोंमें से प्रत्येक पर ११० (दे० विद्याधर)।

२. पर्वतोंका प्रमाण

(ति. प.४/२३९४–२३९७); (ह. पु./५/८–१०); (त्रि. सा /७३१); (ज. प./१/५५–५८,६६)।

नं.	नाम	गणना	विवरण
१	मेरु	१	जम्बूद्वीपके बीचोबीच।
२	कुलाचल	६	हिमवान् आदि (दे० लोक/३/३)।
३	विजयार्ध	३४	प्रत्येक कर्मभूमिमें एक।
४	वृषभगिरि	३४	प्रत्येक कर्मभूमिके उत्तर-मध्य म्लेच्छ खण्डमें एक।
५	नाभिगिरि	४	हैमवत, हरि, रम्यक व हैरण्यवत क्षेत्रोंके बीचोबीच।
६	वक्षार	१६	पूर्व व अपर विदेहके उत्तर व दक्षिणमें चार-चार।
७	गजदन्त	४	मेरुकी चारों विदिशाओंमें।
८	दिग्गजेन्द्र	८	विदेह क्षेत्रके भद्रशालवनमें व दोनों कुरुओंमें सीता व सीतोदा नदीके दोनों तटोंपर।
९	यमक	४	दो कुरुओंमें सीता व सीतोदाके दोनों तटोंपर।
१०	कांचनगिरि	२००	दोनों कुरुओंमें पाँच-पाँच द्रहोंके दोनों पार्श्वभागोंमें दस-दस।
		३११	

३. नदियोंका प्रमाण

(ति. प./४/२३८०-२३८५); (ह. पु./५/२७२-२७७); (त्रि. सा./७४७-७५०); (ज. प./३/१९७-१९८)।

नाम	गणना	प्रत्येक का परिवार	कुल प्रमाण	विवरण
गंगा-सिन्धु	२	१४०००	२८००२	भरतक्षेत्रमें
रोहित-रोहितास्या	२	२८०००	५६००२	हैमवत क्षेत्रमें
हरित-हरिकान्ता	२	५६०००	११२००२	हरि क्षेत्रमें
नारी नरकान्ता	२	५६०००	११२००२	रम्यक क्षेत्रमें
सुवर्णकूला व रूप्यकूला	२	२८०००	५६००२	हैरण्यवत क्षेत्रमें
रक्ता-रक्तोदा	२	१४०००	२८००२	ऐरावतक्षेत्रमें
छह क्षेत्रोंकी कुल नदियाँ			३९२०१२	
सीता-सीतोदा	२	८४०००	१६८००२	दोनों कुरुओंमें
क्षेत्र नदियाँ	६४	१४०००	८९६०६४	३२ विदेहोंमें
विभंगा	१२	×	१२	
विदेहकी कुल नदियाँ			१०६४०७८	ह. पु. व ज. प. की अपेक्षा
जम्बू द्वीपकी कुल नदी			१४५६०९०	
विभंगा	१२	२८०००	३३६०००	
जम्बूद्वीपकी कुल नदी			१७९२०९०	ति. प. की अपेक्षा

४. द्रह-कुण्ड आदि

नं.	नाम	गणना	विवरण व प्रमाण
१	द्रह	१६	कुलाचलोंपर ६ तथा दोनों कुरुमें १०–(ज. प./१/६७)।
२	कुण्ड	१७९२०९०	नदियोंके बराबर (ति. प./४/२३८६)।
३	वृक्ष	२	जम्बू व शाल्मली (ह. पु./५/८)
४	गुफाएँ	६८	३४ विजयार्धोंकी (ह. पु./५/१०)
५	वन	अनेक	मेरुके ४ वन भद्रशाल, नन्दन, सौमनस व पाण्डुक। पूर्वापर विदेहके छोरोंपर देवारण्यक व भूतारण्यक। सर्व पर्वतोंके शिखरोंपर, उनके मूलमें, नदियोंके दोनों पार्श्वभागोंमें इत्यादि।
६	कूट	५६८	(ति. प./४/२३९६)
७	चैत्यालय	अनेक	कुण्ड, वनसमूह, नदियाँ, देव नगरियाँ, पर्वत, तोरण द्वार, द्रह, दोनों वृक्ष, आर्य खण्डके तथा विद्याधरोंके नगर आदि सबपर चैत्यालय हैं –(दे० चैत्यालय)।

नं.	नाम	गणना	विवरण व प्रमाण
८	वेदियाँ	अनेक	उपरोक्त प्रकार जितने भी कुण्ड आदि तथा चैत्यालय आदि है उतनी ही उनकी वेदियाँ है। (ति प./४/२३८८-२३९०)।
		१८	जम्बूद्वीपके क्षेत्रोंकी (ज. प /१/६०-६७)
		३११	सर्व पर्वतोंकी
		१६	द्रहोंकी
		२४	पद्मादि द्रहोंकी
		९०	कुण्डोंकी
		१४	गंगादि महानदियोंकी
		५२००	कुण्डज महानदियोंकी
९	कमल	२२४१८५६	कुल द्रह = १६ और प्रत्येक द्रहमें कमल = १४०११६–(दे० आगे द्रहनिर्देश)

३. क्षेत्र निर्देश

१—जम्बूद्वीपके दक्षिणमें प्रथम **भरतक्षेत्र** जिसके उत्तरमें हिमवान् पर्वत और तीन दिशाओमें लवणसागर है। (रा. वा./३/१०/३/१७१/-१२)। इसके बीचोबीच पूर्वापर लम्बायमान एक **विजयार्ध पर्वत है**। (ति. प/४/१०७); (रा. वा /३/१०/४/१७१/१७); (ह. पु /५/२०), (ज. प /२/३२)। इसके **पूर्वमें गंगा और पश्चिममे सिन्धु नदी बहती है**। (दे० लोक/३/१/७)। ये दोनों नदियाँ हिमवान्के मूल भागमें स्थित गंगा व सिन्धु नामके दो कुण्डोंसे निकलकर पृथक्-पृथक् पूर्व व पश्चिम दिशामें, उत्तरसे दक्षिणकी ओर बहती हुई विजयार्ध दो गुफामेसे निकलकर दक्षिण क्षेत्रके अर्धभाग तक पहुँचकर और पश्चिमकी ओर मुड जाती है, और अपने-अपने समुद्रमें गिर जाती है—(दे० लोक/३/११)। इस प्रकार इन दो नदियो व विजयार्धसे विभक्त इस क्षेत्रके **छह खण्ड हो जाते हैं**। (ति. प /४/२६६); (स. सि /३/१०/२१३/६); (रा. वा./३/१०/३/१७१/१३)। विजयार्धकी दक्षिणके तीन खण्डोमेसे मध्यका खण्ड आर्य-खण्ड है और शेष पाँच खण्ड म्लेच्छ खण्ड है —(दे० आर्यखण्ड)। आर्य खण्डके मध्य १२×९ यो० विस्तृत विनीता या अयोध्या नामकी प्रधान नगरी है जो चक्रवर्तीकी **राजधानी** होती है। (रा. वा /३/१०/१/१७१/६)। विजयार्धके उत्तरवाले तीन खण्डोमें मध्यवाले म्लेच्छ खण्डके बीचोबीच **वृषभगिरि** नामका एक गोल पर्वत है जिसपर दिग्विजय कर चुकनेपर चक्रवर्ती अपना नाम अंकित करता है। (ति. प./४/२६८-२६९); (त्रि सा /७१०), (ज. प /२/१०७)। २ इसके पश्चात् हिमवान् पर्वतके उत्तरमे तथा महाहिमवान्के दक्षिणमे दूसरा **हैमवत क्षेत्र है** (रा वा /३/१०/५/१७२/१७), (ह पु./५/५७)। इसके बहुमध्य भागमें एक गोल शब्दवान् नामका **नाभिगिरि** पर्वत है (ति प /१७०४), (रा वा /३/१०/७/१७२/२१)। इस क्षेत्रके **पूर्वमें रोहित और पश्चिममें रोहितास्या नदियाँ** बहती है। (दे० लोक/३/१/७)। ये दोनो ही नदियाँ नाभिगिरिके उत्तर व दक्षिणमें उससे २ कोस परे रहकर ही उसकी प्रदक्षिणा देती हुई अपनी-अपनी दिशाओमें मुड जाती है, और बहती हुई अन्तमे अपनी-अपनी दिशावाले सागरमें गिर जाती है। —(दे० आगे लोक/३/११)। ३. इसके पश्चात् महाहिमवान्के उत्तर तथा निषध पर्वतके दक्षिणमे तीसरा **हरिक्षेत्र** है (रा. वा./३/१०/६/१७२/१९)। नीलके उत्तरमे और रुक्मि पर्वतके दक्षिणमे पाँचवाँ **रम्यकक्षेत्र** है। (रा. वा./३/१०/१५/१८१/१५) पुन. रुक्मिके उत्तर व शिखरी पर्वतके दक्षिणमें छठा **हैरण्यवत क्षेत्र** है। (रा. वा./३/१०/१८/१८१/२१) तहाँ विदेह क्षेत्रको छोडकर इन चारोंका कथन हैमवतके समान है। केवल नदियो व नाभिगिरि पर्वतके नाम भिन्न है—दे० लोक/३/१/७ व लोक/५/८। ४. निषध पर्वतके उत्तर तथा नीलपर्वतके दक्षिणमें **विदेह क्षेत्र स्थित है**। (ति. प./४/२४७४); (रा. वा./३/१०/१२/१७३/४)। इस क्षेत्रकी दिशाओका यह विभाग भरत क्षेत्रकी अपेक्षा है सूर्योदयकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि वहाँ इन दोनो दिशाओमें भी सूर्यका उदय व अस्त दिखाई देता है। (रा. वा /३/१०/१३/१७३/१०)। इसके बहुमध्यभागमें सुमेरु पर्वत है (दे० लोक/३/६)। [ये क्षेत्र दो भागोंमें विभक्त है—कुरुक्षेत्र व विदेह] मेरु पर्वतकी दक्षिण व निषधके उत्तरमें देवकुरु है (ति. प./४/२१३८-२१३९)। मेरुके उत्तर व नीलके दक्षिणमे उत्तरकुरु है (ति. प./४/२१९१-२१९२)। मेरुके पूर्व व पश्चिम भागमें पूर्व व अपर विदेह है, जिनमें पृथक् पृथक् १६,१६ क्षेत्र है, जिन्हे ३२ विदेह कहते हैं। (ति. प./४/२१९९)। (दोनो भागोंका इकट्ठा निर्देश—रा. वा./३/१०/१३/१७३/६)। [नोट—इन दोनो भागोंके विशेष कथनके लिए दे० आगे पृथक् शीर्षक (दे० लोक/3/१२–१४)]। ५. सबसे अन्तमें शिखरी पर्वतके उत्तरमें तीन तरफसे लवणसागरके साथ स्पर्शित सातवाँ **ऐरावतक्षेत्र** है। (रा. वा./३/१०/२१/१८१/२८)। इसका सम्पूर्ण कथन भरतक्षेत्रवत् है (ति. प /४/२३६५), (रा. वा./३/१०/२२/१८१/३०) केवल इसकी दोनो नदियोके नाम भिन्न है (दे० लोक/3/१/७) तथा ५/८)।

४. कुलाचल पर्वत निर्देश

१. भरत व हैमवत इन दोनों क्षेत्रोकी सीमापर पूर्व-पश्चिम लम्बायमान (दे० लोक/३/१/२) प्रथम **हिमवान् पर्वत** है—(रा. वा./३/११/२/१८२/६)। इसपर ११ कूट है—(ति प /४/१६३२), (रा.वा./३/११/२/१८२/१६); (ह. पु /५/५२), (त्रि. सा./७२१); (ज. प./३/३९)। पूर्व दिशाके कूटपर जिनायतन और शेष कूटोपर यथा योग्य नामधारी व्यन्तर देव व देवियोके भवन है (दे० लोक/५/४)। इस पर्वतके शीर्षपर बीचोबीच पद्म नामका ह्रद है (ति. प./४/१६५८), (दे० लोक/3/१/४)। २. तदनन्तर हैमवत् क्षेत्रके उत्तर व हरिक्षेत्रके दक्षिणमे दूसरा **महाहिमवान् पर्वत** है। (रा. वा./३/११/४/१८२/३१)। इसपर पूर्ववत् आठ कूट है (ति प./४/१७२४); (रा वा /3/११/४/१८३/४), (ह पु /५/७०); (त्रि. सा./७२४); (ज. प./3/३९)। इसके शीर्षपर पूर्ववत् महापद्म नामका द्रह है। (ति. प./४/१७२७), (दे० लोक/३/१/४)। ३. तदनन्तर हरिवर्षके उत्तर व विदेहके दक्षिणमे तीसरा **निषधपर्वत** है। (रा. वा./३/११/६/१८३/११)। इस पर्वतपर पूर्ववत ९ कूट है (ति प./४/१७५८); (रा. वा./३/११/६/१८३/१७), (ह पु /५/८७), (त्रि. सा./७२५); (ज. प. ३/३९)। इसके शीर्षपर पूर्ववत् तिगिंछ नामका द्रह है (ति प./४/१७६१), (दे० लोक/३/१/४)। ४. तदनन्तर विदेहके उत्तर तथा रम्यकक्षेत्रके दक्षिण दिशामें दोनो क्षेत्रोको विभक्त करनेवाला निषध-पर्वतके सदृश चौथा **नीलपर्वत** है। (ति. प /४/२३२७); (रा. वा./३/११/८/२३)। इसपर पूर्ववत् ९ कूट है। (ति. प /४/२३२८) (रा. वा /३/११/८/१८३/२४), (ह. पु /५/९९); (त्रि सा /७२६), (ज. प /३/३९)। इतनी विशेषता है कि इस पर स्थित द्रह का नाम केसरी है। (ति.प/४/२३३२), (दे लोक/३/१/४)। ५ तदनन्तर रम्यक व हैरण्यवत क्षेत्रो का विभाग करने वाला तथा महा हिमवान पर्वत के सदृश ५वाँ रुक्मि पर्वत है, जिस पर पूर्ववत आठ कूट है। (ति प./४/२३४०); (रा. वा /३/११/१०/१८३/३०); (ह. पु /५/१०२); (त्रि. सा /७२७)। इस पर्वत पर महापुण्डरीक द्रह है। (दे. लोक/३/१/४)। ति प की अपेक्षा इसके द्रह का नाम पुण्डरीक है। (ति. प./४/२३४४)। ६ अन्त में जाकर हैरण्यवत व ऐरावत क्षेत्रों की सन्धि पर हिमवान पर्वत के सदृश छठा शिखरी पर्वत है, जिस पर ११ कूट है। (ति प/४/२३५६); (रा. वा./३/११/१२/१८४/३); (ह. पु./५/१०५); (त्रि. सा/७२८),

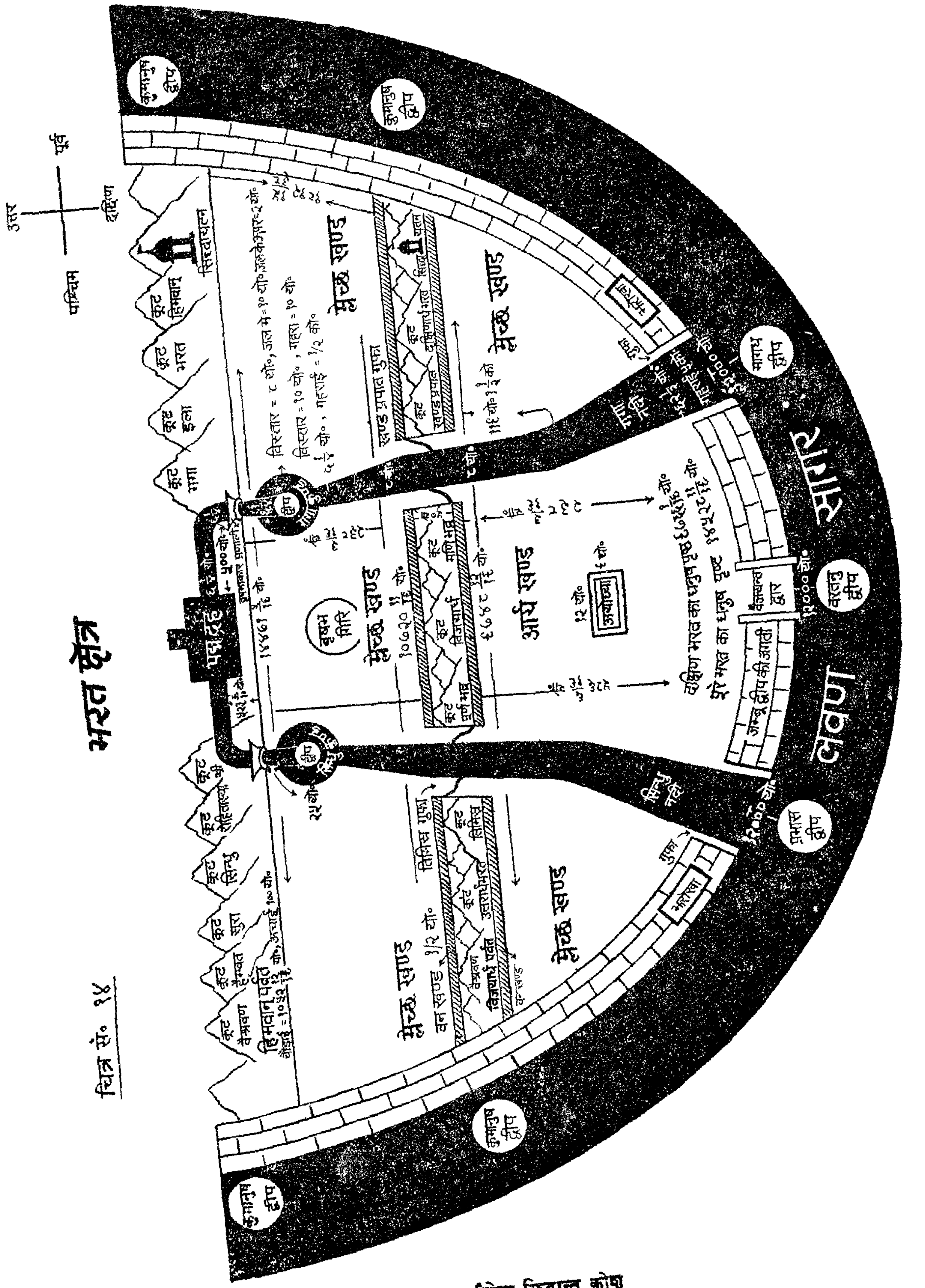

चित्र सं. १४
भरत क्षेत्र

(ज.प./३/३६)इस पर स्थित द्रह का नाम पुन्डरीक है (दे लोक/३/१/४)। ति.प. की अपेक्षा इसके द्रह का नाम महापुन्डरीक है। (ति प/-४/२३६०)।

५. विजयार्ध पर्वत निर्देश

१. भरतक्षेत्रके मध्यमें पूर्व-पश्चिम लम्बायमान विजयार्ध पर्वत है (दे०लोक/३/३/१)। भूमितलसे १० योजन ऊपर जाकर इसकी उत्तर व दक्षिण दिशामें विद्याधर नगरोंकी दो श्रेणियाँ है। तहाँ दक्षिण श्रेणीमे ५५ और उत्तर श्रेणीमें ६० नगर है। इन श्रेणियोसे भी १० योजन ऊपर जाकर उसी प्रकार दक्षिण व उत्तर दिशामें अभियोग देवोंकी श्रेणियाँ है। (दे० विद्याधर/४)। इसके ऊपर ६ कूट है। (ति प/४/१४६), (रा वा/३/१०/४/१७२/१०), (ह.पु/५/२६), (ज.प/२/४८)। पूर्व दिशाके कूटपर सिद्धायतन है और शेषपर यथायोग्य नामधारी व्यन्तर व भवनवासी देव रहते है।(दे० लोक/५/४)। इसके मूलभागमें पूर्व व पश्चिम दिशाओमें तमिस्र व खण्डप्रपात नामकी दो गुफाएँ है, जिनमें क्रमसे गगा व सिन्धु नदी प्रवेश करती है। (ति प/४/१७५), (रा. वा/३/१०/४/१७/१७१/२७); (ज. प/२/८९)। रा वा व, त्रि सा के मतसे पूर्व दिशामें गगाप्रवेशके लिए खण्डप्रपात और पश्चिम दिशामें सिन्धु नदीके प्रवेशके लिए तमिस्र गुफा है (दे० लोक/३/१०)। इन गुफाओंके भीतर बहु मध्यभागमें दोनो तटोंसे उन्मग्ना व निमग्ना नामकी दो नदियाँ निकलती है जो गंगा और सिन्धुमें मिल जाती है। (ति. प./४/२३७), (रा. वा/३/१०/४/-१७१/३१); (त्रि. सा./५९३); (ज. प/२/६५-९८), २. इसी प्रकार ऐरावत क्षेत्रके मध्यमें भी एक विजयार्ध है, जिसका सम्पूर्ण कथन भरत विजयार्धवत् है (दे० लोक/३/३)। कूटों व तन्निवासी देवोंके नाम भिन्न है। (दे० लोक/५)। ३. विदेहके ३२ क्षेत्रोंमेंसे प्रत्येकके मध्य पूर्वापर लम्बायमान विजयार्ध पर्वत है। जिनका सम्पूर्ण वर्णन भरत विजयार्धवत् है। विशेषता यह कि यहाँ उत्तर व दक्षिण दोनों श्रेणियोंमें ५५, ५५ नगर है। (ति. प./४/२२५७, २२६०); (रा. वा/३/१०/१३/१७६/२०), (ह. पु/५/२५५-२५६); (त्रि. सा./६११-६९५)। इनके ऊपर भी ६, ६ कूट हैं (त्रि. सा/६९२)। परन्तु उनके व उन पर रहने वाले देवोके नाम भिन्न है। (दे० लोक/५)।

विजयार्ध पर्वत

चित्र सं०-१५

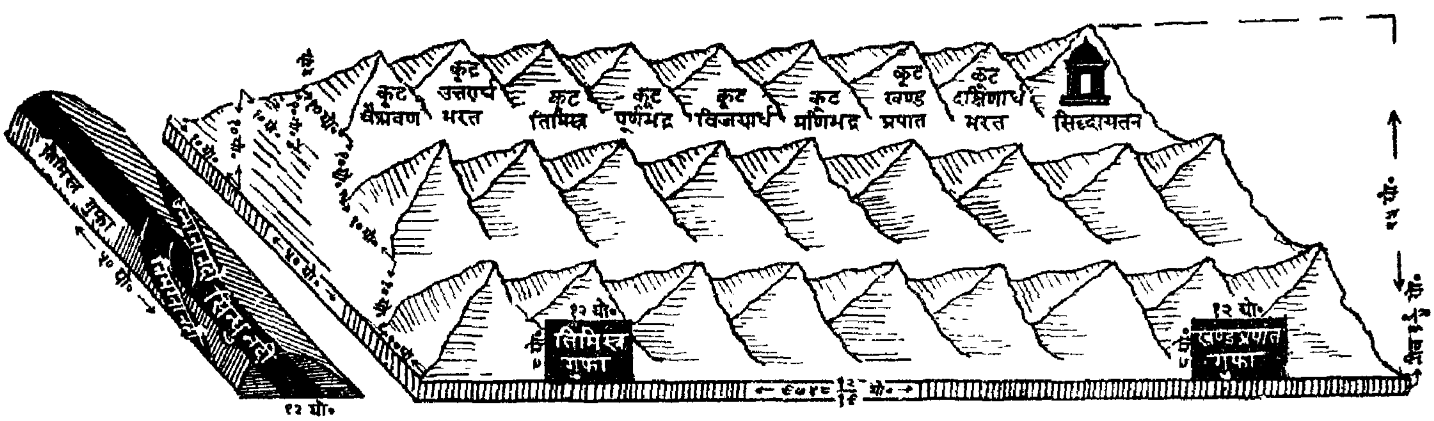

६. सुमेरु पर्वत निर्देश

१. सामान्य निर्देश

विदेहक्षेत्रके बहु मध्यभागमें सुमेरु पर्वत है। (ति. प./४/१७८०); (रा. वा./३/१०/१३/१७३/१६); (ज. प./४/२१)। यह पर्वत तीर्थंकरोंके जन्माभिषेकका आसनरूप माना जाता है (ति. प./४/१७८०), (ज. प./४/२१), क्योंकि इसके शिखरपर पाण्डुकवनमें स्थित पाण्डुक आदि चार शिलाओंपर भरत, ऐरावत तथा पूर्व व पश्चिम विदेहोंके सर्व तीर्थंकरोंका देव लोग जन्माभिषेक करते है (दे०लोक/३/३)। यह तीनो लोकोका मानदण्ड है, तथा इसके मेरु, सुदर्शन, मन्दर आदि अनेकों नाम है (दे० सुमेरु/२)।

२. मेरुका आकार

यह पर्वत गोल आकार वाला है। (ति. प./४/१७८२)। पृथिवीतलपर १००,०० योजन विस्तार तथा ९९००० योजन उत्सेध वाला है। क्रमसे हानि रूप होता हुआ इसका विस्तार शिखरपर जाकर १००० योजन रह जाता है। (दे० लोक/६/४)। इसकी हानिका क्रम इस प्रकार है—क्रमसे हानि रूप होता हुआ पृथिवीतलसे ५०० योजन ऊपर जानेपर नन्दनवनके स्थानपर यह चारों ओरसे युगपत् ५०० योजन संकुचित होता है। तत्पश्चात् ११००० योजन समान विस्तारसे जाता है। पुन ५१५०० योजन क्रमिक हानिरूपसे जानेपर, सौमनस वनके स्थानपर चारों ओरसे ५०० यो. संकुचित होता है। यहाँसे ११००० योजन तक पुन समान विस्तारसे जाता है और उसके ऊपर २५००० योजन क्रमिक हानिरूपसे जानेपर पाण्डुकवनके स्थानपर चारों ओरसे युगपत् ४९४ योजन संकुचित होता है। (ति./४/१७८८-१७९१); (ह. पु/५/२८७-३०१)। इसका बाह्य विस्तार भद्रशाल आदि वनोंके स्थानपर क्रमसे १००,००, ९९५४$\frac{6}{11}$, ४२७२$\frac{8}{11}$ तथा १००० योजन प्रमाण है (ति. प./४/१७८३+१९९०+१९३६+१८१०); (ह. पु./५/२८७-३०१) (और भी दे० लोक/६/६ में इन वनोंका विस्तार)। इस पर्वतके शीश पर पाण्डुक वनके बीचोंबीच ४० यो. ऊँची तथा १२ यो मूल विस्तार युक्त चूलिका है। (ति. प./४/१८१४); (रा. वा./३/१०/१३/१८०/१४), (ह. पु./५/३०२); (त्रि सा./६३७); (ज.प/४/१३२), (विशेष दे० लोक/६/४.२ में चूलिका विस्तार)।

३. मेरुकी परिधियाँ

नीचेसे ऊपरकी ओर इस पर्वतकी परिधि सात मुख्य भागोमें विभाजित है—हरितालमयी, वैडूर्यमयी, सर्वरत्नमयी, वज्रमयी, मद्यमयी और पद्मरागमयी अर्थात लोहिताक्षमयी। इन छहोमे से प्रत्येक १६५०० यो० ऊँची है। भूमितल अवगाही सप्त परिधि (पृथिवी उपल बालुका आदि रूप होनेके कारण) नाना प्रकार है। (ति प./४/१८०२-१८०४), (ह पु/५/३०४)। दूसरी मान्यताके अनुसार ये सातो परिधियाँ क्रमसे लोहिताक्ष, पद्म, तपनीय, वैडूर्य, वज्र, हरिताल और जाम्बूनद—सुवर्णमयी है। प्रत्येक परिधिकी ऊँचाई १६५०० योजन है। पृथिवीतलके नीचे १००० यो. पृथिवी, उपल, बालुका और शर्करा ऐसे चार भाग रूप है। तथा ऊपर चूलिकाके पास जाकर तीन काण्डको रूप है। प्रथम काण्डक सर्वरत्नमयी, द्वितीय जाम्बूनदमयी और तीसरा काण्डक चूलिकाका है जो वैडूर्यमयी है।

चित्र-१६

सुमेरु पर्वत

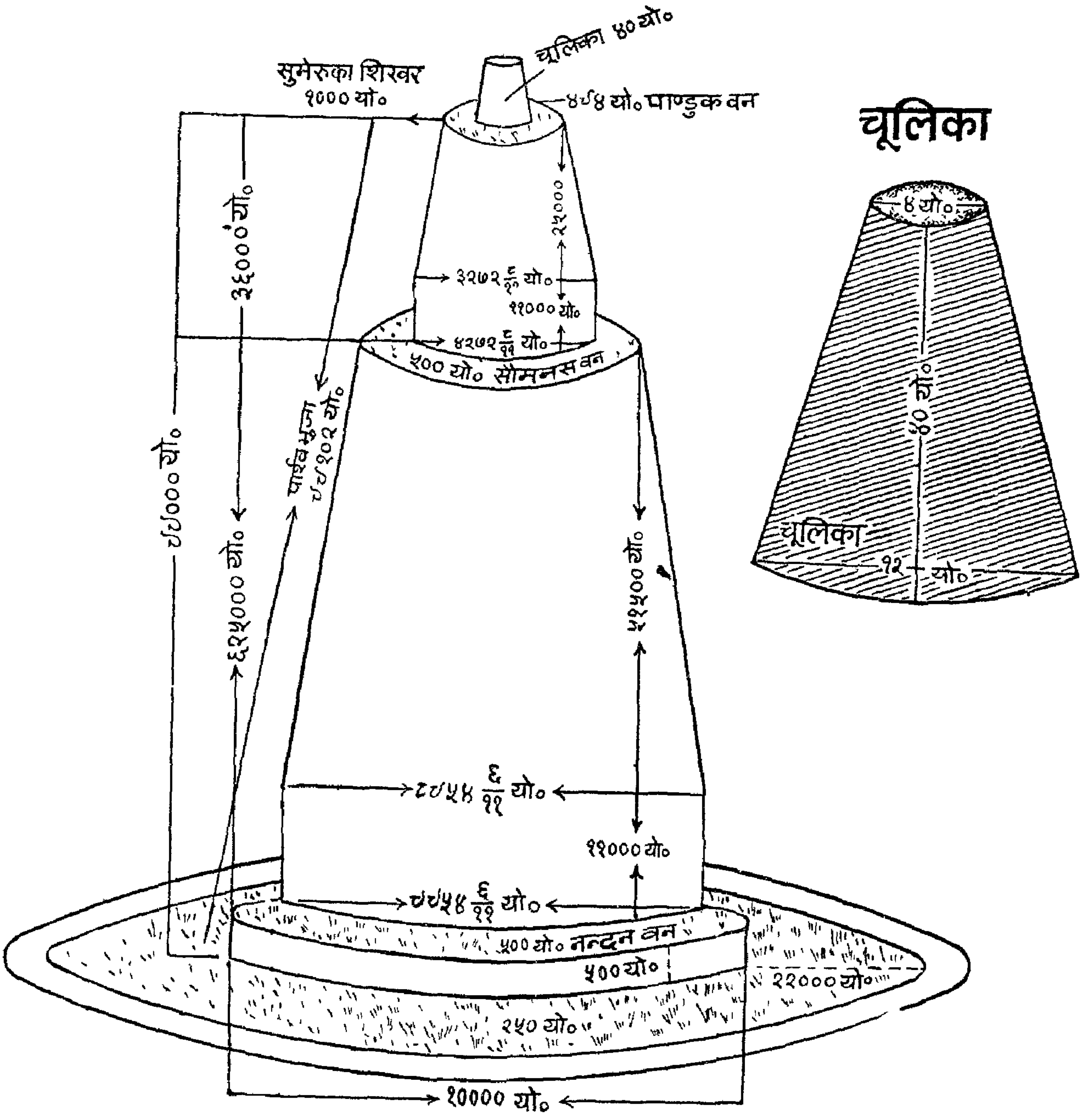

४. वनखण्ड निर्देश

१ सुमेरु पर्वतके तलभागमें **भद्रशाल नामका प्रथम** वन है जो पाँच भागोमे विभक्त है—भद्रशाल, मानुषोत्तर, देवरमण, नागरमण और भूतरमण। (ति प /४/१८०५), (ह पु./५/३०७) इस वनकी चारो दिशाओमें चार जिनभवन है। (ति प./४/२००३), (त्रि सा./६११), (ज प./४/४६) इनमेंसे एक मेरुसे पूर्व तथा सीता नदीके दक्षिणमे है। दूसरा मेरुकी दक्षिण व सीतोदाके पूर्वमें है। तीसरा मेरुसे पश्चिम तथा सीतोदाके उत्तरमे है और चौथा मेरुके उत्तर व सीताके पश्चिममे है। (रा. वा./३/१०/१७८/१८) इन चैत्यालयोका विस्तार पाण्डुक वनके चैत्यालयोसे चौगुना है (ति प /४/२००४)। इस वनमे मेरुकी चारो तरफ सीता व सीतोदा नदीके दोनो तटोपर एक-एक करके आठ दिग्गजेन्द्र पर्वत है। (दे० लोक/३/१२) २. भद्रशाल वनसे ५०० योजन ऊपर जाकर मेरु पर्वतकी कटनीपर **द्वितीय वन** स्थित है। (**दे० पिछला उपशीर्षक १**)। इसके दो विभाग है नन्दन व उपनन्दन। (ति. प /४/-१८०६), (ह पु /५/३०८) इसकी पूर्वादि चारो दिशाओमे पर्वतके पास क्रमसे मान, धारणा, गन्धर्व व चित्र नामके चार भवन है जिनमे क्रमसे सौधर्म इन्द्रके चार लोकपाल सोम, यम, वरुण व **कुबेर** क्रीडा करते है।) (ति. प./४/१९९४-१९९६); (ह पु /३१५-३१७), (त्रि. सा./६१९, ६२१), (ज. प./४/८३-८४)। कहीं-कहीं इन भवनोको गुफाओके रूपमे बताया जाता है। (रा वा./३/१०/-१३/१७९/१४)। यहाँ भी मेरुके पास चारो दिशाओमे चार जिनभवन है। (ति प /४/१९९८), (रा. वा /३/१०/१३/१७९/३२), (ह पु /५/३५८); (त्रि सा./६११)। प्रत्येक जिनभवनके आगे दो-दो कूट है—जिनपर दिक्कुमारी देवियाँ रहती है। ति. प की अपेक्षा ये आठ कूट इस वनमे न होकर सौमनस वनमेही है। (दे० लोक/५/५)। चारो विदिशाओमे सौमनस वनकी भाँति चार-चार करके कुल १६ पुष्करिणियाँ है। (ति. प./४/१९९८), (रा. वा /-३/१०/१३/१७९/२५), (ह पु /५/३३४-३३५ + ३४३-३४६), (त्रि. सा /६२८), (ज प /४/११०-११३)। इस वनकी ईशान दिशामे एक बलभद्र नामका कूट है जिसका कथन सौमनस वनके बलभद्र कूटके समान है। इसपर बलभद्र देव रहता है। (ति. प /४/१९९७), (रा वा./३/१०/१३/१७९/१९), (ह पु /५/३२८), (त्रि सा /-६२४), (ज प /४/९९)। ३. नन्दन वनसे ६२५०० योजन ऊपर जाकर सुमेरु पर्वतपर तीसरा **सौमनस वन** स्थित है। (दे० लोक/-३/६.१)। इसके दो विभाग है—सौमनस व उपसौमनस (ति प./-४/१८०६); (ह पु /५/३०८)। इसकी पूर्वादि चारो दिशाओमें मेरुके निकट वज्र, वज्रमय, सुवर्ण व सुवर्णप्रभ नामके चार पुर है, (ति प /४/१९४३), (ह पु./५/३१९), (त्रि. सा./६२०), (ज. प /४/९१) इनमे भी नन्दन वनके भवनोवत् सोम आदि लोकपाल क्रीडा करते है। (त्रि सा /६२१)। चारो विदिशाओंमे चार-चार पुष्करिणी है। (ति प./४/१९४६, १९६२-१९६६), (रा. वा /३/१०/१३/१८०/७)। पूर्वादि चारो दिशाओमे चार जिनभवन है (ति. प /४/१९६८), (ह. पु /५/३५७); (त्रि. सा./-६११); (ज. प./४/६४)। प्रत्येक जिन मन्दिर सम्बन्धी बाह्य कोटोंके बाहर उसके दोनों कोनोंपर एक-एक करके कुल आठ कूट है। जिनपर दिक्कुमारी देवियाँ रहती है। (दे० लोक/५/५)। इसकी ईशान दिशामे बलभद्र नामका कूट है जो ५०० योजन तो वनके भीतर है और ५०० योजन उसके बाहर आकाशमें निकला हुआ है। ति. प./४/१९८१), (ज. प /४/१०१), इसपर बलभद्र देव रहता है। (ति. प /४/१९८४) मतान्तरकी अपेक्षा इस वनमें आठ कूट व बलभद्र कूट नहीं है। (रा. वा /३/१०/१३/१८०/६)। (दे. सामनेवाला चित्र)। ४. सौमनस वनसे ३६००० योजन ऊपर जाकर मेरुके शीर्षपर चौथा **पाण्डुक वन** है। (दे० लोक/३/६.१) जो चूलिकाको वेष्टित करके शीर्षपर स्थित है (ति. प /४/१८१४)। इसके दो विभाग हैं—पाण्डुक व उपपाण्डुक। (ति प./४/१८०६), (ह पु /५/३०९)। इसके चारों दिशाओमे लोहित अंजन हरिद्र और पाण्डुक नामके चार भवन हैं जिनमें सोम आदि लोकपाल क्रीडा करते है। (ति. प./४/१८३६, १८५२); (ह पु./५/३२२), (त्रि. सा./६२०), (ज. प /४/९३), चारों विदिशाओमे चार-चार करके १६ पुष्करिणियाँ है। (रा वा /३/१०/१६/१८०/२६)। वनके मध्य चूलिकाकी चारो दिशाओमे चार जिनभवन है। (ति. प /४/१८५५, १९३५); (रा. वा /३/१०/१३/१८०/२८), (ह. पु./५/३५४), (त्रि सा /६११); (ज प /४/६४)। वनकी ईशान आदि दिशाओमें अर्ध चन्द्राकार चार शिलाएँ है—पाण्डुक शिला, पाण्डुकंबला शिला, रक्तकंबला शिला, और रक्तशिला। रा वा. के अनुसार ये चारो पूर्वादि दिशाओमे स्थित है। (ति. प./४/१८१८, १८३०-१८३४), (रा वा /३/१०/१३/१८०/१५), (ह पु /५/३४७), (त्रि सा /६३३), (ज प /४/१३८-१४१)। इन शिलाओंपर क्रमसे भरत, अपरविदेह, ऐरावत और विदेहके तीर्थंकरोका जन्माभिषेक होता है। (ति. प./४/१८२७, १८३१-१८३५); (रा वा /३/१०/१३/१८०/२२); (ह. पु./५/३५३), (त्रि. सा./६३४); (ज. प./४/१४८-१५०)।

चित्र सं०-१६ पाण्डुक वन

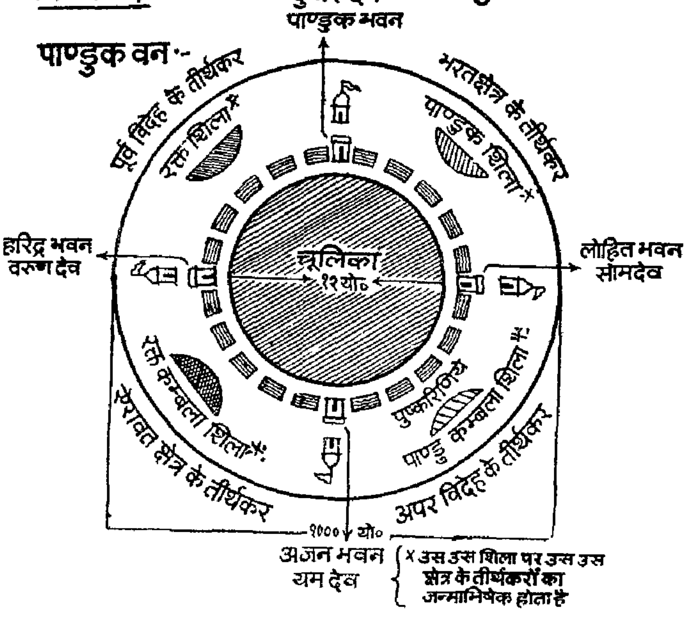

नन्दन व सौमनस वन - (दृष्टि सं० १)

चित्र सं० - १७

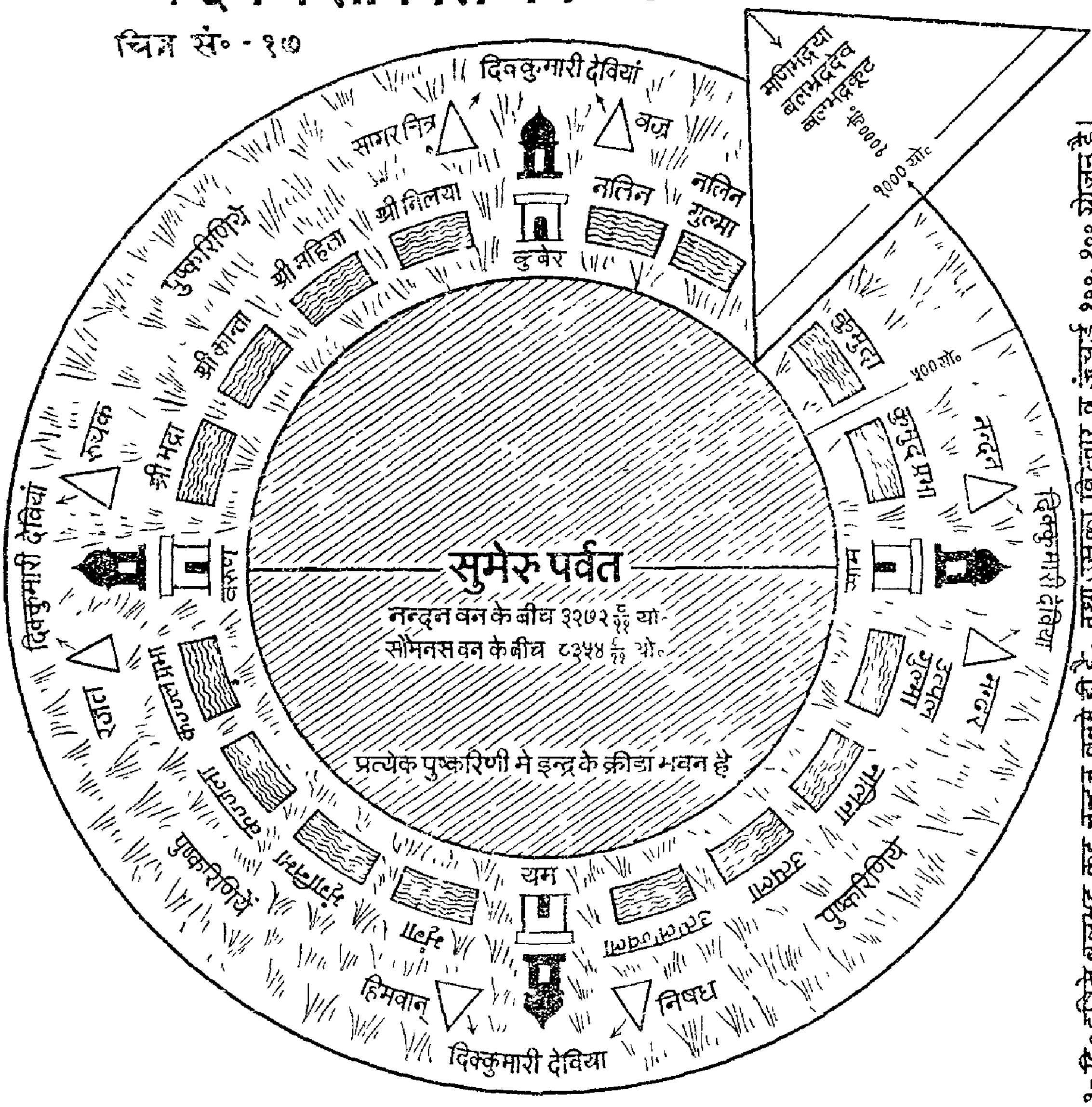

१- द्वि० दृष्टिसे बलभद्र कूट नन्दन वनमें ही है, तथा उसका विस्तार व ऊँचाई १००, १०० योजन है।
२- द्वि० दृष्टिसे कुबेर आदि लोकपालोंके ४ भवनोंको ४ गुफाएँ कहा गया है।
३- प्रथम दृष्टिसे चैत्यालयोंके कोनोंवाले ८ कूट सौमस वनमें हैं और द्वि० दृष्टिसे नन्दन वनमें।
४- पूर्व दिशाको आदि लेकर सोम आदि लोकपालोंके ४ कूटोंके नाम प्रथम दृष्टिसे क्रमशः मान, धारण, गन्धर्व व चित्र हैं, तथा द्वि० दृष्टिसे वज्र, वज्रमय, स्वर्ण व स्वर्णप्रभ हैं।

चित्र सं०-१८ **इस वन की पुष्करिणी में इन्द्र सभा की रचना**
(ह-पु | ५|३३८-३४०)

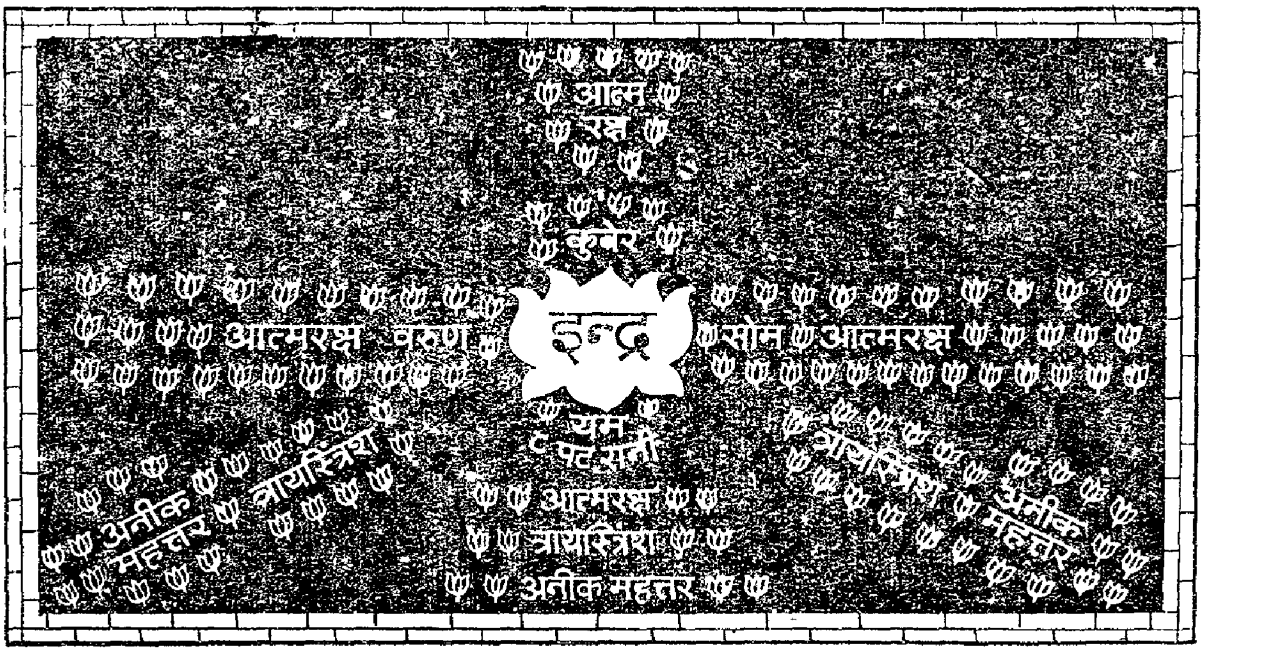

७. पाण्डुकशिला निर्देश

पाण्डुक शिला १०० योजन लम्बी ५० योजन चौडी है, मध्यमे ८ योजन ऊँची है और दोनों ओर क्रमश हीन होती गयी है। इस प्रकार यह अर्धचन्द्राकार है। इसके बहुमध्य देशमें तीन पीठ युक्त एक सिंहासन है और सिंहासनके दोनो पार्श्व भागोमे तीन पीठ युक्त ही एक भद्रासन है। भगवान्‌के जन्माभिषेकके अवसरपर सौधर्म व ऐशानेन्द्र दोनों इन्द्र भद्रासनोंपर स्थित होते हैं और भगवान्‌को मध्य सिंहासनपर विराजमान करते हैं। (ति. प./४/१८१६–१८२६), (रा. वा./३/१०/१३/१८०/२०); (ह. पु./५/३४६-३५२); (त्रि. सा./६३५–६३६), (ज. प./४/१४२–१४७)।

चित्र-२०

पाण्डुक शिला

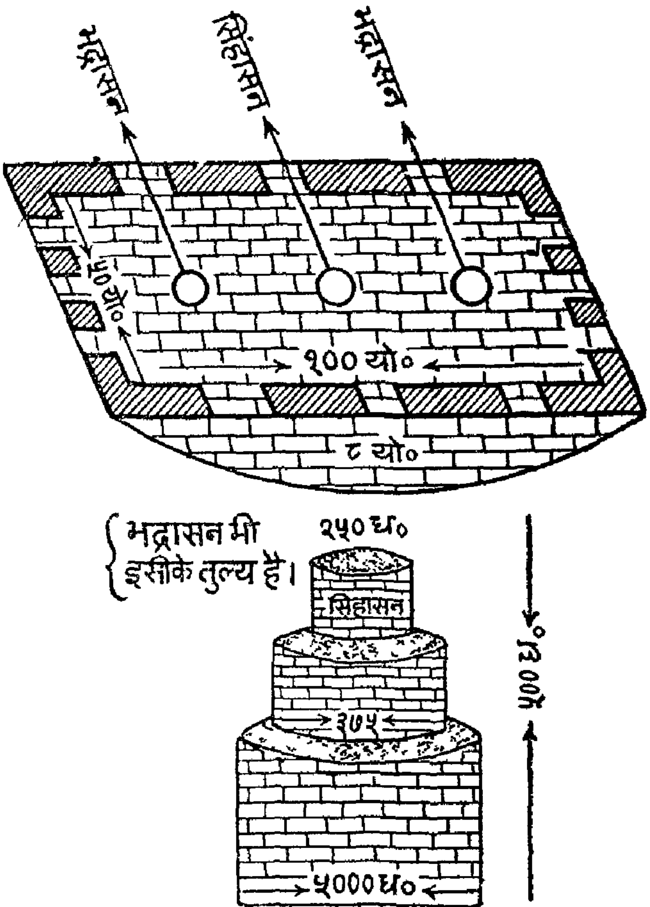

८. अन्य पर्वतोंका निर्देश

१ भरत, ऐरावत व विदेह इन तीनको छोडकर शेष हैमवत आदि चार क्षेत्रोके बहुमध्य भागमें एक-एक नाभिगिरि है। (ह. पु./५/१६१), (त्रि सा./७१८–७१६), (ज. प/३/२०६); (वि. दे० लोक/५)। ये चारो पर्वत ऊपर-नीचे समान गोल आकार वाले है। (ति प./४/१७०४), (त्रि. सा./७१८), (ज. प/३/२१०)।

चित्र सं० - २१

नाभि गिरि

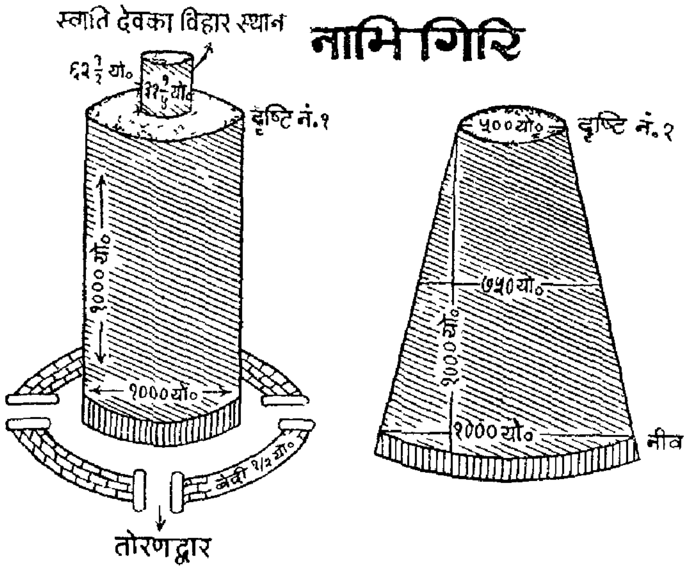

२. मेरु पर्वतकी विदिशाओंमें हाथीके दाँतके आकारवाले चार गजदन्त पर्वत हैं। जो एक ओर तो निषध व नील कुलाचलोंको और दूसरी तरफ मेरुको स्पर्श करते है। तहाँ भी मेरु पर्वतके मध्यप्रदेशमें केवल एक-एक प्रदेश उससे संलग्न है। (ति. प./-४/२०१२–२०१४)। ति. प. के अनुसार इन पर्वतोके परभाग भद्रशाल वनकी वेदीको स्पर्श करते है, क्योकि वहाँ उनके मध्यका अन्तराल ५३००० यो० बताया गया है। तथा सग्गायणीके अनुसार उन वेदियोसे ५०० यो० हटकर स्थित है, क्योंकि वहाँ उनके मध्यका अन्तराल ५२००० यो० बताया है। (दे० लोक/६/३ में देवकुरु व उत्तरकुरुका विस्तार)। अपनी-अपनी मान्यताके अनुसार उन वायव्य आदि दिशाओंमें जो-जो भी नामवाले पर्वत है, उनपर क्रमसे ७, ६, ७, ६ कूट है (ति. प./४/२०३१, २०४६, २०५८, २०६०); (ह. पु /५/२१६),(विशेष दे० लोक/५/३)। मतान्तरसे इन पर क्रमसे ७, १०, ७, ६ कूट है। (रा. वा /३/१०/१३/१७३/२३,३०,१४,१८)।

चित्र सं०-२२ गजदन्त

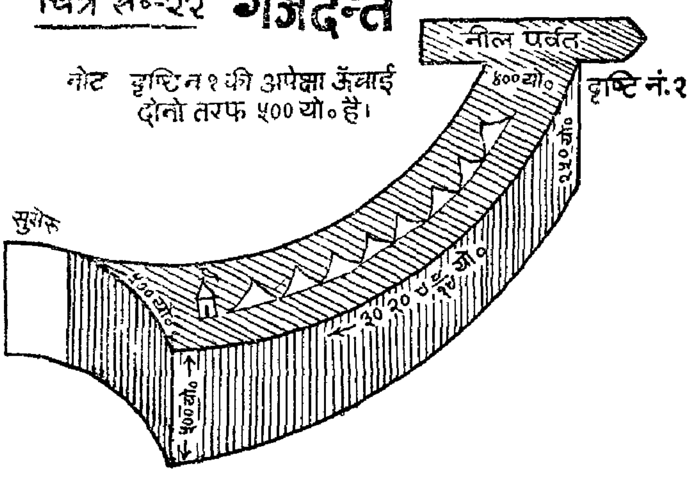

ईशान व नैऋत्य दिशावाले विद्युत्प्रभ व माल्यवान गजदन्तोके मूलमे सीता व सीतोदा नदियोके निकलनेके लिए एक-एक गुफा होती है। (ति. प /४/२०५५,२०६३)।

३ देवकुरु व उत्तरकुरुमें सीतोदा व सीता नदीके दोनो तटोपर एक **यमक पर्वत** है (दे० आगे लोक/३/१२)। ये गोल आकार वाले है। (दे० लोक/६/४ में इनका विस्तार)। इनपर इन-इनके नामवाले व्यन्तरदेव सपरिवार रहते है। (ति. प /४/२०८४), (रा. वा./३/१०/१३/१७४/२८)। उनके प्रासादों का सर्वकथन पद्मद्रहके कमलोंवत् है। (ज. प /६/९२–१०२)। ४ उन्ही देवकुरु व उत्तरकुरुमें स्थित द्रहोके दोनो पार्श्व-भागोमें **काचन शैल** स्थित है। (दे० आगे लोक/३/१२)। ये पर्वत गोल आकार वाले है। (दे० लोक/६/४ मे इनका विस्तार)। इनके ऊपर काचन नामक व्यन्तरदेव रहते है। (ति. प./४/-

चित्र सं०-२३

यमक व कांचन गिरि

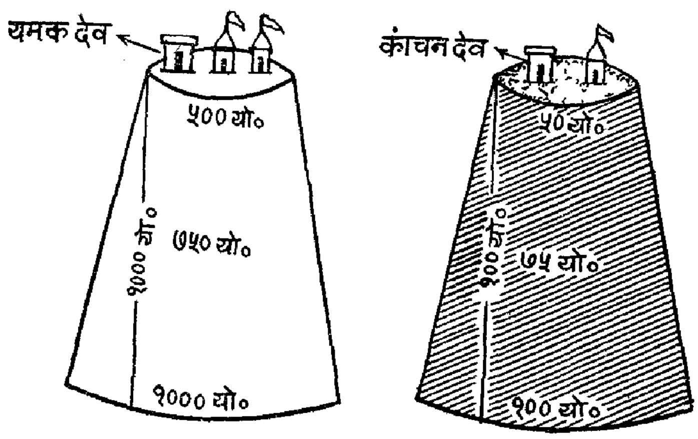

२०९९), (ह पु /५/२०४), (त्रि. सा./६५९)। ५. देवकुरु व उत्तरकुरुके भीतर व बाहर भद्रशाल वनमें सीतोदा व सीता नदीके दोनो तटोपर आठ **दिग्गजेन्द्र पर्वत** है (दे० लोक/३/१२)। ये गोल आकार वाले है (दे० लोक/६/४ में इनका विस्तार)। इन-पर यम व वैश्रवण नामक वाहन देवोंके भवन है। (ति प /४/२१०६, २१०८, २०३१)। उनके नाम पर्वतोंवाले ही है (ह पु/५/२०९), (ज, प /२/८१)। ६ पूर्व व पश्चिम विदेहमें सीता व सीतोदा नदोके दोनो तरफ उत्तर-दक्षिण लम्बायमान, ४, ४ करके कुल १६ **बक्षार पर्वत** है। एक ओर ये निषध व नील पर्वतोको स्पर्श करते है और दूसरी ओर सीता व सीतोदा नदियोको। (ति प./४/२२००, २२२४, २२३०), (ह. पु /५/२२८-२२२) (और भी दे० आगे लोक/३/१४)। प्रत्येक वक्षार पर चार चार कूट है; नदीकी तरफ सिद्धायतन है और शेष कूटोंपर व्यन्तर देव रहते है। (ति. प./४/२३०९–२३११); (रा. वा./३/१०/१३/१७६/४), (ह. पु./५/२३४–२३५)। इन कूटोका सर्व कथन हिमवान पर्वतके कूटोंवत् है। (रा. वा /३/१०/१३/१७६/७)। ७, भरत क्षेत्रके पाँच म्लेच्छ खण्डोमें से उत्तर वाले तीनके मध्यवर्ती खण्डमें **बीचों-बीच एक वृषभ गिरि** है, जिसपर दिग्विजयके पश्चात् **चक्रवर्ती** अपना नाम अंकित करता है (दे० लोक/३/३)। यह गोल आकार वाला है। (दे० लोक/६/४ में इसका विस्तार) इसी प्रकार विदेहके ३२ क्षेत्रोमें-से प्रत्येक क्षेत्रमें भी जानना (दे० लोक/३/१४)।

९. द्रह निर्देश

१. **हिमवान पर्वतके शीषपर बीचोबीच पद्म नामका द्रह है।** (दे० लोक/३/४)। इसके तटपर चारो कोनोंपर तथा उत्तर दिशा में ५ कूट है और जलमें आठो दिशाओंमे आठ कूट है। (दे० लोक/५/३) । ह्रदके मध्यमे एक बडा कमल है, जिसके ११००० पत्ते है। (ति. प./१६६७, १६७०), (त्रि सा./५६९); (ज. प./३/७५); इस कमलपर 'श्री' देवी रहती है (ति. प./४/१६७२); (दे० लोक/३/१-६)। इस प्रधान कमलकी दिशा-विदिशाओमें उसके परि-वारके अन्य भी अनेको कमल है। **कुल कमल १४०११६ है।** तहाँ वायव्य, उत्तर व ईशान दिशाओमे कुल ४००० कमल उसके सामा-निक देवोके है। पूर्वादि चार दिशाओमें से प्रत्येकमे ४००० (कुल १६०००) कमल आत्मरक्षकोके है। आग्नेय दिशामें ३२००० कमल आभ्यन्तर पारिषदोके, दक्षिण दिशामें ४०,००० कमल मध्यम पारि-षदोके, नैऋत्य दिशामें ४८००० कमल बाह्य पारिषदोके है। पश्चिम-में ७ कमल सप्त अनीक महत्तरोके है। तथा दिशा व विदिशाके मध्य आठ अन्तर दिशाओमे १०८ कमल त्रायस्त्रिशोंके है। (ति. प./४/१६७५–१६८९), (रा वा /३/१७/–/१८५/११); (त्रि. सा./–५७२–५७६). (ज. प./३/९१–१२३)। इसके पूर्व पश्चिम व उत्तर द्वारोसे क्रमसे गंगा, सिन्धु व रोहितास्या नदी निकलती है। (दे० आगे शीर्षक ११)। (दे० चित्र सं. २४, पृ. ४७०)। २. महाहिमवान् आदि शेष **पाँच कुलाचलों पर** स्थित महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक नामके ये पाँच द्रह है। (दे० लोक/३/४), इन ह्रदोका सर्व कथन कूट कमल आदिका उपरोक्त पद्मह्रदवत् ही जानना। विशेषता यह कि तन्नि-वासिनी देवियोकेनाम क्रमसे ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी है। (दे० लोक/३/१६)। व कमलोकी संख्या तिगिंछ तक उत्तरोत्तर दूनी है। केसरीकी तिगिंछवत्, महापुण्डरीककी महापद्मवत् और पुण्डरीक-की पद्मवत् है।(ति. प /४/१७२८–१७२९, १७६१– १७६२; २३३२-२३३३, २३४५–२३६१)। अन्तिम पुण्डरीक द्रहसे पद्मद्रहवत् रक्ता, रक्तोदा व सुवर्णकूला ये तीन नदियाँ निकलती है और शेष द्रहोसे दो-दो नदियाँ केवल उत्तर व दक्षिण द्वारोसे निकलती है। (दे० लोक/–३/१ ७ व ११)। [ति. प. मे महापुण्डरीकके स्थानपर रुक्मि पर्वतपर पुण्डरीक और पुण्डरीकके स्थानपर शिखरी पर्वतपर महापुण्डरीक द्रह कहा है—(दे० लोक/३/४)। ३. **देवकुरु व उत्तरकुरुमें दस दह हैं।** अथवा दूसरी मान्यतासे २० द्रह है। (दे० आगे लोक/३/१२) इनमें देवियोके निवासभूत कमलो आदिका सम्पूर्ण कथन पद्मद्रह-वत् जानना (ति. प./४/२०९३, २१२६), (ह. पु./५/१९८–१९९); (त्रि. सा./६५८), (ज. प /६/१२४–१२९)। ये द्रह नदोके प्रवेश व निकासके द्वारोसे संयुक्त है। (त्रि. सा./६५८)। ४ **सुमेरु पर्वतके नन्दन, सौमनस व पाण्डुक वनमें १६, १६ पुष्करिणी हैं,** जिनमें सपरिवार सौधर्म व ऐशानेन्द्र क्रीडा करते है। तहाँ मध्यमे इन्द्रका आसन है। उसकी चारो दिशाओमें चार आसन लोकपालोके है, दक्षिणमें एक आसन प्रतीन्द्रका, अग्रभागमें आठ आसन अग्रमहि-षियोके, वायव्य और ईशान दिशामे ८४००,००० आसन सामानिक देवोके, आग्नेय दिशामे १२००,००० आसन अभ्यन्तर पारिषदोसे, दक्षिणमें १४००,००० आसन मध्यम पारिषदोके, नैऋत्य दिशामें १६००,००० आसन बाह्य पारिषदोके, तथा उसी दिशामे ३३ आसन त्रायस्त्रिशोंके, पश्चिममें छह आसन महत्तरोके और एक आसन महत्तरिकाका है। मूल मध्य सिहासनके चारों दिशाओमें ८४००० आसन अंगरक्षकोके है। (इस प्रकार कुल आसन १२६८४०५४ होते है)। (ति. प./४/१९४९–१९६०), (ह. पु./५/३३६–३४२)।

चित्र सं० - २४

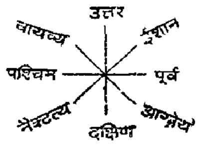

पद्म द्रह

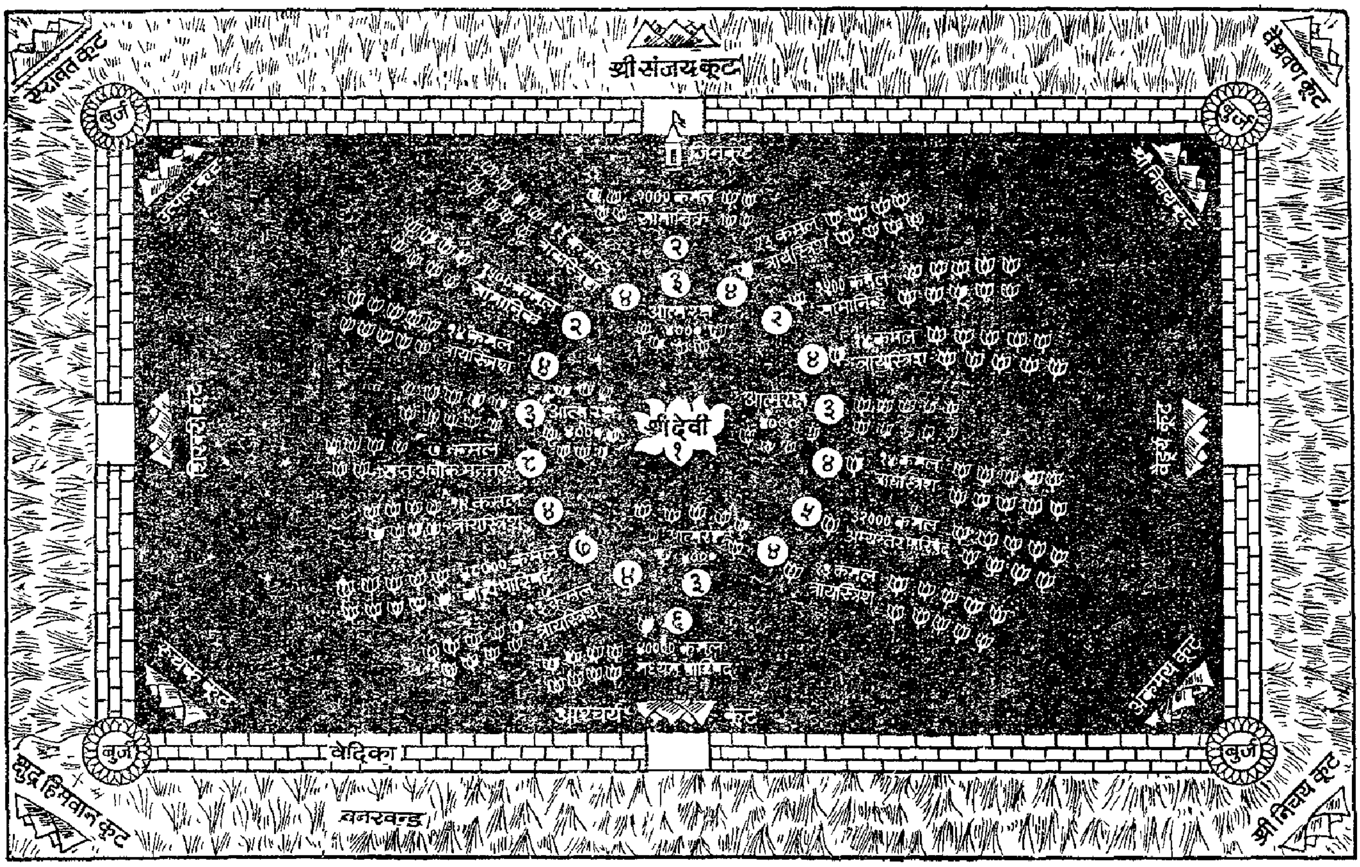

चित्र सं० - २५

पद्म द्रहका मध्यवर्ती कमल

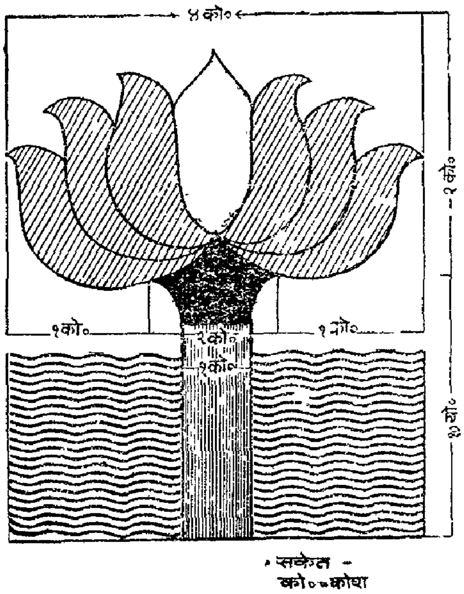

१०. कुण्ड निर्देश

१. हिमवान् पर्वतके मूलभागसे २५ योजन हटकर गंगा कुंड स्थित है। उसके बहुमध्य भागमें एक द्वीप है, जिसके मध्यमें एक शैल है। शैलपर गगा देवीका प्रासाद है। इसीका नाम गगाकूट है। उस कूटके ऊपर एक जिनप्रतिमा है, जिसके शीशपर गंगाकी धारा गिरती है। (ति. प./४/२१६–२३०), (रा वा /३/२२/१/१८७/२६ व १८८/१); (ह. पु./५/१४२); (त्रि. सा./५८६–५८७); (ज. प./-३/३४–३७ व १५४–१६२)। २. उसी प्रकार सिन्धु आदि शेष नदियों के पतन स्थानोंपर भी अपने-अपने क्षेत्रोंमें अपने-अपने पर्वतोके नीचे सिन्धु आदि कुण्ड जानने। इनका सम्पूर्ण कथन उपरोक्त गगा कुण्डवत् है विशेषता यह कि उन कुण्डोके तथा तन्निवासिनी देवियोके नाम अपनी-अपनी नदियोके समान है। (ति प /४/-२६१–२६२, १६६६), (रा. वा./३/२२/१/१८८/१,१८,२६,२६+१८८/-६,६,१२,१६,२०,२३,२६,२६)। भरत आदि क्षेत्रोमें अपने-अपने पर्वतोसे उन कुण्डोका अन्तराल भी क्रमसे २५,५०,१००,२००,१००,५० २५ योजन है। (ह पु./५/१५१–१५७)। २. ३२ विदेहोंमें गंगा, सिन्धु व रक्ता रक्तोदा नामवाली ६४ नदियोंके भी अपने-अपने नाम वाले कुण्ड नील व निषध पर्वतके मूलभागमें स्थित है। जिनका सम्पूर्ण वर्णन उपरोक्त गगा कुण्डवत् ही है। (रा वा./३/१०/१३/-१७६/२४,२६+१७७/११)।

११. नदी निर्देश

१. हिमवान् पर्वतपर पद्मद्रहके पूर्वद्वारसे गंगानदी निकलती है (ति प /४/१९६), (रा. वा./३/२२/१/१८७/२२): (ह. पु /५/१३२), (त्रि सा /५८२), (ज प /३/१४७)। द्रहकी पूर्व दिशामें इस नदीके मध्य एक कमलाकार कूट है, जिसमें बला नामकी देवी रहती है। (ति प /४/२०५–२०६); (रा. वा/३/२२/२/१८८/३)। द्रहसे ५०० योजन आगे पूर्व दिशामें जाकर पर्वतपर स्थित गगा-कूटसे १/२ योजन इधर ही इधर रहकर दक्षिणकी ओर मुड जाती है, और पर्वतके ऊपर ही उसके अर्ध विस्तार प्रमाण अर्थात् ५२३ २६/१९२ योजन आगे जाकर वृषभाकार प्रणालीको प्राप्त होती है। फिर उसके मुखमे-से निकलती हुई पर्वतके ऊपरसे अधोमुखी होकर उसकी धारा नीचे गिरती है। (ति. प./४/२१०–२१४), (रा. वा/ ३/२२/१/१८७/२२); (ह. पु./५/१३८–१४०), (त्रि सा./५८२–५८४), (ज प /३/१४७–१४९)। वहाँ पर्वतके मूलसे २५ योजन हटकर वह धार गंगाकुण्डमे स्थित गगाकूटके ऊपर गिरती है (दे० लोक/३/६)। इस गंगाकुण्डके दक्षिण द्वारसे निकलकर वह उत्तर भारतमें दक्षिणमुखी बहती हुई विजयार्धकी तमिस्र गुफामें प्रवेश करती है (ति. प /४/२३२–२३३); (रा. वा/३/२२/१/१८७/२७), (ह पु /५/१४८), (त्रि सा /५९१); (ज प./३/१७४)। [‘रा. वा’ व ‘त्रि. सा’में तमिस्र गुफाकी बजाय खण्डप्रपात नामकी गुफामें प्रवेश कराया है] उस गुफाके भीतर वह उन्मग्ना व निमग्ना नदीको अपनेमें समाती हुई (ति. प /४/२४०), (दे० लोक/३/५) गुफाके दक्षिण द्वारसे निकलकर वह दक्षिण भारतमे उसके आधे विस्तार तक अर्थात् ११९ ३/१९ योजन तक दक्षिणकी ओर जाती है। तत्पश्चात् पूर्वकी ओर मुड जाती है और मागध तीर्थके स्थानपर लवण सागरमें मिल जाती है। (ति. प./४/२४३–२४४); (रा. वा/३/२२/१/१८७/२८), (ह. पु./५/-१४८–१४९), (त्रि. सा /५९६)। इसकी परिवार नदियाँ कुल १४००० है। (ति. प /१/२४४), (ह. पु./५/१४९), (दे० लोक/३/१६) ये सब परिवार नदियाँ म्लेच्छ खण्डमें ही होती हैं आर्यखण्डमे नही (दे० म्लेच्छ/१)। २. सिन्धुनदीका सम्पूर्ण कथन गंगा नदीवत् है। विशेष यह कि पद्मद्रहके पश्चिम द्वारसे निकलती है। इसके भीतरी कमलाकारकूटमें लवणा देवी रहती है। सिन्धुकुण्डमें स्थित सिन्धुकूटपर गिरती है। विजयार्धकी खण्डप्रपात गुफाको प्राप्त होती है अथवा ‘रा-वा’ व ‘त्रि. सा’ की अपेक्षा तमिस्र गुफाको प्राप्त होती है। पश्चिमकी ओर मुडकर प्रभास तीर्थके स्थानपर पश्चिम लवण-सागरमें मिलती है। (ति. प./४/२५२–२६४), (रा वा /३/२२/२/१८७/३१); (ह. पु /५/१५१); (त्रि सा /५९७)–(दे० लोक/३/१८) इसकी परिवार नदियाँ १४००० है (ति प /४/२६४); (दे० लोक/३/१९)। ३. हिमवान् पर्वतके ऊपर पद्मद्रहके उत्तर द्वारसे रोहितास्या नदी निकलती है जो उत्तरमुखी ही रहती हुई पर्वतके ऊपर २७६ ६/१९ योजन चलकर पर्वतके उत्तरी किनारेको प्राप्त होती है, फिर गगा नदीवत् ही धार बनकर नीचे रोहितास्या कुण्डमें स्थित रोहितास्याकूटपर गिरती है। (ति प /४/१६६५), (रा वा ३/२२/३/१८८/७); (ह पु /५/१५३+१६३); (त्रि. सा./५९८) कुण्डके उत्तरी द्वारसे निकलकर उत्तरमुखी बहती हुई वह हैमवत क्षेत्रके मध्यस्थित नाभिगिरि तक जाती है। परन्तु उससे दो कोस इधर ही रहकर पश्चिमकी ओर उसकी प्रदक्षिणा देती हुई पश्चिम दिशामे उसके अर्धभागके सम्मुख होती है। वहाँ पश्चिम दिशाकी ओर मुड जाती है और क्षेत्रके अर्ध आयाम प्रमाण क्षेत्रके बीचोबीच बहती हुई अन्तमें पश्चिम लवणसागरमे मिल जाती है। (ति. प /४/१७१३–१७१६), (रा. वा./३/२२/३/१८८/११); (ह. पु /५/१६३); (त्रि सा /५९८); (दे० लोक/३/१८) इसकी परिवार नदियोंका प्रमाण २८००० है। (ति प /४/१७१६), (दे० लोक/३/१९)। ४. महाहिमवान् पर्वतके ऊपर महापद्म ह्रदके दक्षिण द्वारसे रोहित नदी निकलती है। दक्षिणमुखी होकर १६०५ ५/१९ यो० पर्वतके ऊपर जाती है। वहाँसे पर्वतके नीचे रोहितकुण्डमे गिरती है और दक्षिणमुखी बहती हुई रोहितास्यावत् ही हैमवतक्षेत्रमे, नाभिगिरिसे २ कोस इधर रहकर पूर्व दिशाकी ओर उसकी प्रदक्षिणा देती है। फिर वह पूर्वकी ओर मुडकर क्षेत्रके बीचमें बहती हुई अन्तमें पूर्व लवणसागरमे गिर जाती है। (ति प /४/१७३५–१७३७), (रा. वा./३/२२/४/१८८/१५), (ह पु /५/१५४+१६३), (ज प /३/२१२), (दे० लोक/३/१८)। इसकी परिवार नदियाँ २८००० है। (ति प /४/१७३७), (दे० लोक/३/१९)। ५ महाहिमवान् पर्वतके ऊपर महापद्म ह्रदके उत्तर द्वारसे हरिकान्ता नदी निकलती है। वह उत्तरमुखी होकर पर्वतपर १६०५ ५/१९ यो० चलकर नीचे हरिकान्ता कुण्डमें गिरती है। वहाँसे उत्तरमुखी बहती हुई हरिक्षेत्रके नाभिगिरिको प्राप्त हो उससे दो कोस इधर ही रहकर उसकी प्रदक्षिणा देती हुई पश्चिमकी ओर मुड जाती है और क्षेत्रके बीचोबीच बहती हुई पश्चिम लवणसागरमे मिल जाती है। (ति. प./४/१७४७–१७४९), (रा. वा /३/२२/५/१८८/१९), (ह पु./५/१५५+१६३)। (दे० लोक/३/१८) इसकी परिवार नदियाँ ५६००० है (ति. प /४/१७४९); (दे० लोक/३/१९)। ६. निषध पर्वतके तिगिंछद्रहके दक्षिण द्वारसे निकलकर हरित नदी दक्षिणमुखी ही ७४२१ १/१९ यो० पर्वतके ऊपर जा, नीचे हरित कुण्ड-में गिरती है। वहाँसे दक्षिणमुखी बहती हुई हरिक्षेत्रके नाभिगिरिको प्राप्त हो उससे दो कोस इधर ही रहकर उसकी प्रदक्षिणा देती हुई पूर्वकी ओर मुड जाती है। और क्षेत्रके बीचोबीच बहती हुई पूर्व लवणसागरमें गिरती है। (ति. प./४/१७७०–१७७२), (रा. वा/ ३/२२/६/१८८/२७), (ह. पु /५/१५६+१६३), (दे० लोक/३/१८) इसकी परिवार नदियाँ ५६००० है। (ति प./४/१७७२), (दे० लोक/३/१९)

७. निषध पर्वतके तिगिंछह्रदके उत्तर द्वारसे सीतोदा नदी निकलती है, जो उत्तरमुखी हो पर्वतके ऊपर ७४२१ १/१९ यो० जाकर नीचे विदेह-क्षेत्रमें स्थित सीतोदा कुण्डमें गिरती है। वहाँसे उत्तरमुखी बहती

हुई वह सुमेरु पर्वत तक पहुँचकर उससे दो कोस इधर ही पश्चिमकी ओर उसको प्रदक्षिणा देती हुई, विद्युत्प्रभ गजदन्तकी गुफामें से निकलती है। सुमेरुके अर्धभागके सम्मुख हो वह पश्चिमकी ओर मुड जाती है। और पश्चिम विदेहके बीचोबीच बहती हुई अन्तमें पश्चिम लवणसागरमें मिल जाती है। (ति. प.४//२०६५-२०७३); (रा. वा./३/२२/७/१८८/३२),(ह. पु./५/१५७+१६३), (दे० लोक/३/१८)। इसकी सर्व परिवार नदियाँ देवकुरुमें ८४००० और पश्चिम विदेहमें ४४८०३८ (कुल ५३२०३८) है (विभगाकी परिवार नदियाँ न गिनकर लोक/३/२/३ वत्); (ति. प /४/२०७१-२०७२)। लोक/३/१.९की अपेक्षा ११२००० है। ८. **सीता नदी**का सर्व कथन सीतोदावत् जानना। विशेषता यह कि नील पर्वतके केसरी द्रहके दक्षिण द्वारसे निकलती है। सीता कुण्ड में गिरती है। माल्यवान् गजदन्तकी गुफासे निकलती है। पूर्वविदेहमेंसे बहती हुई पूर्व सागरमें मिलती है। (ति. प.//४/२११६-२१२१), (रा. वा/३/२२/८/१८६/८); (ह. पु./५/१५६); (ज प/६/५५-५६); (दे० लोक/३/१.८) इसकीपरिवार नदियाँ भी सीतोदावत् जानना। (ति. प./४/२१२१-२१२२)। ९. **नरकान्ता नदी**का सम्पूर्ण कथन हरितवत् है। विशेषता यह कि नीलपर्वतके केसरी द्रहके उत्तर द्वारसे निकलती है, पश्चिमी रम्यकक्षेत्रके बीचमेंसे बहती है और पश्चिम सागरमें मिलती है। (ति प./४/२३३७-२३३९), (रा. वा./३/२२/९/१८९/११); (ह. पु/५/१५६),(दे० लोक/३/१८)। १०. **नारी नदी**का सम्पूर्ण कथन हरिकान्तावत् है। विशेषता यह कि रुक्मिपर्वतके महापुण्डरीक (ति. प. की अपेक्षा पुण्डरीक) द्रहके दक्षिण द्वारसे निकलती है और पूर्व रम्यकक्षेत्रमें बहती हुई पूर्वसागरमें मिलती है। (ति. प /४/२३४७-२३४९); (रा. वा /३/२२/१०/१८९/१४); (ह. पु./५/१५६). (दे० लोक/३/१८) ११. **रूप्यकूला नदी**का सम्पूर्ण कथन रोहितनदीवत् है। विशेषता यह कि यह रुक्मि पर्वतके महापुण्डरीक ह्रदके (ति. प. की अपेक्षा पुण्डरीकके) उत्तर द्वारसे निकलती है और पश्चिम हैरण्यवत क्षेत्रमें बहती हुई पश्चिमसागरमें मिलती है। (ति. प /४/२३५२); (रा. वा /३/२२/११/१८९/१८), (ह पु/५/१५९);(दे० लोक/३/१८)। १२. **सुवर्णकूला नदी**का सम्पूर्ण कथन रोहितास्या नदीवत् है। विशेषता यह कि यह शिखरीके पुण्डरीक (ति. प. की अपेक्षा महापुण्डरीक) ह्रदके दक्षिणद्वारसे निकलती है और पूर्वी हैरण्यवत् क्षेत्रमें बहती हुई पूर्वसागरमें मिल-जाती है। (ति. प /४/२३६२), (रा. वा /३/२२/१२/१८९/२१); (ह. पु./५/१५६);(दे० लोक/३/१.८)। १३-१४. **रक्ता व रक्तोदा**का सम्पूर्ण कथन गंगा व सिन्धुवत् है। विशेषता यह कि ये शिखरी पर्वतके महापुण्डरीक (ति प. की अपेक्षा पुण्डरीक) ह्रदके पूर्व और पश्चिम द्वारसे निकलती है। इनके भीतरी कमलाकार कूटोके पर्वतके नीचेवाले कुण्डो व कूटोके नाम रक्ता व रक्तोदा है। ऐरावत क्षेत्रके पूर्व व पश्चिममें बहती है। (ति. प./४/२३६७); (रा. वा /३/२२/१३-१४/१८९/२५,२८); (ह. पु/५/१५६), (त्रि. सा/५९९); (दे० लोक/३/१८)। १५. **विदेहके** ३२ क्षेत्रोमें भी गंगा नदीकी भाँति गंगा, सिन्धु व रक्ता-रक्तोदा नामकी क्षेत्र नदियाँ (दे० लोक/३/-१४)। इनका सम्पूर्ण कथन गंगानदीवत जानना। (ति. प./४/२२-६३); (रा. वा./३/१०/१३/१७६/२७), (ह. पु./५/१६८); (त्रि. सा./६९१); (ज. प./७/२२)। इन नदियोकी भी परिवार नदियाँ १४०००,१४००० है। (ति. प./४/२२६५), (रा. वा./३/१०/१३/१७६/२८)। १६. पूर्व व पश्चिम विदेहमे-से प्रत्येकमें सीता व सीतोदा नदीके दोनों तरफ तीन तीन करके कुल १२ **विभंगा नदियाँ है।** (दे०लोक/३/१४)ये सब नदियाँ निषध या नील पर्वतोसे निकलकर सीतोदा या सीता नदियोंमें प्रवेश करती है (ह पु/५/२३९-२४३) ये नदियाँ जिन कुण्डोसे निकलती हैं वे नील व निषध पर्वतके ऊपर स्थित हैं। (रा. वा./३/१०/१३/१७६/१२)। प्रत्येक नदीका परिवार २८००० नदी प्रमाण है। (ति. प/४/२२३२); (रा. वा/३/१०/१३२/१७६/१४)।

१२. देवकुरु व उत्तरकुरु निर्देश

१. जम्बूद्वीपके मध्यवर्ती चौथे नम्बरवाले विदेहक्षेत्रके बहुमध्य प्रदेशमें सुमेरु पर्वत स्थित है। उसके दक्षिण व निषध पर्वतकी उत्तर दिशामें देवकुरु तथा उसकी उत्तर व नीलपर्वतकी दक्षिण दिशामें उत्तरकुरु स्थित हैं (दे० लोक/३/३)। सुमेरु पर्वतकी चारो दिशाओमें चार गजदन्त पर्वत है जो एक ओर तो निषध व नील कुलाचलोंको स्पर्श करते है और दूसरी ओर सुमेरुको—दे० लोक/३/८। अपनी पूर्व व पश्चिम दिशामें ये दो कुरु इनमेंसे ही दो-दो गजदन्त पर्वतोंसे घिरे हुए है। (ति. प./४/२१३१,२१९१), (ह. पु./५/१६७); (ज. प/६/२,८१)। २. तहाँ देवकुरुमें निषधपर्वतसे १००० योजन उत्तरमें जाकर सीतोदा नदीके दोनों तटोंपर **यमक नामके दो शैल है**, जिनका मध्य अन्तराल ५०० योजन है; अर्थात् नदीके तटोसे नदीके अर्ध विस्तारसे हीन २२५ यो० हटकर स्थित है। (ति. प./४/२०७५-२०७७); (रा. वा./३/१०/१३/१७५/२६); (ह. पु./५/१९२); (त्रि. सा.६५४-६५५); (ज. प/६/८७)। इसी प्रकार उत्तर कुरुमें नील पर्वतके दक्षिणमें १००० योजन जाकर सीतानदीके दोनो तटोपर दो यमक है। (ति.प./४/२१२३-२१२४), (रा. वा/३/१०/१३/१७४/२५); (ह. पु./५/१९१); (त्रि सा./६५४); (ज. प./६/१५-१८)। ३. इन यमकोसे ५०० योजन उत्तरमें जाकर देवकुरुकी सीतोदा नदीके मध्य उत्तर दक्षिण लम्बायमान ५ द्रह है। (ति. प/४/२०८९); (रा. वा./३/-१०/१३/१७५/२८); (ह. पु/५/१९६), (ज. प./६/८३)। मतान्तरसे कुलाचलसे ५५० योजन दूरीपर पहला द्रह है। (ह. पु./५/१९४)। ये द्रह नदियोंके प्रवेश व निकास द्वारों से संयुक्त है। (त्रि. सा./-६५८)। [तात्पर्य यह है कि यहाँ नदीकी चौड़ाई तो कम है और ह्रदोंकी चौडाई अधिक। सीतोदा नदी ह्रदोके दक्षिण द्वारोंसे प्रवेश करके उनके उत्तरी द्वारोसे बाहर निकल जाती है। ह्रद नदी के दोनों पार्श्व भागोंमें निकले रहते है।] अन्तिम द्रहसे $२०९२\frac{२}{१९}$ योजन उत्तरमें जाकर पूर्व व पश्चिम गजदन्तोंकी वनकी वेदी आ जाती है। (ति. प/४/२१००-२१०१); (त्रि. सा./६६०)। इसी प्रकार उत्तरकुरुमें भी सीता नदीके मध्य ५ द्रह जानना। उनका सम्पूर्ण वर्णन उपरोक्तवत् है। (ति प/४/२१२५), (रा. वा./३/-१०/१३/१४/२९); (ह. पु./५/१९४); (ज प/६/२६)। [**इस प्रकार दोनों कुरुओंमें कुल १० द्रह हैं। परन्तु मतान्तरसे द्रह २० हैं**]—मेरु पर्वतकी चारो दिशाओंमें से प्रत्येक दिशामें पाँच है। उपरोक्तवत् ५०० योजन अन्तरालसे सीता व सीतोदा नदीमें ही स्थित है। (ति प./४/२१३६); (त्रि. सा./६५६)। इनके नाम ऊपर वालोंके समान है। —(दे०/लोक/५)। ४ दस द्रह वाली प्रथम मान्यताके अनुसार प्रत्येक द्रहके पूर्व व पश्चिम तटोपर दस-दस करके कुल **२०० कांचन शैल हैं**। (ति० प./४/२०९४-२१२६); (रा. वा /३/१०/१३/१७४/२+७१५/१); (ह. पु./५/२००); (ज. प./६/४४,१४४)। पर २० द्रहो वाली दूसरी मान्यताके अनुसार प्रत्येक द्रहके दोनों पार्श्व भागोंमें पाँच-पाँच करके कुल २०० कांचन शैल है। (ति. प./४/२१३७); (त्रि सा/६५९)। ५. देवकुरु व उत्तरकुरुके भीतर भद्रशाल वनमें सीतोदा व सीता नदीके पूर्व व पश्चिम तटोंपर, तथा इन कुरुक्षेत्रोसे बाहर भद्रशाल वनमें उक्त दोनों नदियोंके उत्तर व दक्षिण तटोंपर एक-एक करके कुल ८ दिग्गजेन्द्र पर्वत है। (ति प./४/२१०३, २११२, २१३०, २१३४), (रा. वा./३/१०/१३/१७८/५); (ह. पु/५/२०५-२०९); (त्रि. सा./६६१); (ज. प./४/७४)। ६. देवकुरुमें सुमेरुके दक्षिण भागमें

चित्र सं० - २६

देवकुरु व उत्तर कुरु

त्रिलोक चूडामणि नामका चैत्यालय

नोट.— १ पर्वतो आदिके वर्ण — माल्यवान = वैडूर्यवत् नील, सौमनस = रजतवत् श्वेत, विद्युतप्रभ = तपनीयवत् रक्त, गन्धमादन व वनवेदी = हेमवत् पीत।

दृष्टिभेद — १. गजदन्तोके अवस्थान क्रममे अन्तर—(दे० लोक/५ ३)।
२ इनपर स्थित कूटोके प्रमाण व नामोमे अन्तर—(दे० लोक/५ ४)।
३. मेरुकी चारो दिशाओमे नदियोके बीच ५-५ करके कुल २० द्रह हैं —(दे० लोक/३ ८)
४ इस मतके अनुसार प्रत्येक द्रहके दोनो पार्श्व भागो मे ५-५ काञ्चन गिरि है —(दे० लोक/३ ७)

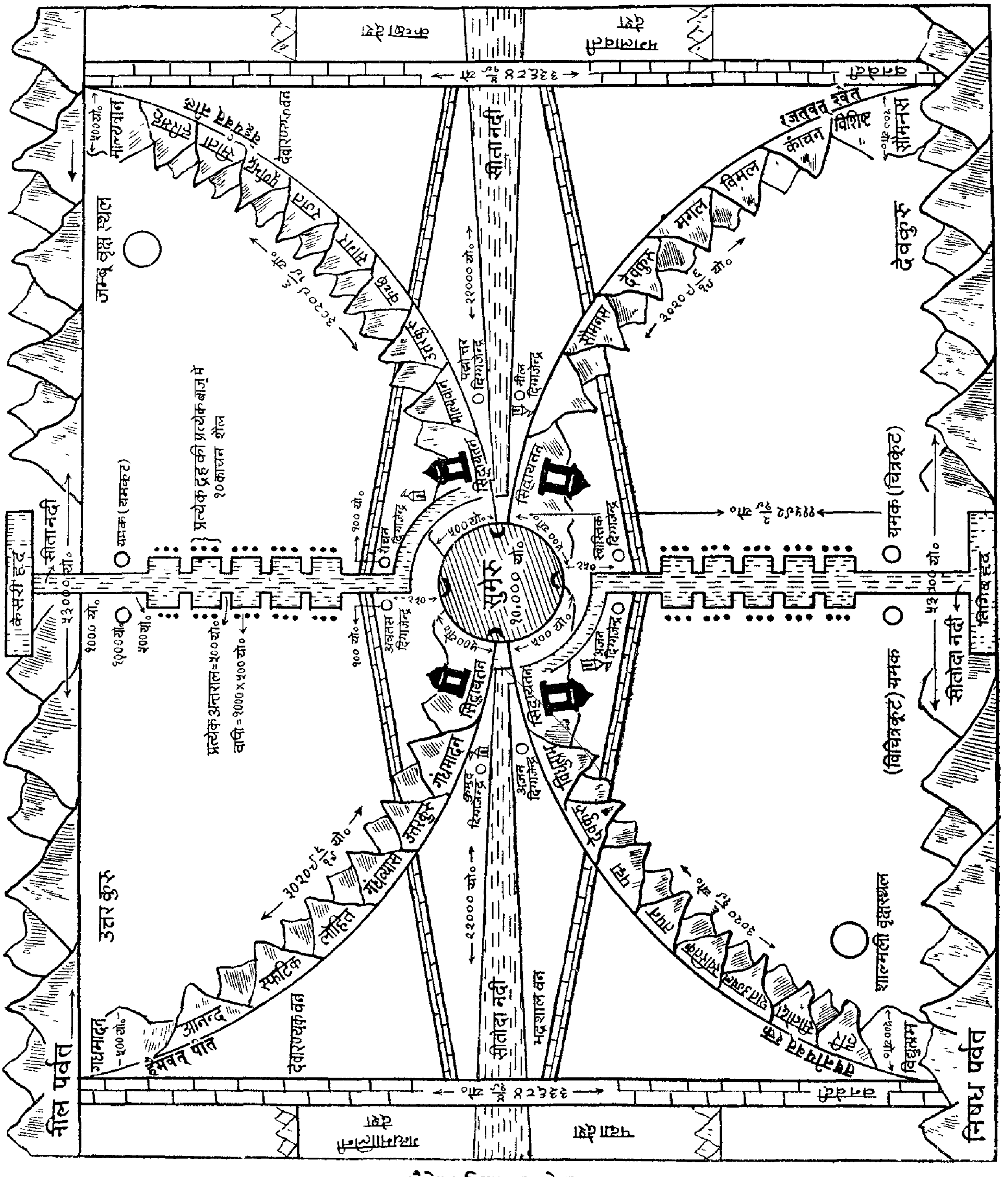

सीतोदा नदीके पश्चिम तटपर तथा उत्तरकुरुमें सुमेरुके उत्तर भागमें सीता नदीके पूर्व तटपर, तथा इसी प्रकार दोनों कुरुओंसे बाहर मेरुके पश्चिममें सीतोदाके उत्तर तटपर और मेरुकी पूर्व-दिशामें सीता नदीके दक्षिण तटपर एक-एक करके चार **त्रिभुवन चूड़ामणि** नाम वाले जिन भवन है। (ति. प./४/२१०९–२१११+२१३२–२१३३)। ७ निषध व नील पर्वतोंसे संलग्न सम्पूर्ण विदेह क्षेत्रके विस्तार समान लम्बी, दक्षिण उत्तर लम्बायमान **भद्रशाल वनकी वेदी है**। (ति प./४/२११४)। ८. देवकुरुमें निषध पर्वतके उत्तरमें, विद्युत्प्रभ गजदन्तके पूर्वमें, सीतोदाके पश्चिममें और सुमेरुके नैऋत्य दिशामें **शाल्मली वृक्षस्थल** है। (ति. प./४/२१४६–२१४७); (रा वा./३/१०/१३/१७५/२३), (ह. पु./५/१८७); (विशेष दे० आगे/लोक/३/१) सुमेरुकी ईशान दिशामें, नील पर्वतके दक्षिणमें, माल्यवंत गजदन्तके पश्चिममे, सीता नदीके पूर्वमे **जम्बू वृक्षस्थल** है। (ति. प./४/२१९४–२१९५); (रा. वा/३/१०/१३/१७/७); (ह. पु/५/१७२); (त्रि. सा./६३६), (ज. प/-६।५७)।

१३. जम्बू व शाल्मली वृक्षस्थल

१. देवकुरु व उत्तरकुरुमें प्रसिद्ध **शाल्मली व जम्बूवृक्ष है**। (दे० लोक/३/१२)। ये वृक्ष पृथिवीमयी है (दे० वृक्ष) तहाँ शाल्मली या जम्बू वृक्षका **सामान्यस्थल** ५०० योजन विस्तार युक्त होता है। तथा मध्यमें ८ योजन और किनारोंपर २ कोस मोटा है। (ति प/४/२१४८-२१४९), (ह. पु./५/१७४); (त्रि सा/६४०)। मतान्तरकी अपेक्षा वह मध्यमें १२ योजन और किनारोंपर २ कोस मोटा

चित्र सं०-२९

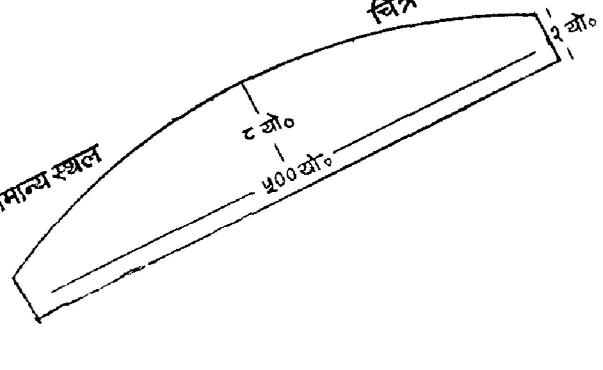

है। (रा वा./३/७/१/१६९/१८); (ज. प./६/५८, १४९)। २. यह स्थल चारों ओरसे स्वर्णमयी वेदिकासे वेष्टित है। इसके बहुमध्य भागमें एक पीठ है, जो आठ योजन ऊँचा है तथा मूलमें १२ और ऊपर ४ योजन विस्तृत है। पीठके मध्यमें **मूलवृक्ष है**, जो कुल आठ योजन ऊँचा है। उसका स्कन्ध दो योजन ऊँचा तथा एक कोस मोटा है। (ति प./४/२१५१–२१५५), (रा. वा/३/७/१/१६९/१९), (ह पु/५/१७३–१७७); (त्रि. सा./६३९–६४१/६४८); (ज प/६/६०–६४, १५४–१५५)। ३ इस वृक्षकी चारों दिशाओंमें छह-छह योजन लम्बी तथा इतने ही अन्तरालसे स्थित चार महाशाखाएँ है। शाल्मली वृक्षको दक्षिण शाखापर और जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखापर जिनभवन है। शेष **तीन शाखाओंपर व्यन्तर देवोंके भवन हैं**। तहाँ शाल्मली वृक्षपर वेणु व वेणुधारी तथा जम्बू वृक्षपर इस द्वीपके रक्षक आदृत व अनादृत नामके देव रहते है। (ति. प/४/२१५६–२१६५–२१६६); (रा वा/-३/१०/१३/१७४/७+१७५/२५), (ह. पु./५/१७७–१८२+१८६), (त्रि. सा./६४७–६४९+६५२); (ज. प./६/६५–६७–८६; १५६–१६०)।

चित्र सं०-३०

पीठ पर स्थित मूल वृक्ष

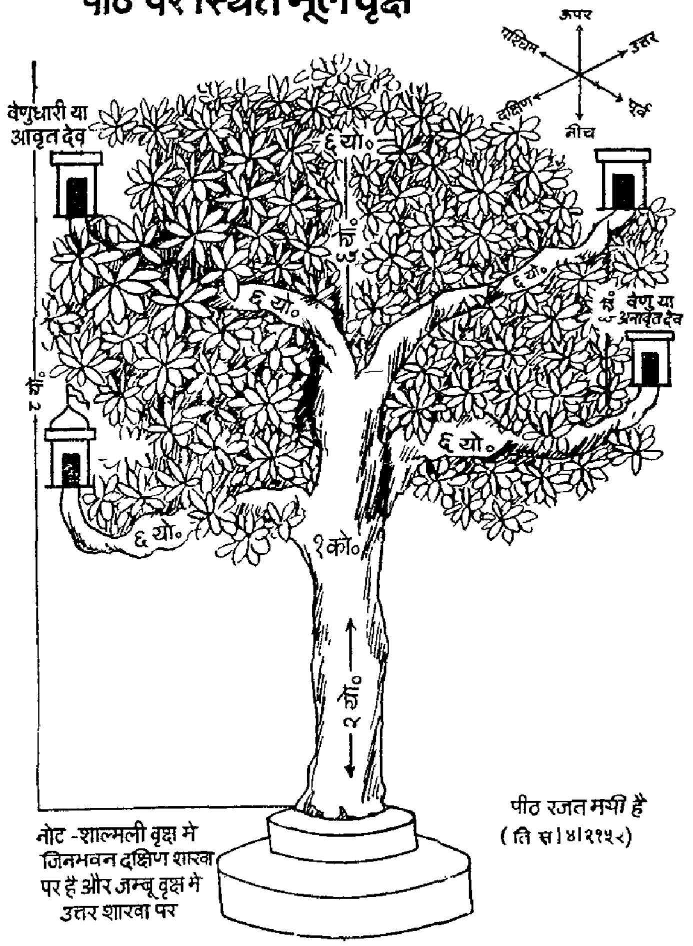

४. इस स्थलपर एकके पीछे एक करके १२ वेदियाँ है, जिनके बीच **१२ भूमियाँ हैं**। यहाँ पर ह. पु में वापियों आदि वाली ५ भूमियोको छोडकर केवल परिवार वृक्षों वाली ७ भूमियाँ बतायी है। (ति. प./४/२१६७), (ह पु/५/१८३); (त्रि. सा./६४१); (ज प./६/१५१–१५२)। इन सात भूमियोंमें आदृत युगल या वेणु-युगलके परिवार देवोंके वृक्ष है। ५. तहाँ प्रथम भूमिके **मध्यमें** उपरोक्त मूल वृक्ष स्थित है। द्वितीयमें वन-वापिकाएँ है। तृतीयकी प्रत्येक दिशामें २७ करके कुल १०८ वृक्ष महामान्यों अर्थात् त्रायस्त्रिंशोके है। चतुर्थकी चारों दिशाओंमें चार द्वार है, जिनपर स्थित वृक्षोपर उसकी देवियाँ रहती हैं। पाँचवीमें केवल वापियाँ है। छठीमें वनखण्ड है। सातवींकी चारो दिशाओमें कुल १६००० वृक्ष अगरक्षकोके है। अष्टमकी वायव्य, ईशान व उत्तर दिशामें कुल ४००० वृक्ष सामानिकोके है। नवमकी आग्नेय दिशामें कुल ३२००० वृक्ष आभ्यन्तर पारिषदोंके है। दसवींकी दक्षिण दिशामें ४०,००० वृक्ष मध्यम पारिषदोके है। ग्यारहवींकी नैऋत्य दिशामें ४८००० वृक्ष बाह्य पारिषदोके है। बारहवींकी पश्चिम दिशामें सात वृक्ष अनीक महत्तरोके है। **सब वृक्ष** मिलकर १४०१२० होते है। (ति प./४/२१६९–२१८१), (रा वा./३/१०/१३/१७४/१०), (ह. पु./५/-१८३–१८६), (त्रि. सा./६४२–६४६), (ज. प/६/६८–७४,१६२–१६७)। ६. **स्थलके चारों ओर तीन वन खण्ड हैं**। प्रथमकी चारो दिशाओमें देवोंके निवासभूत चार प्रासाद है। विदिशाओमें से प्रत्येकमें चार-चार पुष्करिणी है प्रत्येक पुष्करिणीकी चारों दिशाओंमें आठ-आठ कूट है। प्रत्येक कूटपर चार-चार प्रासाद है। जिनपर उन आदृत आदि देवोंके परिवार देव रहते है। [रा. वा/ मे इसी प्रकार प्रासादोंके चारो तरफ भी आठ कूट बताये है] इन

चित्र सं० -३१

जम्बू व शाल्मली वृक्षस्थल

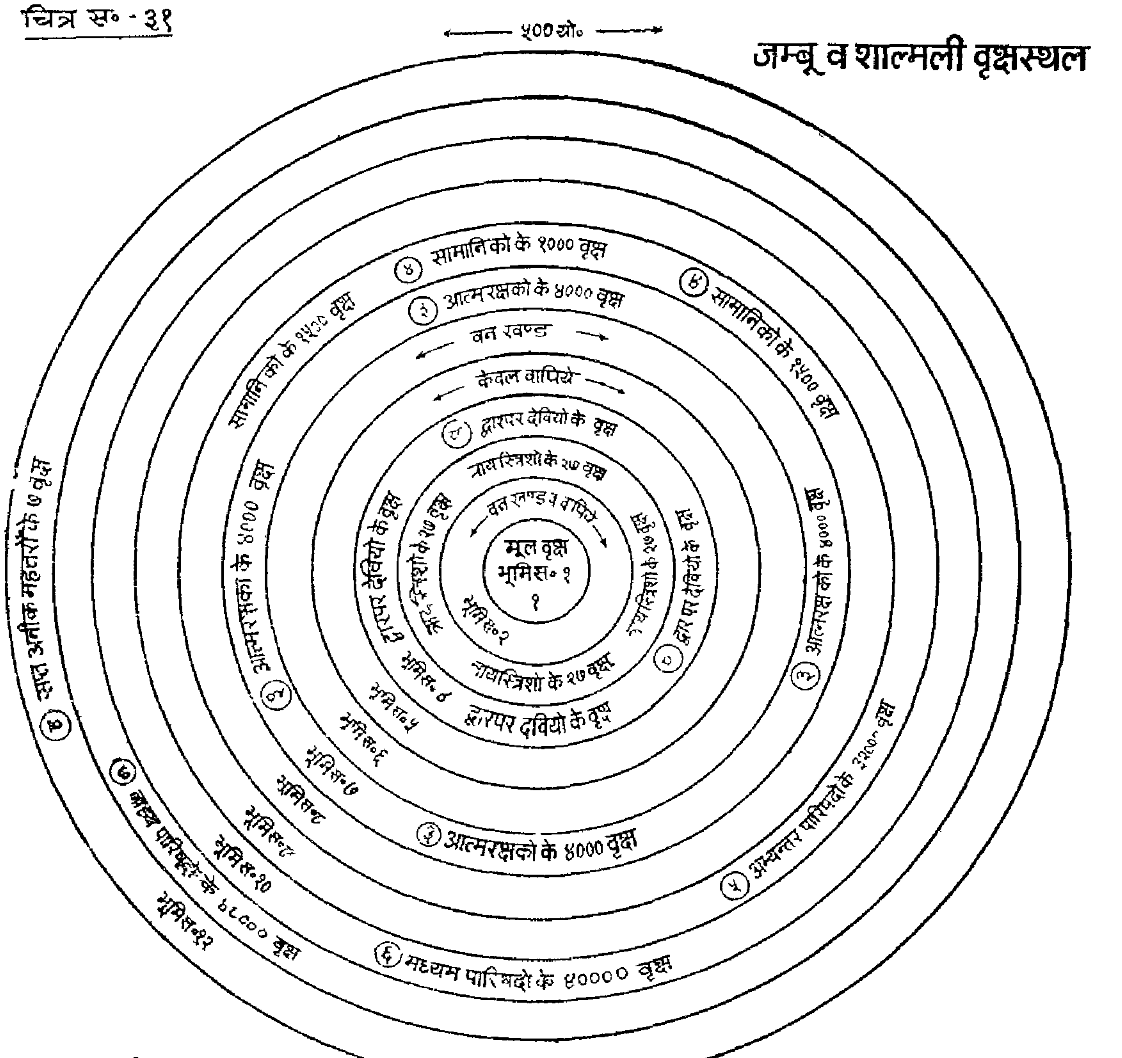

चित्र सं०-३२

वृक्षकी मूलभूत प्रथम भूमि

नोट दृष्टि सं०२ से ये आठ आठ कूट वापियोंकी चारो दिशाओ मे ही है, प्रसादो की दिशाओ मे नही।

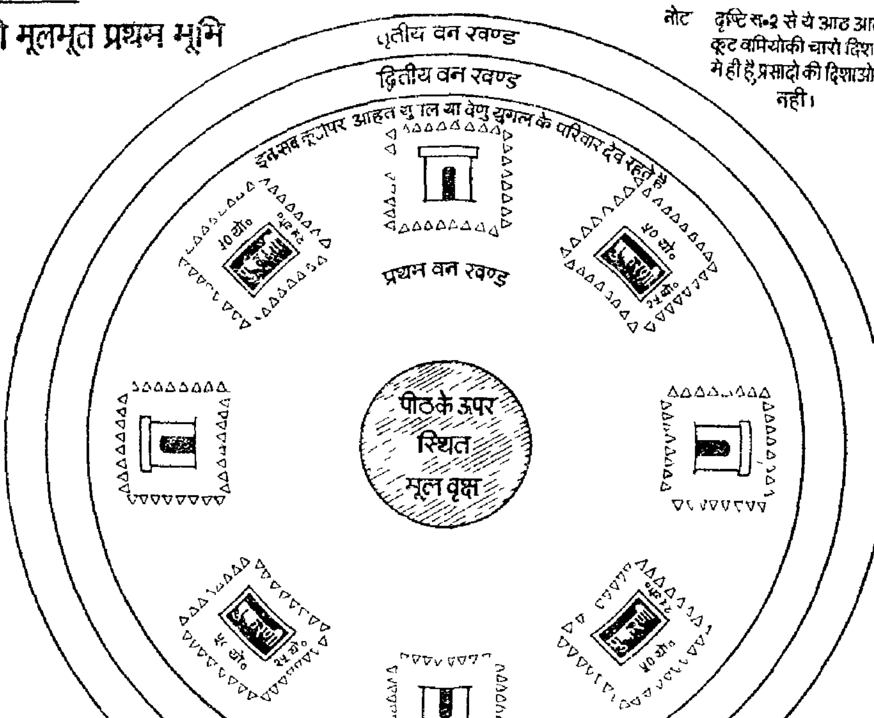

कूटोंपर उन आदत युगल या वेणु युगलका परिवार रहता है। (ति. प /४/२१८४-२१९०), (रा. वा /३/१०/१३/१७४/१८)।

१४. विदेहके ३२ क्षेत्र

१. पूर्व व पश्चिमकी भद्रशाल वनकी वेदियों (दे० लोक/३/-१२.७) से आगे जाकर सीता व सीतोदा नदीके दोनों तरफ चार-चार वक्षारगिरि और तीन-तीन विभंगा नदियाँ एक वक्षार व एक विभंगाके क्रमसे स्थित हैं। इन वक्षार व विभंगाके कारण उन नदियोंके पूर्व व पश्चिम भाग आठ-आठ भागोंमें विभक्त हो जाते हैं। विदेहके ये ३२ खण्ड उसके ३२ क्षेत्र कहलाते हैं। (ति. प./४/२२००-२२०१), (रा. वा /३/१०/१३/१७५/३०+१७७/५, १५, २४); (ह. पु /५/२२८, २४३, २४४); (त्रि. सा./६६५), (ज. प./का पूरा ८ वाँ अधिकार)। २. उत्तरीय पूर्व विदेहका सर्वप्रथम क्षेत्र कच्छा नामका है। (ति. प./४/२२३३), (रा. वा./३/१०/१३/१७६/१४); (ज. प./७/३३)। इनके मध्यमे पूर्वापर लम्बायमान भरत क्षेत्रके विजयार्धवत् एक विजयार्ध पर्वत है। (ति. प./४/२२५७); (रा. वा /१०/१३/१७६/१६)। उसके उत्तरमें स्थित नील पर्वतकी वनवेदीके दक्षिण पार्श्वभागमें पूर्व व पश्चिम दिशाओंमें दो कुण्ड हैं, जिनसे रक्ता व रक्तोदा नामकी दो नदियाँ निकलती हैं। दक्षिणमुखी होकर बहती हुई वे विजयार्धकी दोनों गुफाओंमें-से निकलकर नीचे सीता नदीमें जा मिलती है। जिसके कारण भरत क्षेत्रकी भाँति यह देश भी छह खण्डोमें विभक्त हो गया है। (ति. प /४/-२२६२-२२६४), (रा. वा./३/१०/१३/१७६/२३); (ज. प /७/७२) यहाँ भी उत्तर म्लेच्छ खण्डके मध्य एक वृषभगिरि है, जिसपर दिग्विजयके पश्चात् चक्रवर्ती अपना नाम अंकित करता है। (ति. प /४/२२९०-२२९१); (त्रि. सा./७१०) इस क्षेत्रके आर्य-खण्डकी प्रधान नगरीका नाम क्षेमा है। (ति. प./४/२२६८); (रा. वा /३/१०/१३/१७६/३२)। इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्रमें दो नदियाँ व एक विजयार्धके कारण छह-छह खण्ड उत्पन्न हो गये है। (ति. प./४/२२९२), (ह पु /५/२६७), (त्रि. सा./६९१)। विशेष यह

चित्र सं०-२७

विदेहका कच्छा क्षेत्र

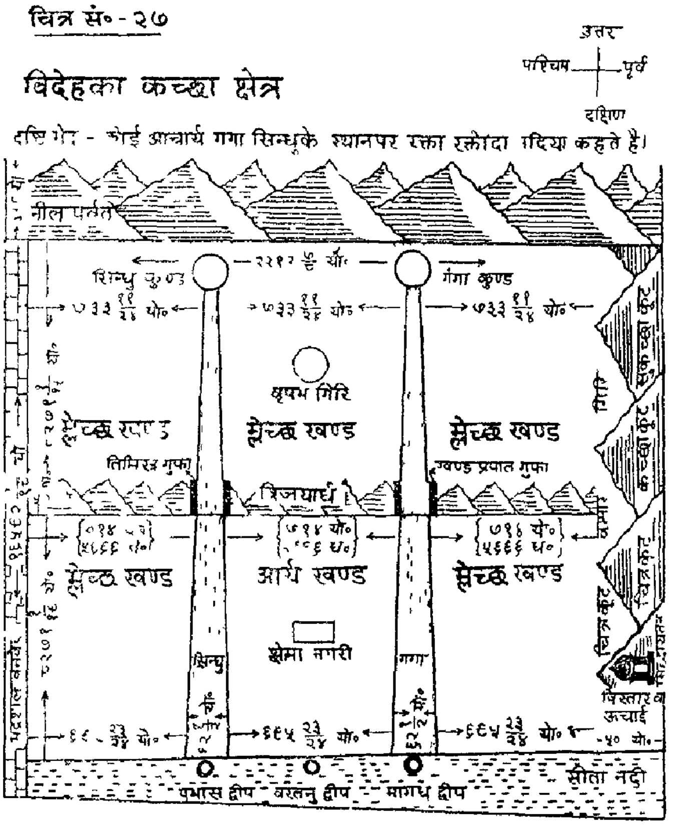

है कि दक्षिणवाले क्षेत्रोमें गंगा-सिन्धु नदियाँ बहती है (ति. प /४/-२२९५-२२९६) मतान्तरसे उत्तरीय क्षेत्रोमें गंगा-सिन्धु व दक्षिणी क्षेत्रोमें रक्ता-रक्तोदा नदियाँ है। (ति. प./४/२३०४); (रा. वा./-३/१०/१३/१७६/२८, ३१+१७७/१०), (ह. पु./५/२६७-२६९); (त्रि. सा /६९२)। ३. पूर्व व अपर दोनो विदेहोमें प्रत्येक क्षेत्रके सीता सीतोदा नदीके दोनो किनारोंपर आर्यखण्डोमें मागध, वरतनु और प्रभास नामवाले तीन-तीन **तीर्थस्थान** है। (ति. प./-४/२३०५-२३०६), (रा. वा./३/१०/१३/१७७/१२), (त्रि. सा./६७८) (ज. प./७/१०४)। ४. पश्चिम विदेहके अन्तमें जम्बूद्वीपकी जगतीके पास सीतोदा नदीके दोनो ओर भूतारण्यक वन है। (ति. प./४/२२०३,२३२५), (रा. वा /३/१०/१३/१७७/१); (ह. पु./५/२८१); (त्रि. सा./६७२)। इसी प्रकार पूर्व विदेहके अन्तमें जम्बूद्वीपकी जगतीके पास सीता नदीके दोनो ओर देवारण्यक वन है। (ति. प /४/२३१५-२३१६)। (दे. चित्र नं. १३)

४. अन्य द्वीप सागर निर्देश

१. लवण सागर निर्देश

१ जम्बूद्वीपको घेरकर २००,००० योजन विस्तृत वलयाकार यह प्रथम सागर स्थित है, जो एक नावपर दूसरी नाव मुधी रखनेसे उत्पन्न हुए आकारवाला है। (ति. प /४/२३९८-२३९९); (रा. वा /३/३२/३/१९३/८), (ह पु /५/४३०-४४१), (त्रि सा./९०१); (ज. प./१०/

चित्र सं०-३३ सागर तल व पाताल

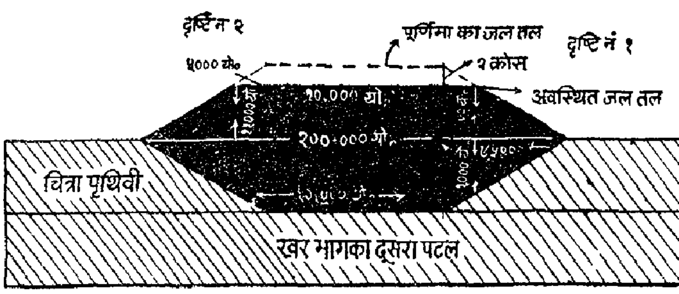

२-४) तथा गोल है। (त्रि. सा /८९७)। २. इसके मध्यतलभागमें चारो ओर १००८ पाताल या विवर है। इनमें ४ उत्कृष्ट, ४ मध्यम और १००० जघन्य विस्तारवाले हैं। (ति प /४/२४०८,२४०९), (त्रि. सा./८९६); (ज प /१०/१२)। तटोंसे ९५००० योजन भीतर प्रवेश करनेपर चारो दिशाओमें चार ज्येष्ठ पाताल है। ९९५०० योजन प्रवेश करनेपर उनके मध्य विदिशामें चार मध्यय पाताल और उनके मध्य प्रत्येक अन्तर दिशामे १२५,१२५ करके १००० जघन्य पाताल मुक्तावली रूपसे स्थित है। (ति. प /४/२४११+२४१४+२४२८); (रा वा /३/३२/४-६/१९६/१३,२५,३२); (ह. पु /५/४४२,४५१,४५५) १००,००० योजन गहरे महापाताल नरक सीमन्तक बिलके ऊपर सलग्न है। (ति. प./४/२४१३)। ३. तीनों प्रकारके पातालोकी ऊँचाई **तीन बराबर भागोंमें विभक्त है।** तहाँ निचले भागमें वायु, उपरले भागमे जल और मध्यके भागमें यथायोग रूपसे जल व वायु दोनो रहते है। (ति. प./४/२४३०), (रा. वा./३/३२/४-६/१९६/१७, २८,३२); (ह. पु./५/४४६-४४७), (त्रि. सा./८९८), (ज. प./१०/६-८) ४ **मध्य भागमें जल व वायुकी हानि वृद्धि होती रहती है।** शुक्ल पक्षमें प्रतिदिन २२२२$\frac{2}{9}$ योजन वायु बढ़ती है और कृष्ण पक्षमें इतनी ही घटती है। यहाँ तक कि इस पूरे भागमें पूर्णिमाके दिन केवल वायु ही तथा अमावस्याको केवल जल ही रहता है। (ति. प./

चित्र सं॰ - ३५

लवण सागर

दृष्टि भेद- सूर्य व चन्द्र द्वीपो को कोई आचार्य मानते है और कोई नही

नोट - सागर के ऊपर आकाश मे वेलन्धर देवो की नगरिया है

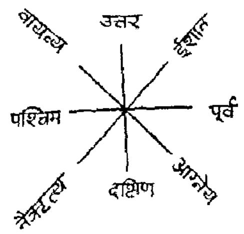

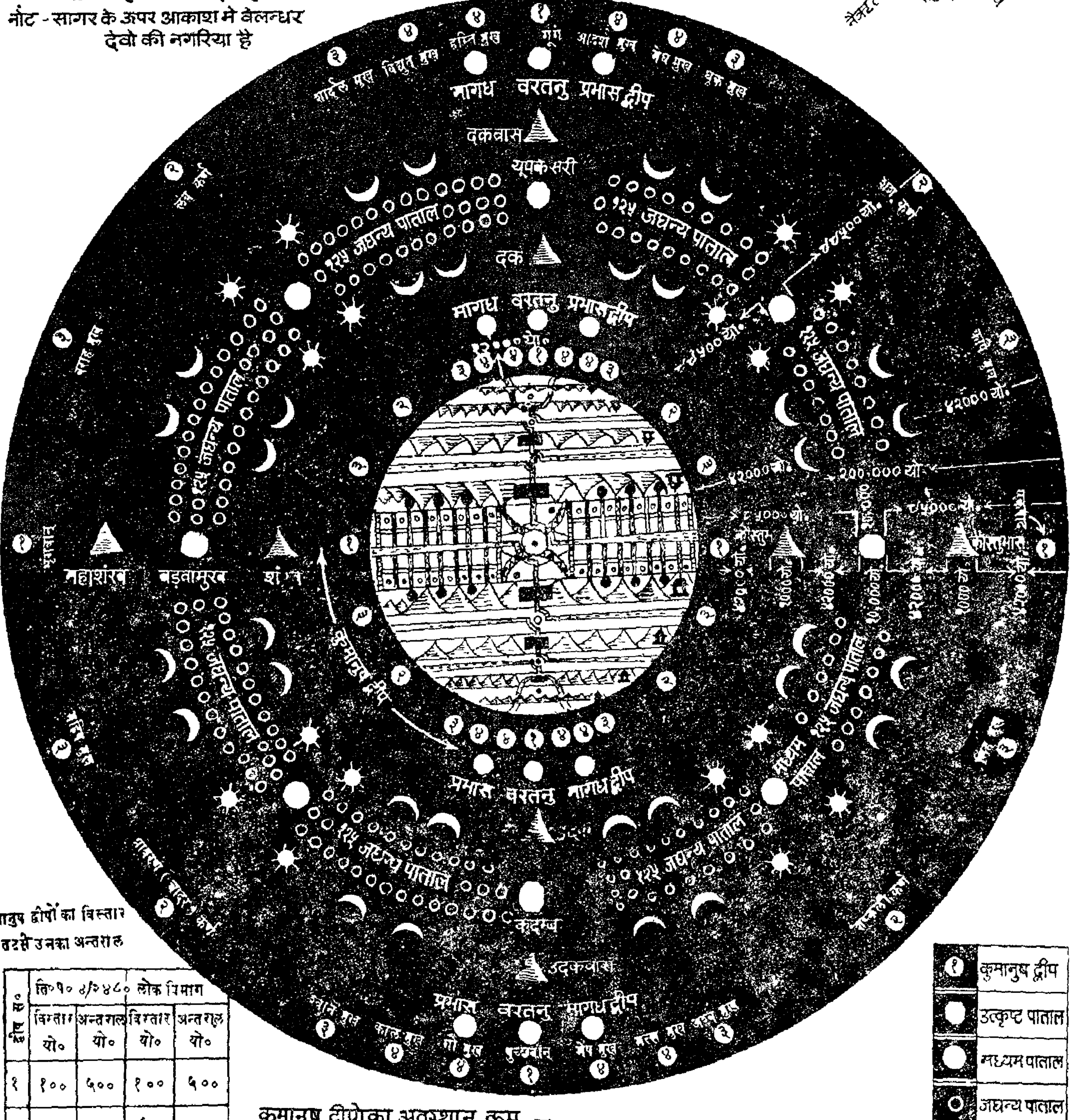

कुमानुष द्वीपों का विस्तार व तटसे उनका अन्तराल

क्र॰	ति॰प॰ ४/२४८०		लोक विभाग	
	विस्तार यो॰	अन्तराल यो॰	विस्तार यो॰	अन्तराल यो॰
१	१००	५००	१००	५००
२	५५	६००	५०	५५०
३	५०	५५०	१००	५००
४	२५	६००	२५	६००

कुमानुष द्वीपोका अवस्थान क्रम —
दोनो तटोपर तटसे उक्त अन्तराल छोड़कर चार चार द्वीप चारो दिशाओमे, चार चार विदिशाओमे, आठ आठ अन्तर-दिशाओमे, और आठ आठ विजयार्धो तथा हिमवान व शिखरी पर्वतोके प्रणिधि भागोमे स्थित है।

विशेष दे॰ चित्र स॰ १३ तथा लोक/४.१

४/२४३५-२४३६), (ह. पु./५/४४) पातालोंमें जल व वायुकी इस वृद्धिका कारण नीचे रहनेवाले भवनवासी देवोका उच्छ्वास निःश्वास है। (रा वा /३/३२/४/१९३/२०) । ५. पातालोमें होनेवाली उपरोक्त वृद्धि हानिसे प्रेरित होकर **सागरका जल शुक्ल पक्षमें प्रतिदिन ८००/३ धनुष ऊपर उठता है, और कृष्ण पक्षमें इतना ही घटता है**। यहाँ तक कि पूर्णिमा को ४००० धनुष आकाशमें ऊपर उठ जाता है और अमावस्याको पृथिवी तलके समान हो जाता है। (अर्थात् ७०० योजन ऊँचा अवस्थित रहता है।) ति. प./४/२४४०, २४४३) लोगायणीके अनुसार सागर ११००० योजन तो सदा ही पृथिवी तलसे ऊपर अवस्थित रहता है। शुक्ल पक्षमें इसके ऊपर प्रतिदिन ७०० योजन बढ़ता है और कृष्णपक्षमें इतना ही घटता है। यहाँ तक कि पूर्णिमाके दिन ५००० योजन बढकर १६००० योजन हो जाता है और अमावस्याको इतना ही घटकर वह पुनः ११००० योजन रह जाता है। (ति. प./४/२४४६): (रा. वा./३/३२/३/१९३/१०); (ह. पु./५/४३७); (त्रि. सा./६००); (ज.प. १०/१८) । ६. समुद्रके दोनों किनारोंपर

चित्र - ३४

उत्कृष्ट पाताल

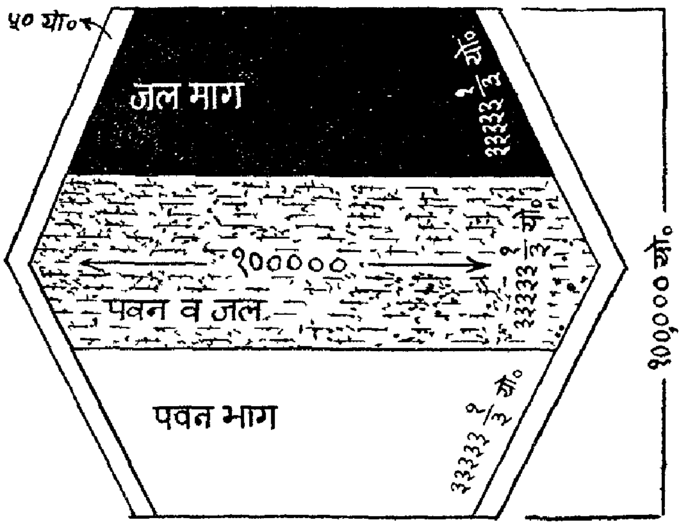

व शिखरपर आकाशमें ७०० योजन जाकर सागरके चारो तरफ कुल **१४२००० वेलन्धर देवोंकी नगरियाँ** है। तहाँ बाह्य व आभ्यन्तर वेदीके ऊपर क्रमसे ७२००० और ४२००० और मध्यमें शिखरपर २८००० है। (ति. प./४/२४४९-२४५४); (त्रि. सा /६०४), (ज. प./१०/३६-३७) मतान्तरसे इतनी ही नगरियाँ सागरके दोनों किनारोंपर पृथिवी तल पर भी स्थित है। (ति. प./४/२४५६) सग्गायणीके अनुसार सागरकी बाह्य व आभ्यन्तर वेदीवाले उपरोक्त नगर दोनो वेदियोंसे ४२००० योजन भीतर प्रवेश करके आकाशमें अवस्थित है और मध्यवाले जलके शिखरपर भी। (रा. वा /३/३२/७/१९४/१), (ह पु./५/४६६-४६८) । ७.दोनो किनारोंसे ४२००० योजन भीतर जानेपर चारों दिशाओंमें प्रत्येक ज्येष्ठ पातालके बाह्य व भीतरी पार्श्व भागोंमें एक-एक करके कुल आठ पर्वत है। जिनपर वेलन्धर देव रहते है। (ति. प./४/२४५७), (ह. पु./५/४५९); (त्रि. सा /६०५), (ज प./१०/२७); (विशेष दे० लोक/५/६ मे इनके व देवोके नाम) । ८ इस प्रकार अभ्यन्तर वेदीसे ४२००० भीतर जानेपर उपरोक्त भीतरी ४ पर्वतोंके दोनो पार्श्व भागोंमें (विदिशाओंमें) प्रत्येकमें दो-दो करके कुल आठ सूर्य द्वीप है। (ति. प./४/२४७१-२४७२), (त्रि. सा./६०९), (ज प./१०/३८) सागरके भीतर, रक्तोदा नदीके सम्मुख **मागध द्वीप**, जगतीके अपराजित नामक उत्तर द्वारके सम्मुख **वरतनु** और रक्ता नदीके सम्मुख **प्रभास द्वीप** है। (ति. प./४/२४७३-२४७५); (त्रि सा./९११-९१२), (ज. प /१०/४०) । इसी प्रकार ये तीनों द्वीप जम्बूद्वीपके दक्षिण भागमें भी गंगा सिन्धु नदी व वैजयन्त नामक दक्षिण द्वारके प्रणिधि भागमें स्थित है। (ति. प./४/१३११, १३१६+१३१८) आभ्यन्तर वेदीसे १२००० योजन सागरके भीतर जानेपर सागरकी वायव्य दिशामें मागध नामका द्वीप है। (रा वा. ३/३३/८/१९४/८); (ह पु./५/४६९) इसी प्रकार लवण समुद्रके बाह्य भागमें भी ये द्वीप जानना। (ति. प./४/२४७७) मतान्तरकी अपेक्षा दोनो तटोसे ४२००० योजन भीतर जानेपर ४२००० योजन विस्तार वाले २४,२४ द्वीप है। तिनमें ८ तो चारो दिशाओं व विदिशाओके दोनों पार्श्वभागोंमें है और १६ आठो अन्तर दिशाओके दोनो पार्श्व भागोंमें। विदिशावालोंका नाम सूर्यद्वीप और अन्तर दिशावालोंका नाम चन्द्रद्वीप है (त्रि. सा./९०९) । ९ इनके अतिरिक्त ४८ **कुमानुष द्वीप है**। २४ अभ्यन्तर भागमे और २४ बाह्य भागमें। तहाँ चारों दिशाओंमें चार, चारो विदिशाओंमें ४, अन्तर दिशाओमे ८ तथा हिमवान्, शिखरी व दोनों विजयार्ध पर्वतोके प्रणिधि भागमें ८ है। (ति. प./४/२४७८-२४७९+२४८७-२४८८); (ह पु./५/४७१-४७६+७८१); (त्रि. सा./९१३) दिशा, विदिशा व अन्तर दिशा तथा पर्वतके पासवाले, ये चारों प्रकारके द्वीप क्रमसे जगतीसे ५००, ५००, ५५० व ६०० योजन अन्तरालपर अवस्थित है और १००, ५५,५० व २५ योजन विस्तार युक्त है। (ति. प./४/२४८०-२४८२); (ह.पु./५/४७७-४७८); (त्रि. सा./९१४); (ह. पु. की अपेक्षा इनका विस्तार क्रमसे १००, ५०, ५० व २५ योजन है) लोक विभागके अनुसार वे जगतीसे ५००, ५५०, ५००, ६०० योजन अन्तराल पर स्थित है तथा १००, ५०, १००,२५ योजन विस्तार युक्त है। (ति. प /४/२४९१-२४९४), (ज. प./१०/४९-५१) इन कुमानुष द्वीपोमें एक जाँघवाला, शशकर्ण, बन्दरमुख आदि रूप आकृतियोंके धारक मनुष्य बसते हैं। (दे० म्लेच्छ/३) । धातकीखण्ड द्वीपकी दिशाओमे भी इस सागरमे इतने ही अर्थात् २४ अन्तर्द्वीप हैं। जिनमे रहनेवाले कुमानुष भी वैसे ही है। (ति. प /४/२४९०) ।

२. धातकीखण्ड निर्देश

१. लवणोदको वेष्टित करके ४००,००० योजन विस्तृत ये द्वितीय द्वीप हैं। इसके चारों तरफ भी एक जगती है। (ति. प./४/२५२७-२५३१), (रा. वा /३/३३/५/१९५/१४), (ह. पु /४८९); (ज. प./११-२) । २. इसकी उत्तर व दक्षिण दिशामें उत्तर-दक्षिण लम्बायमान दो **इष्वाकार** पर्वत है, जिनसे यह द्वीप पूर्व व पश्चिम रूप दो भागोमे विभक्त हो जाता है। (ति प./४/२५३२); (स. सि /३/३३/२२७/१); (रा. वा./३/३३/६/१९५/२५); (ह. पु./५/४९४); (त्रि सा./९२५), (ज. प /११/३) प्रत्येक पर्वतपर ४ कूट है। प्रथम कूटपर जिनमन्दिर है और शेषपर व्यन्तर देव रहते है। (ति. प /४/२५३३) । ३. इस द्वीपमें दो रचनाएँ है—पूर्व धातकी और पश्चिम धातकी। **दोनोंमें पर्वत, क्षेत्र, नदी, कूट आदि सब जम्बूद्वीपके समान है**। (ति. प /४/२५४१-२५४५); (स. सि./३/३३/२२७/१), (रा. वा./३/३३/१/१९४/३१), (ह. पु /५/१६५,४९६-४९७); (ज. प./११/३८) जम्बू व शाल्मली वृक्षको छोडकर शेष सबके नाम भी वही है। (ति. प /४/२५५०), (रा. वा /३/३३/५/१९५/१६), सभीका कथन जम्बूद्वीपवत् है। (ति. प./४/२७१५) । ४. दक्षिण **इष्वाकारके दोनो तरफ दो भरत हैं** तथा उत्तर इष्वाकारके दोनो तरफ दो ऐरावत है। (ति. प./४/२५५२), (स. सि /३/३३/२२७/४) । ५ तहाँ सर्व कुल पर्वत तो दोनो सिरोंपर समान विस्तारको धरे **पहियेके अरोंवत् स्थित है** और क्षेत्र उनके मध्यवर्ती छिद्रोंवत् है। जिनके अभ्यन्तर

भागका विस्तार कम व बाह्य भागका विस्तार अधिक है। (ति. प./४/२५५३); (स. सि./३/३३/२२७/६); (रा. वा./३/३३/६/१९६/४); (ह. पु./५/४९८); (त्रि. सा./९२७)। ६. तहाँ भी सर्व कथन पूर्व व पश्चिम दोनों धातकी खण्डोंमें जम्बूद्वीपवत् है। विदेह क्षेत्रके बहु मध्य भागमें पृथक्-पृथक् सुमेरु पर्वत हैं। उनका स्वरूप तथा उनपर स्थित जिन भवन आदिका सर्व कथन जम्बूद्वीपवत् है। (ति. प./४/२५७५-२५७६); (रा. वा./३/३३/६/१९५/२८); (ह पु./ ५/४९४ (ज. प./४/६५)। इन दोनोंपर भी जम्बूद्वीपके सुमेरुवत् पाण्डुक आदि चार वन हैं। विशेषता यह है कि यहाँ भद्रशालसे ५०० योजन ऊपर नन्दन, उससे ५५५०० योजन सौमनस वन और उससे २८००० योजन ऊपर पाण्डुक वन है। (ति. प./४/२५८४-२५-८८); (रा. वा./३/३३/६/१९५/३०); (ह. पु./५/५१८-५१९);(ज. प.११/ २२-२८)पृथिवी तलपर विस्तार ९४०० योजन है, ५०० योजन ऊपर जाकर नन्दन वनपर ९३५० योजन रहता है। तहाँ चारों तरफसे युगपत् ५०० योजन सुकड़कर ८३५० योजन ऊपर तक समान विस्तारसे जाता है। तदनन्तर ४५५०० योजन क्रमिक हानि सहित जाता हुआ सौमनस वनपर ३८०० योजन रहता है तहाँ चारों तरफसे युगपत् ५०० योजन सुकड़कर २८०० योजन रहता है, ऊपर फिर १०,००० योजन समान विस्तारसे जाता है तदनन्तर १८००० योजन क्रमिक हानि सहित जाता हुआ शीर्षपर १००० योजन विस्तृत रहता है। (ह. पु/५/५२०-५३०)। ७. जम्बूद्वीपके शाल्मली वृक्षवत् यहाँ दोनों कुरुओमें दो-दो करके कुल चार धातकी (आँवलेके) वृक्ष स्थित हैं। प्रत्येक वृक्षका परिवार जम्बूद्वीपवत् १४०१२० है। चारो वृक्षोंका कुल परिवार ५६०४८० है। (विशेष दे० लोक/३/१३) इन वृक्षोंपर इस द्वीपके रक्षक प्रभास व प्रियदर्शन नामक देव रहते है। (ति. प./४/२६०१-२६०३); (स. सि./३/३३/२२७/७), (रा. वा./ ३/३३/१९६/३); (त्रि. सा/९३४)। ८ इस द्वीपमें पर्वतों आदिका प्रमाण निम्न प्रकार है।—मेरु २, इष्वाकार २, कुल गिरि १२; विजयार्ध ६८, नाभिगिरि ८, गजदन्त ८; यमक ८, काँचन शैल ४००; दिग्गजेन्द्र पर्वत १६; वक्षार पर्वत ३२; वृषभगिरि ६८; क्षेत्र या विजय ६८ (ज प्र./११/८१) कर्मभूमि ६; भोगभूमि १२; (ज. प./११/७६) महानदियाँ २८; विदेह क्षेत्रकी नदियाँ १२८; विभंगा नदियाँ २४। द्रह ३२; महानदियों व क्षेत्र नदियोंके कुण्ड १५६; विभंगाके कुण्ड २४; धातकी वृक्ष २; शाल्मली वृक्ष २ हैं। (ज. प./११/ २६-३८)। (ज. प./११/७५-८१) में पुष्करार्धकी अपेक्षा इसी प्रकार कथन किया है।)

३. कालोद समुद्र निर्देश

१. धातकी खण्डको घेरकर ८००,००० योजन विस्तृत वलयाकार कालोद समुद्र स्थित है। जो सर्वत्र १००० योजन गहरा है। (ति. प./४/ २७१८-२७१९); (रा वा./३/३३/६/१९६/५); (ह. पु/५/५६२); (ज प./११/४३)। २ इस समुद्रमें पाताल नहीं है। (ति. प./४/ १७१९), (रा. वा/३/३२/८/१९४/१३); (ज. प./११/४४)। ३. इसके अभ्यन्तर व बाह्य भागमें लवणोदवत् दिशा, विदिशा, अन्तरदिशा व पर्वतोके प्रणिधि भागमें २४,२४ अन्तर्द्वीप स्थित है। (ति. प/४/ १७२०), (ह. पु/५/५६७-५७२+५७५); (त्रि सा./९१३), (ज. प. ११/४६) वे दिशा विदिशा आदि वाले द्वीप क्रमसे तटसे ५००, ६५०, ५५० व ६५० योजनके अन्तरसे स्थित है तथा २००, १००, ५०, ५० योजन है। (ति. प/४/२७२२-२७२५) मतान्तरसे इनका अन्तराल क्रमसे ५००, ५५०, ६०० व ६५० है तथा विस्तार लवणोद वालोकी अपेक्षा दूना अर्थात् २००, १००० व ५० योजन है। (ह. पु./५/५७४)।

४. पुष्कर द्वीप

१. कालोद समुद्रको घेरकर १६००,००० के विस्तार युक्त पुष्कर द्वीप स्थित है। (ति. प/४/२७४४); (रा. वा./३/३३/६/१९६/८), (ह.पु./५/५७६); (ज. प/११/८७)। २. इसके बीचो-बीच स्थित कुण्डलाकार मानुषोत्तर पर्वतके कारण इस द्वीपके दो अर्ध भाग हो गये हैं, एक अभ्यन्तर और दूसरा बाह्य। (ति. प./४/२७४८); (रा. वा./३/३४/६/१९७/७), (ह. पु./५/५७७); (त्रि. सा./९३७); (ज. प./११/५८)। अभ्यन्तर भागमे मनुष्यों-की स्थिति है पर मानुषोत्तर पर्वतको उल्लंघकर बाह्य भागमें जानेकी उनकी सामर्थ्य नही है,(दे० मनुष्य/४/१)।(दे० चित्र सं. ३६, पृ. ४६४)।३.अभ्यन्तर पुष्करार्ध मे धातकी खण्डवत् ही दो इष्वाकार पर्वत हैं जिनके कारण यह पूर्व व पश्चिमके दो भागोंमे विभक्त हो जाता है। दोनो भागोमें धातकी खण्डवत् रचना है। (त. सू./३/३४), (ति. प./४/२७८४-२७८५); (ह. पु./५/५७८)। धातकी खण्डके समान यहाँ ये सब कुलगिरि तो पहियेके अरोंवत् समान विस्तारवाले और क्षेत्र उनके मध्य छिद्रोमें हीनाधिक विस्तारवाले है। दक्षिण इष्वाकारके दोनों तरफ दो भरत क्षेत्र और इष्वाकारके दोनों तरफ दो ऐरावत क्षेत्र है। क्षेत्रों, पर्वतो आदिके नाम जम्बूद्वीपवत् है। (ति प/४/२७९४-२७९६), (ह. पु./५/५७९)। ४. दोनों मेरुओंका वर्णन धातकी मेरुओंवत् है। (ति. प./४/२८१२); (त्रि. सा/६०९), (ज प/४/६४)। ५. मानुषोत्तर पर्वतका अभ्यन्तर भाग दीवारकी भाँति सीधा है, और बाह्य भागमें नीचे-से ऊपर तक क्रमसे घटता गया है। भरतादि क्षेत्रोंकी १४ नदियों-के गुजरनेके लिए इसके मूलमे १४ गुफाएँ है। (ति. प./४/ २७५१-२७५२); (ह पु/५/५९५-५९६); (त्रि. सा./९३७)। ६ इस पर्वतके ऊपर २२ कूट हैं।—तहाँ पूर्वादि प्रत्येक दिशामे तीन-तीन कूट है। पूर्वी विदिशाओमे दो-दो और पश्चिमी विदिशाओंमे एक-एक कूट है। इन कूटोकी अग्रभूमिमे अर्थात् मनुष्यलोककी तरफ चारों दिशाओंमे ४ सिद्धायतन कूट है। (ति. प./४/-२७६५-२७७०); (रा वा./३/३४/६/१९७/१२); (ह. पु/५/५९८-६०१)। सिद्धायतन कूटपर जिनभवन है और शेषपर सपरिवार व्यन्तर देव रहते है। (ति प./४/२७७५) मतान्तरकी अपेक्षा नैॠत्य व वायव्य दिशावाले एक-एक कूट नही है। इस प्रकार कुल २० कूट हैं।(ति. प./४/२७८३);(त्रि. सा/९४०)(दे० चित्र ३६ पृष्ठ स. ४६४)।७.इसके ४ कुरुओंके मध्य जम्बू वृक्षवत् सपरिवार ४ पुष्कर वृक्ष हैं। जिनपर सम्पूर्ण कथन जम्बूद्वीपके जम्बू व शाल्मली वृक्षवत् हैं। (स. सि./३/३४/२२८/४); (रा. वा./३/३४/५/१९७/४); (त्रि. सा./ ९३४)। ८. पुष्करार्ध द्वीपमे पर्वत क्षेत्रादिका प्रमाण बिलकुल धातकी खण्डवत् जानना (दे० लोक/४/२)।

५. नन्दीश्वर द्वीप

१. अष्टम द्वीप नन्दीश्वर द्वीप है। (दे० चित्र सं. ३८, पृ. ४६५)। उसका कुल विस्तार १६३८४००,००० योजन प्रमाण है। (ति प./५/५२-५३); (रा. वा./३/ ३५/१९८/४), (ह. पु/ ५/६४७); (त्रि. सा/९६६)। २. इसके बहुमध्य भागमे पूर्व दिशाकी ओर काले रंगका एक-एक अंजनगिरि पर्वत है। (ति प./५/५७), (रा वा./३/-/१९८/७), (ह. पु./-५/६५२); (त्रि. सा./९६७)। ३. उस अंजनगिरिके चारो तरफ १००,००० योजन छोड़कर ४ वापियाँ हैं। (ति. प/५/६०), (रा. वा./३/३५/-/१९८/९), (ह पु/५/६५५), (त्रि. सा./९७०)। चारो वापियोका भीतरी अन्तराल ६५०४५ योजन है और बाह्य अन्तर २२३६६१ योजन है (ह. पु/५/६६६-६६८)। ४. प्रत्येक

चित्र सं० - ३६

मानुषोत्तर पर्वत

दृष्टिभेद :—२२ की बजाय २० कूट हैं। नैऋत्य व वायव्य दिशा वाले कूट नहीं हैं।

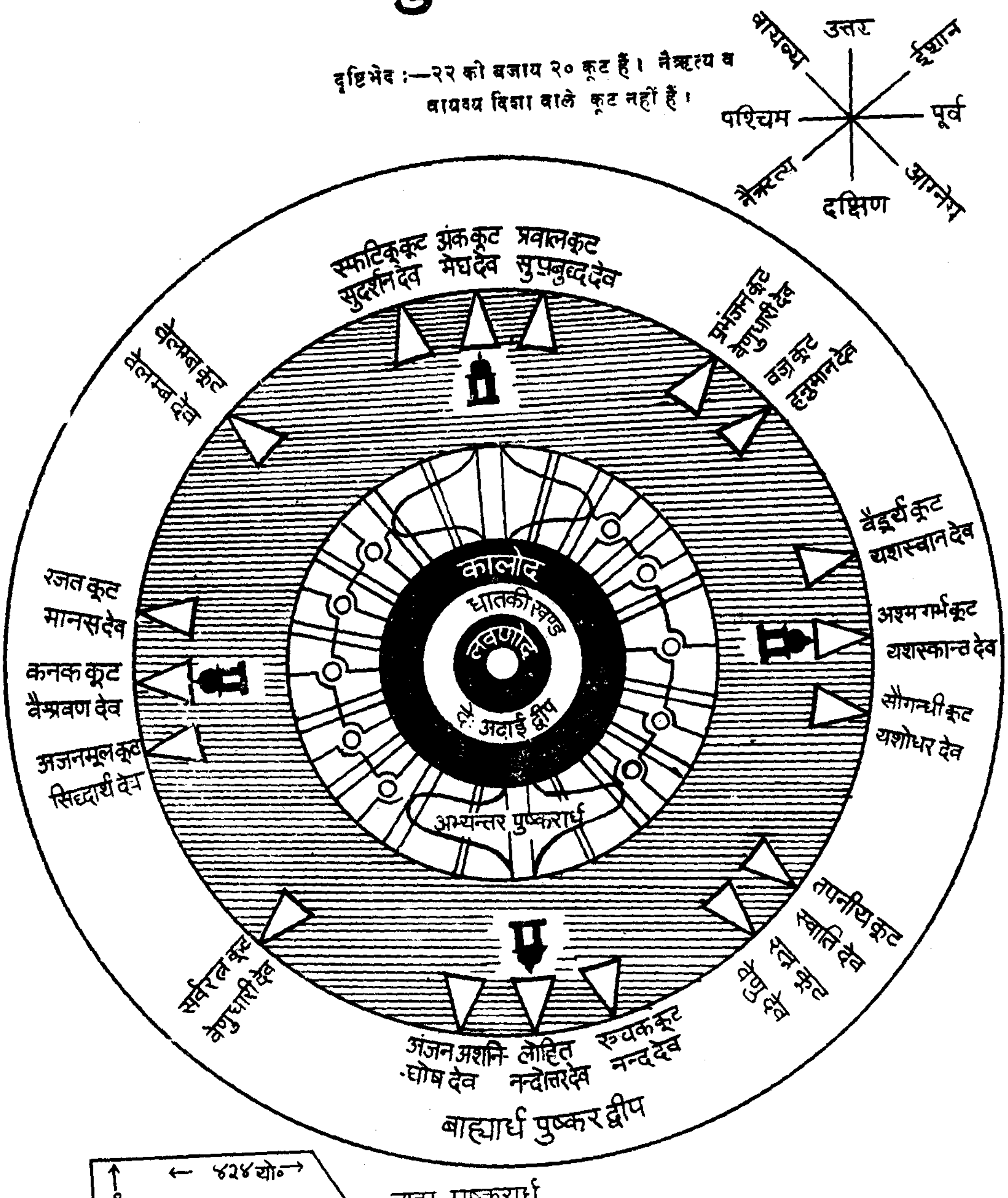

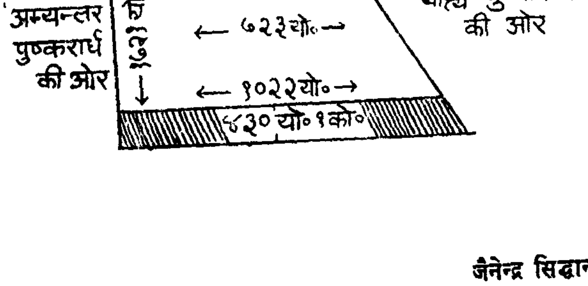

चित्र सं०-३८

नन्दीश्वर द्वीप

दृष्टिभेद :—प्रत्येक वापीके प्रत्येक कोण पर एक एक करके चार रतिकर हैं। परन्तु चैत्यालय बाह्य कोणों वाले दो रतिकरों पर ही हैं। ———
वापियोंके नामोंमें अन्तर।
—(दे० लोक/५.११)

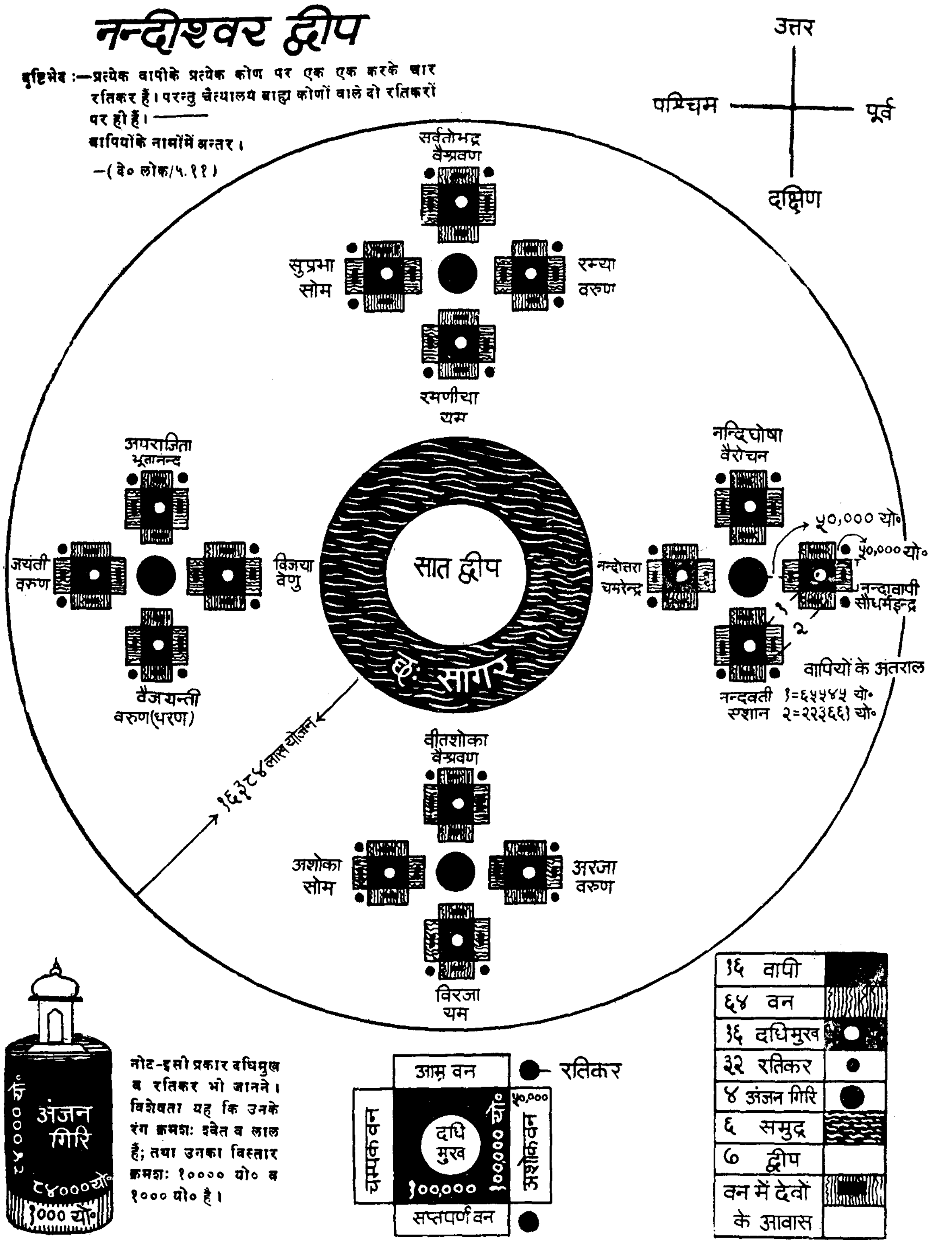

नोट-इसी प्रकार दधिमुख व रतिकर भी जानने। विशेषता यह कि उनके रंग क्रमशः श्वेत व लाल हैं; तथा उनका विस्तार क्रमशः १०००० यो० व १००० यो० है।

वापीकी चारो दिशाओमें अशोक, सप्तच्छद, चम्पक और आम्र नामके चार वन हैं। (ति प/५/६३०), (रा वा/३/३५/-/१९८/२७), (ह. पु./५/६७१,६७२), (त्रि सा/९७१)। इस प्रकार द्वीपकी एक दिशामे १६ और चारों दिशाओमे ६४ वन है। इन सब पर अवतस आदि ६४ देव रहते है। (रा वा/३/३५/-/१९९/३), (ह पु/५/६८१)। ५ प्रत्येक वापीमे सफेद रंगका एक-एक दधिमुख पर्वत है। (ति प./५/६५), (रा वा./3/35/-/१९८/२५); (ह. पु./५/६६६), (त्रि. सा/९६७)। ६. प्रत्येक वापीके बाह्य दोनों कोनोंपर लालरगके दो रतिकर पर्वत हैं। (ति प./५/६७), (त्रि. सा./९६७)। लोक विनिश्चयकी अपेक्षा प्रत्येक द्रहके चारो कोनोपर चार रतिकर है। (ति. प/५/६९), (रा वा/३/३५/-/१९८/३१), (ह. पु./५/६७३)। जिनमन्दिर केवल बाहरवाले दो रतिकरोंपर ही होते है, अभ्यन्तर रतिकरोंपर देव क्रीडा करते है। (रा. वा./३/३५/-/१९८/३३)। ७. इस प्रकार एक दिशामे एक अजनगिरि, चार दधिमुख, आठ रतिकर ये सब मिलकर १३ पर्वत है। इनके ऊपर १३ जिनमन्दिर स्थित हैं। इसी प्रकार शेष तीन दिशाओमें भी पर्वत द्रह, वन व जिन मन्दिर जानना। [कुल मिलकर ५२ पर्वत, ५२ मन्दिर, १६ वापियाँ और ६४ वन है। (ति प/५/७० ७५), (रा.वा./३/३५/-(१९९/१), (ह पु./५/६७६)(नि.सा/९७३)। ८. अष्टाह्निक पर्वमे सौधर्म आदि इन्द्र व देवगण बडी भक्तिसे इन मन्दिरोंकी पूजा करते है। (ति. प/५/८३, १०२), (ह. पु/५/६८०), (त्रि. सा./९७५-९७६)। तहाँ पूर्व दिशामें कल्पवासी, दक्षिणमे भवनवासी, पश्चिममे व्यन्तर और उत्तरमे देव पूजा करते है। (ति. प/५/१००-१०१)।

६. कुण्डलवर द्वीप

१ ग्यारहवाँ द्वीप कुण्डलवर नामका है, जिसके बहुमध्य भागमे मानुषोत्तरवत् एक कुण्डलाकार पर्वत है। (ति प/५/११७), (ह. पु/६८६)। २. तहाँ पूर्वादि प्रत्येक दिशामे चार-चार कूट है। उनके अभ्यन्तर भागमें अर्थात् मनुष्यलोककी तरफ एक-एक सिद्धवर कूट है। इस प्रकार इस पर्वतपर कुल २० कूट है। (ति प./-५/१२०-१२१); (रा वा./३/३५/-/१९९/१२+१६); (त्रि. सा./-९४४)। जिनकूटोके अतिरिक्त प्रत्येकपर अपने-अपने कूटोके नामवाले देव रहते है। (ति प/५/१२५)। मतान्तरको अपेक्षा आठो दिशाओमें एक-एक जिनकूट है। (ति प/५/१२८)। ३. लोक विनिश्चयकी अपेक्षा इस पर्वतकी पूर्वादि दिशाओमें-से प्रत्येकमें चार-चार कूट है। पूर्व व पश्चिम दिशावाले कूटोकी अग्रभूमिमें द्वीपके अधिपति देवोके दो कूट है। इन दोनो कूटोके अभ्यन्तर भागोमें चारों दिशाओमे एक-एक जिनकूट है। (ति. प/५/१३०-१३६), (रा वा/३/३५/-/१९९/७), (ह. पु/५/६८९-६९८)। मतान्तरकी अपेक्षा उनके उत्तर व दक्षिण भागोमे एक-एक जिनकूट है। (ति. प/५/१४०)। (दे० सामनेवाला चित्र)।

७. रुचकवर द्वीप

१ तेरहवाँ द्वीप रुचकवर नामका है। उसमे बीचोबीच रुचकवर नामका कुण्डलाकार पर्वत है। (ति. प/५/१४१); (रा वा/3/-३५/-/१९९/२२); (ह. पु./५/६९९)। २ इस पर्वतपर कुल ४४ कूट है। (ति. प./५/१४४)। पूर्वादि प्रत्येक दिशामे आठ-आठ कूट है जिनपर दिक्कुमारियाँ देवियाँ रहती है, जो भगवान्के जन्म कल्याणकके अवसर पर माताकी सेवामें उपस्थित रहती है। पूर्वादि दिशाओंवाली आठ-आठ देवियाँ क्रमसे झारी, दर्पण, छत्र व चँवर धारण करती है। (ति प./५/१४५, १४८-१५६), (त्रि. सा./९४७+९५५-९५६) इन कूटोंके अभ्यन्तर भागमे चारो दिशाओमे चार महाकूट है तथा इनकी भी अभ्यन्तर दिशाओमे चार अन्य कूट है। जिनपर दिशाएँ स्वच्छ करने वाली तथा भगवान्का जातकर्म करनेवाली देवियाँ रहती है। इनके अभ्यन्तर भागमे चार सिद्धकूट है। (दे० चित्र स. ४०, पृ. ४६८)। किन्ही आचार्योंके अनुसार विदिशाओंमे भी चार सिद्धकूट है। (ति प./५/१६२-१६६), (त्रि सा/९४७,९५८-९५९)। ३. लोक विनिश्चयके अनुसार पूर्वादि चार दिशाओंमे एक-एक करके चार कूट है जिनपर दिग्गजेन्द्र रहते है। इन चारोके अभ्यन्तर भागमें चार दिशाओमें आठ-आठ कूट है जिनपर उपरोक्त माताकी सेवा करनेवाली ३२ दिक्कुमारियाँ रहती है। उनके बीचकी विदिशाओंमें दो-दो करके आठ कूट है, जिनपर भगवान्का जातकर्म करनेवाली आठ महत्तरियाँ रहती है। इनके अभ्यन्तर भागमें पुन पूर्वादि दिशाओंमें चार कूट है जिनपर दिशाएँ निर्मल करनेवाली देवियाँ रहती है। इनके अभ्यन्तर भागमें चार सिद्धकूट है। (ति. प./५/१६७-१७८), (रा. वा./३/३५/-१९९/२४), (ह पु/५/७०४-७२१)।(दे० चित्र सं. ४१, पृ ४६९)।

८. स्वयम्भूरमण समुद्र

अन्तिम द्वीप स्वयम्भूरमण है। इसके मध्यमें कुण्डलाकार स्वयंप्रभ पर्वत है। (ति. प./५/२३८); (ह. पु/५/७३०)। इस पर्वतके अभ्यन्तर भाग तक तिर्यंच नहीं होते, पर उसके परभागसे लेकर अन्तिम स्वयम्भूरमण सागरके अन्तिम किनारे तक सब प्रकारके तिर्यंच पाये जाते है। (दे० तिर्यंच/३/४-६)। (दे० चित्र सं. १२, पृ. ४४३)।

चित्र सं० -३८

कुण्डलवर पर्वत व द्वीप

दृष्टिभेद —विदिशाओं वाले सिद्धायतन कूटोंको कोई आचार्य मानते है और कोई नही। दे० लोक/५/१२

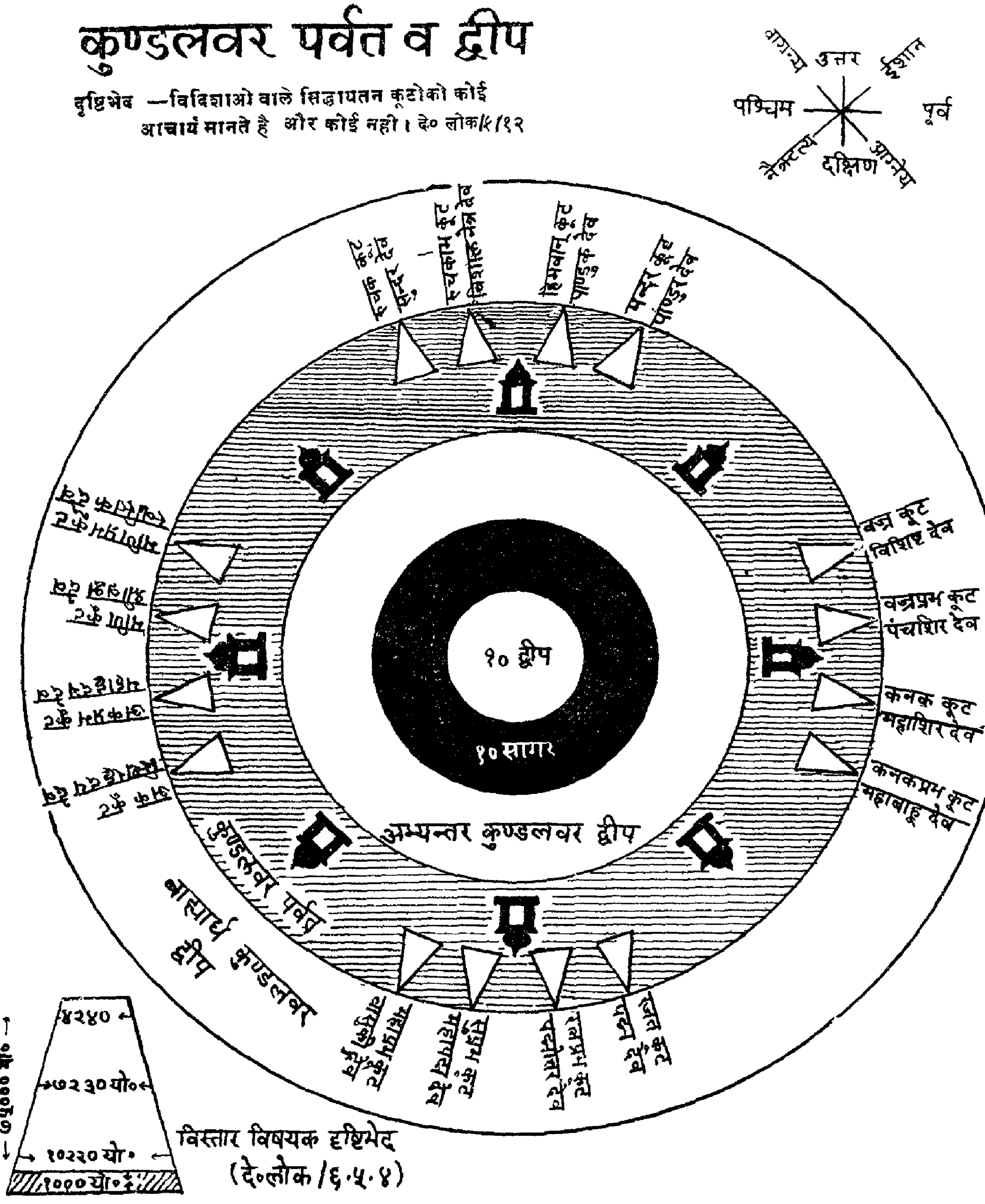

चित्र सं०-४०

रुचकवर पर्वत व द्वीप

दृष्टि सं०१

दृष्टिभेद —विदिशाओं वाले सिद्धायतन कूटोको कोई आचार्य मानते है और कोई नही।
कूटो व देवियोके नामोमे अन्तर। —(दे० लोक/५ १३)

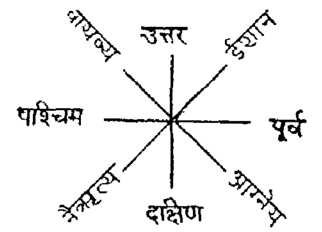

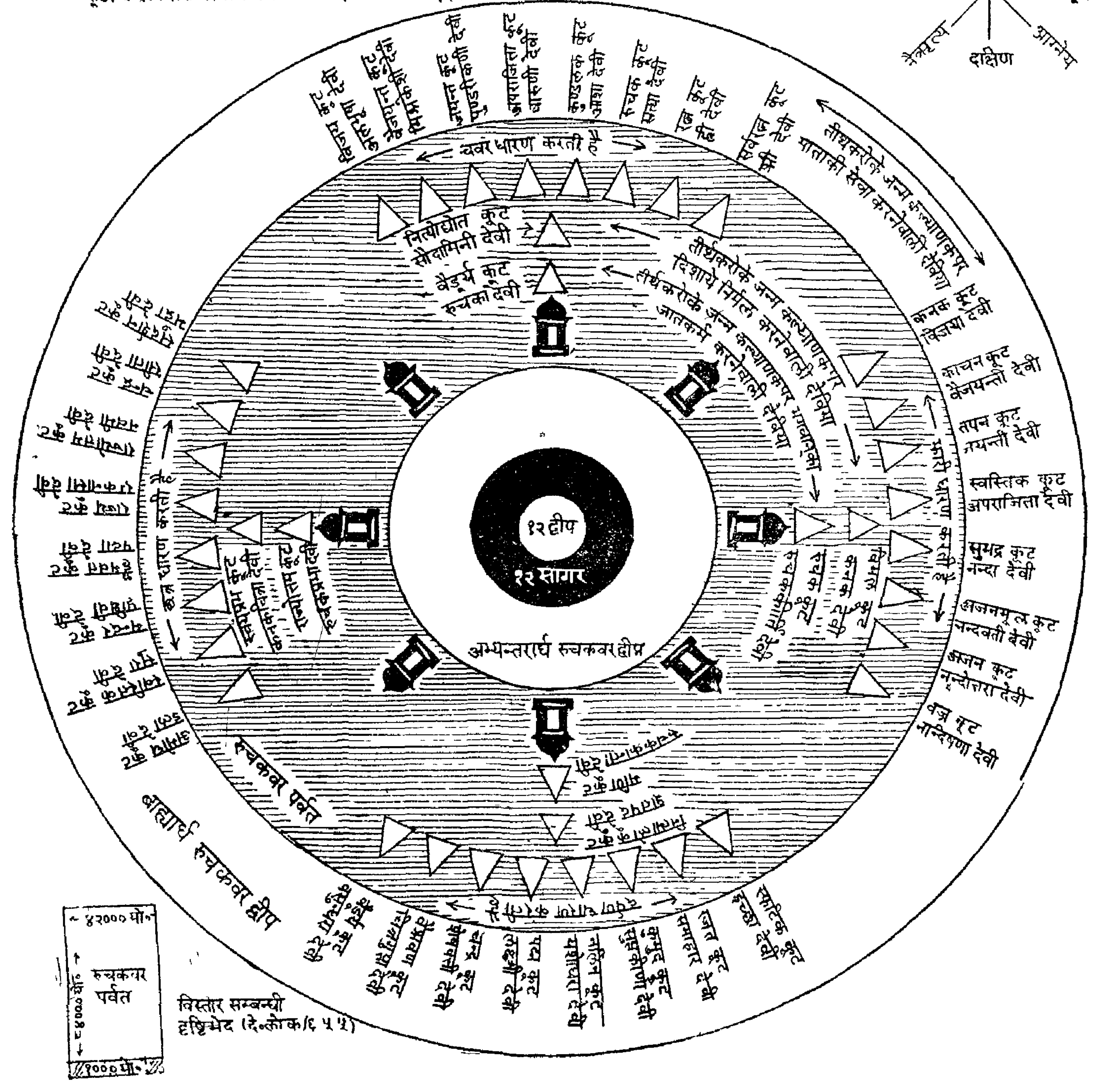

चित्र सं०-४१

रुचकवर पर्वत व द्वीप

दृष्टि नं०२

दृष्टिभेद — कूटो व देवियोके नामोमे अन्तर। —(दे० लोक/५.१३)

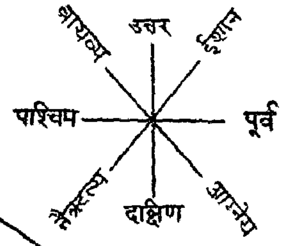

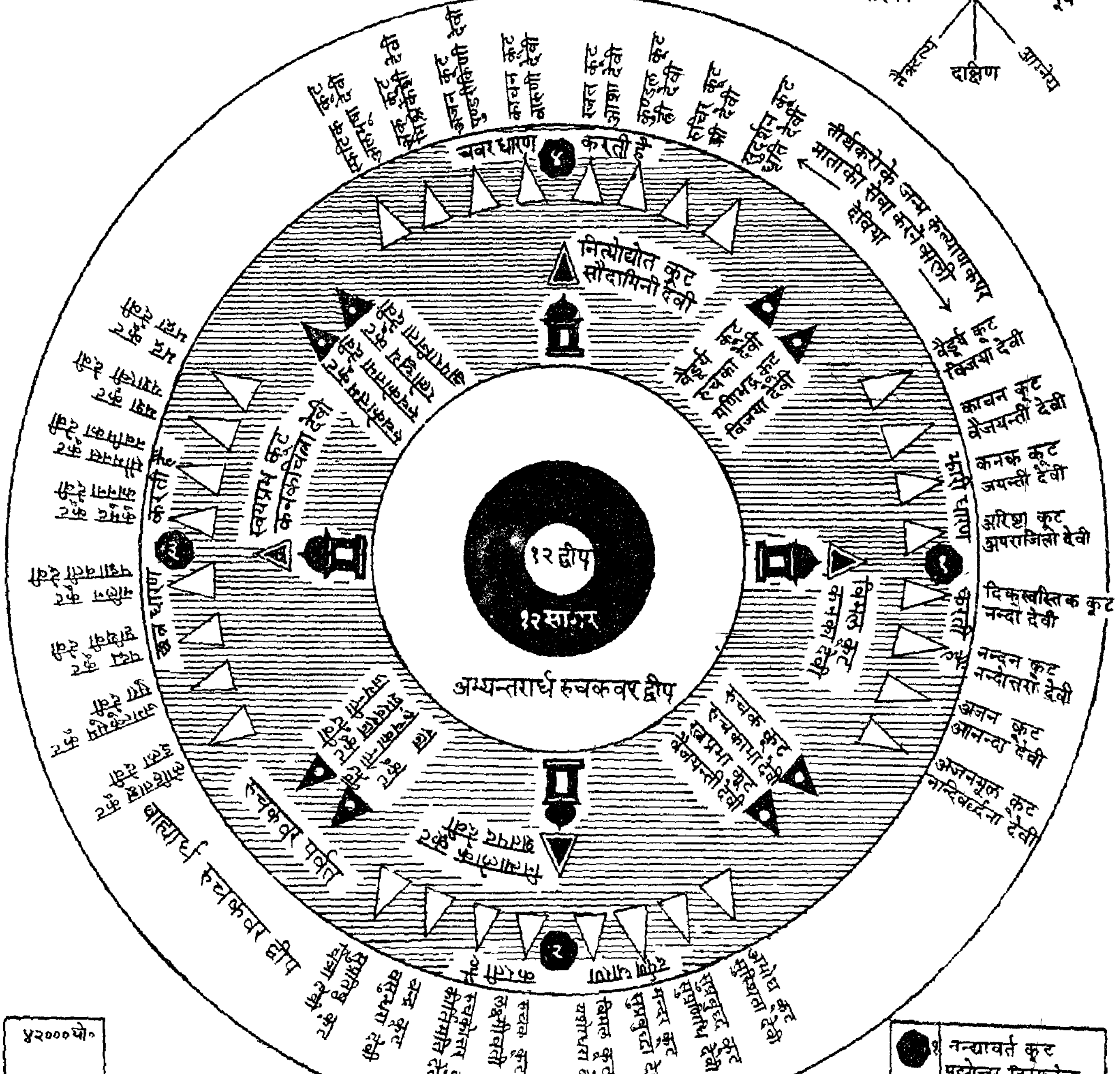

विस्तार सम्बन्धी
दृष्टिभेद-(दे०लोक/६.५५)

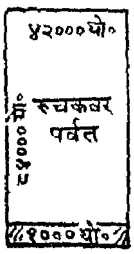

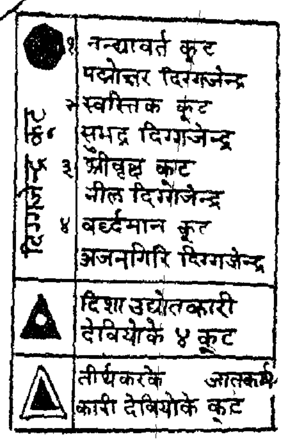

५. द्वीप पर्वतों आदिके नाम रस आदि

१. द्वीप समुद्रोंके नाम

१. मध्य भागसे प्रारम्भ करनेपर मध्यलोकमें क्रमसे १ जम्बू द्वीप; २. लवण सागर; धातकी खण्ड-कालोद सागर, ३. पुष्करवर द्वीप-पुष्करवर समुद्र, ४. वारुणीवर द्वीप-वारुणीवर समुद्र, ५. क्षीरवर द्वीप—क्षीरवर समुद्र, ६. घृतवर द्वीप—घृतवर समुद्र, ७. क्षौद्रवर (इक्षुवर) द्वीप—क्षौद्रवर (इक्षुवर) समुद्र; ८ नन्दीश्वर द्वीप—नन्दीश्वर समुद्र; ९ अरुणीवर द्वीप—अरुणीवर समुद्र, १०. अरुणाभास द्वीप—अरुणाभास समुद्र, ११. कुण्डलवर द्वीप—कुण्डलवर समुद्र; १२. शंखवर द्वीप—शंखवर समुद्र; १३. रुचकवर द्वीप—रुचकवर समुद्र; १४ भुजगवर द्वीप—भुजगवर समुद्र; १५. कुशवर द्वीप—कुशवर समुद्र; १६ क्रौंचवर द्वीप—क्रौंचवर समुद्र ये १६ नाम मिलते है। (मू आ/१०७४-१०७८); (स सि/३/७/२११/३ मे केवल नं. ६ तक दिये है), (रा. वा./३/७/२/१६१/३० मे नं. ८ तक दिये है); (ह पु/५/६१३-६२०); (त्रि. सा./३०४-३०७), (ज. प/११/८४-८६); २ संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाकर पुन एक जम्बूद्वीप है। (इसके आगे पुन: उपरोक्त नामोका क्रम चल जाता है।) ति प./५/१७६), (ह पु./५/१६६, ३९७), ३. मध्य लोकके अन्तसे प्रारम्भ करनेपर—१ स्वयंभूरमण समुद्र—स्वयम्भूरमण द्वीप, २. अहीन्द्रवर सागर—अहीन्द्रवर द्वीप; ३. देववर समुद्र—देववर द्वीप; ४. यक्षवर समुद्र—यक्षवर द्वीप, ५ भूतवर समुद्र—भूतवर द्वीप; ६. नागवर समुद्र—नागवर द्वीप, ७. वैडूर्य समुद्र—वैडूर्य द्वीप; ८ वज्रवर समुद्र—वज्रवर द्वीप; ९. कांचन समुद्र—काचन द्वीप, १०. रुप्यवर समुद्र—रुप्यवर द्वीप; ११. हिंगुल समुद्र—हिंगुल द्वीप; १२ अंजनवर समुद्र—अंजनवर द्वीप, १३. श्याम-समुद्रश्याम द्वीप, १४ सिन्दूर समुद्र—सिन्दूर द्वीप, १५ हरितास समुद्र—हरितास द्वीप; १६ मन.शिलसमुद्र—मन.शिलद्वीप। (ह. पु./५/६२२-६२५); (त्रि. सा./३०५-३०७)।

२. सागरोंके जलका स्वाद—चार समुद्र अपने नामोके अनुसार रसवाले, तीन उदक रस अर्थात् स्वाभाविक जलके स्वादसे संयुक्त, शेष समुद्र ईख समान रससे सहित है। तीसरे समुद्रमे मधुरूप जल है। वारुणीवर, लवणाब्धि, घृतवर और क्षीरवर, ये चार समुद्र प्रत्येक रस; तथा कालोद, पुष्करवर और स्वयम्भूरमण, ये तीन समुद्र उदकरस है। (ति प./५/२९-३०), (मू. आ/१०७९-१०८०); (रा वा./३/३२/८/१९४/१७), (ह. पु./५/६२८-६२९), (त्रि. सा./३१९), (ज प./११/९४-९५)।

२. जम्बू द्वीपके क्षेत्रोंके नाम

१. जम्बूद्वीप के महाक्षेत्रोंके नाम

जम्बूद्वीपमे ७ क्षेत्र है—भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत्, व ऐरावत। (दे० लोक/३/१/२)।

२. विदेह क्षेत्रके ३२ क्षेत्र व उनके प्रधान नगर

१ क्षेत्रों सम्बन्धी प्रमाण—(ति. प./४/२२०६), (रा. वा./३/१०/१३/१७८/१७६/१५+१७७/८,१९,२७), (ह. पु/५/२४४-२५२) (त्रि सा./६८७-६९०), (ज. प./का पूरा ८ वाँ व ९ वॉ अधिकार)। २. नगरी सम्बन्धी प्रमाण—(ति. प./४/२२९३-२३०१); (रा. वा./३/१०/१३/१७६/१९+१७७/९,२०,२८), (ह. पु/५/२५७-२६४), (त्रि. सा./७१२-७१५), (ज. प./का पूरा ८-९ वॉ अधिकार)।

अवस्थान	क्रम	क्षेत्र	नगरी
उत्तरी पूर्व विदेहमें पश्चिमसे पूर्वकी ओर	१	कच्छा	क्षेमा ति.प./४/२२६८
	२	सुकच्छा	क्षेमपुरी
	३	महाकच्छा	रिष्टा (अरिष्टा)
	४	कच्छावती	अरिष्टपुरी
	५	आवर्ता	खड्गा
	६	लागलावर्ता	मंजूषा
	७	पुष्कला	औषध नगरी
	८	पुष्कलावती (पुण्डरीकनी)	पुण्डरीकिणी
दक्षिण पूर्व विदेहमें पूर्वसे पश्चिमकी ओर	१	वत्सा	सुसीमा
	२	सुवत्सा	कुण्डला
	३	महावत्सा	अपराजिता
	४	वत्सकावती (वत्सवत्)	प्रभकरा (प्रभाकरी)
	५	रम्या	अंका (अंकावती)
	६	सुरम्या (रम्यक)	पद्मावती
	७	रमणीया	शुभा
	८	मगलावती	रत्नसंचया
दक्षिण पश्चिम विदेहमें पूर्वसे पश्चिमकी ओर	१	पद्मा	अश्वपुरी
	२	सुपद्मा	सिंहपुरी
	३	महापद्मा	महापुरी
	४	पद्मकावती (पद्मवत्)	विजयपुरी
	५	शखा	अरजा
	६	नलिनी	विरजा
	७	कुमुदा	शोका
	८	सरित	वीतशोका
उत्तरी पश्चिम विदेहमें पश्चिमसे पूर्वकी ओर	१	वप्रा	विजया
	२	सुवप्रा	वैजयन्ता
	३	महावप्रा	जयन्ता
	४	वप्रकावती (वप्रावत)	अपराजित
	५	गधा (वल्गु)	चक्रपुरी
	६	सुगन्धा-सुवल्गु	खड्गपुरी
	७	गन्धिला	अयोध्या
	८	गन्धमालिनी	अवध्या

३. जम्बू द्वीपके पर्वतोंके नाम

१. कुलाचल आदिके नाम

१. जम्बूद्वीपमें छह कुलाचल हैं—हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी (दे० लोक/३/१०२)। २. सुमेरु पर्वतके अनेको नाम है। (दे० सुमेरु) ३. कांचन पर्वतोंका नाम कांचन पर्वत ही है। विजयार्ध पर्वतोंके नाम प्राप्त नहीं है। शेषके नाम निम्न प्रकार हैं—

२. नाभिगिरि तथा उनके रक्षक देव

नं०	क्षेत्रका नाम	पर्वतोंके नाम				देवोंके नाम
		ति. प./४/१७०४, १७४५ २३३५, २३५०	रा.वा./३/१०/७/१७२/२१ + १०/१७२/३१ + १६/१८१/१७ + १६/१८१/२३	ह.पु /५/१६१; त्रि. सा /७१९	ज प./३/२०९	ति.प./पूर्वोक्त रा वा./ " ह पु./५/१६४ त्रि.सा./७१९
१	हैमवत	शब्दवान्	श्रद्धावान्	श्रद्धावान्	श्रद्धावती	शाती (स्वाति)
२	हरि	विजयवान्	विकृतवान्	विजय-वान्	निकटा-वती	चारण (अरुण)
३	रम्यक	पद्म	गन्धवान्	पद्मवान्	गन्धवती	पद्म
४	हैरण्यवत	गन्धमादन	माल्यवान्	गंधवान्	माल्य-वान्	प्रभास

३. विदेह वक्षारोंके नाम

(ति प./४/२२१०-२२१४); (रा. वा./३/१०/१३/१७५/३२ + १७७/६, १७,२५); (ह. पु /५/२२८-२३२); (त्रि सा /६६६-६६९); (ज. प./ ८वाँ ९वाँ अधिकार)।

अवस्थान	क्र	ति. प.	शेष प्रमाण
उत्तरीय पूर्व विदेहमें पश्चिमसे पूर्व की ओर	१	चित्रकूट	चित्रकूट
	२	नलिनकूट	पद्मकूट
	३	पद्मकूट	नलिनकूट
	४	एक शैल	एक शैल
दक्षिण पूर्व विदेहमें पूर्वसे पश्चिमकी ओर	५	त्रिकूट	त्रिकूट
	६	वैश्रवणकूट	वैश्रवणकूट
	७	अजन शैल	अजन शैल
	८	आत्मांजन	आत्मांजन
दक्षिण अपर विदेहमें पूर्वसे पश्चिमकी ओर	९	श्रद्धावान्	
	१०	विजयवान्	
	११	आशीविष	आशीविष
	१२	सुखावह	सुखावह
उत्तर अपर विदेहमें पश्चिमसे पूर्व-की ओर	१३	चन्द्रगिरि (चन्द्र माल)	चन्द्रगिरि
	१४	सूर्यगिरि (सूर्य माल)	सूर्यगिरि
	१५	नागगिरि (नाग माल)	नागगिरि
	१६	देवमाल	

नोट—न. ९ पर ज प. में श्रद्धावती। न. १० पर रा. वा. में विकृतवान् त्रि. सा मे विजयवान् और ज. प में विजटावती है। नं १६ पर ह. पु में मेघमाल है।

४. गजदन्तोंके नाम

वायव्य आदि दिशाओंमें क्रमसे सौमनस, विद्युत्प्रभ, गन्धमादन, व माल्यवान् ये चार है। (ति. प./४/२०१५) मतान्तरसे गन्धमादन, माल्यवान्, सौमनस व विद्युत्प्रभ ये चार है। (रा. वा./३/१०/१३/१७३/२७,२८ + १७५/११,१७); (ह. पु./५/२१०-२१२); (त्रि. सा./६६३)।

५. यमक पर्वतोंके नाम

अवस्थान	क्र	दिशा	ति प /४/२०७७-२१२४ ह.पु /५/१९१-१९२ त्रि.सा./६५४-६५५	रा वा./३/१०/१३/१७४/२५;१७५/२६ ज प /६/१५,१८ ८७
देवकुरु	१	पूर्व	यमकूट	चित्रकूट
	२	पश्चिम	मेघकूट	विचित्र कूट
उत्तरकुरु	३	पूर्व	चित्रकूट	यमकूट
	४	पश्चिम	विचित्र कूट	मेघकूट

६. दिग्गजेन्द्रोंके नाम

देवकुरुमें सीतोदा नदीके पूर्व व पश्चिममें क्रमसे स्वस्तिक, अजन, भद्रशाल वनमे सीतोदाके दक्षिण व उत्तर तटपर अजन व कुमुद; उत्तरकुरुमे सीता नदीके पश्चिम व पूर्वमे अवतंस व रोचन, तथा पूर्वी भद्रशाल वनमे सीता नदीके उत्तर व दक्षिण तटपर पद्मोत्तर व नील नामक दिग्गजेन्द्र पर्वत है। (ति. प./४/२१०३ + २१२२ + २१३० + २१३४), (रा वा /३/१०/१३/१७८/९), (ह पु./५/२०५-२०९), (त्रि. सा./६६१-६६२), (ज. प./४/७४-७५)।

४. जम्बूद्वीपके पर्वतीय कूट व तन्निवासी देव

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
	१. भरत विजयार्ध—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर) (ति. प /४/१४८ + १६७), (रा वा./३/१०/४/१७२/१०), (ह. पु /५/२६), (त्रि सा /७३२-७३३), (ज प /२/४९)।				
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	६	पूर्णभद्र*	पूर्णभद्र*
२	(दक्षिणार्ध) भरत	(दक्षिणार्ध) भरत	७	तिमिस्र गुह्य	कृतमाल
३	खण्ड प्रपात	नृत्यमाल	८	(उत्तरार्ध)भरत	(उत्तरार्ध)भरत
४	मणिभद्र*	मणिभद्र	९	वैश्रवण	वैश्रवण
५	विजयार्ध कुमार	विजयार्ध कुमार			

* नोट—त्रि. सा. में मणिभद्रके स्थानपर पूर्णभद्र और पूर्णभद्रके स्थान पर मणिभद्र है।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
	२. ऐरावत विजयार्ध – (पूर्वसे पश्चिमकी ओर) (ति प /४/२३६७), (ह पु /५/११०-११२), (त्रि. सा./७३३-७३५)				
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	६	पूर्णभद्र	पूर्णभद्र
२	(उत्तरार्ध) ऐरावत	(उत्तरार्ध) ऐरावत	७	तिमिस्र गुह्य*	नृत्यमाल*
३	खण्ड प्रपात*	कृतमाल*	८	(दक्षिणार्ध)ऐरावत	(दक्षिणार्ध) ऐरावत
४	मणिभद्र	मणिभद्र			
५	विजयार्ध कुमार	विजयार्ध कुमार	९	वैश्रवण	वैश्रवण

* नोट—त्रि. सा में नं. ३ व ७ पर क्रमसे खण्डप्रपात व तिमिस्र गुह्य नाम कूट और कृतमाल व नृत्यमाल देव बताये है।

३. विदेहके ३२ विजयार्ध—(ति. प /४/२२६०, २३०२-२३०३)

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	देवोके नाम	६	मणिभद्र	देवोके नाम
२	(दक्षिणार्ध)स्वदेश	भरत विजयार्ध	७	तिमिस्रगुह्य	भरत विजयार्ध
३	खण्ड प्रपात	वत् जानने	८	(उत्तरार्ध) स्वदेश	वत् जानने
४	पूर्णभद्र		९	वैश्रवण	
५	विजयार्धकुमार				

४. हिमवान्—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर)—

(ति प./४/१६३२+१६५१), (रा वा /३/११/२/१८२/२४), (ह॰ पु./५/५३-५५), (त्रि. सा./७२१), (ज. प./३/४०]

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	७	रोहितास्या	रोहितास्या देवी
२	हिमवान्	हिमवान्			
३	भरत	भरत	८	सिन्धु	सिन्धु देवी
४	इला	इलादेवी	९	सुरा	सुरा देवी
५	गंगा	गंगादेवी	१०	हैमवत	हैमवत
६	श्री	श्रीदेवी	११	वैश्रवण	वैश्रवण

५ महाहिमवान् (पूर्वसे पश्चिमकी ओर)

(ति. प /४/१७२४–१७२६); (रा. वा /३/११/४/१८३/४); (ह. पु /५/७१–७२), (त्रि सा /७२४), (ज. प /३/४१) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिन मन्दिर	५	हरि (ह्री)	हरि (ह्री)
२	महाहिमवान्	महाहिमवान्	६	हरिकान्त	हरिकान्त
३	हैमवत	हैमवत	७	हरिवर्ष	हरिवर्ष
४	रोहित	रोहित	८	वैडूर्य	वैडूर्य

६ निषध पर्वत—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर)

(ति. प./४/१७५८–१७६०); (रा वा./३/११/६/१८३/१७), (ह. पु./५/८८–८९); (त्रि. सा./७२५); (ज. प./३/४२) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	६	विजय*	विजय*
२	निषध	निषध	७	सीतोदा	सीतोदा
३	हरिवर्ष	हरिवर्ष	८	अपर विदेह	अपर विदेह
४	पूर्व विदेह*	पूर्व विदेह*	९	रुचक	रुचक
५	हरि (ह्री)*	हरि (ह्री)*			

*नोट—रा. वा. व त्रि सा मे नं ६ पर धृत या धृति नामक कूट व देव कहे है। तथा ज. प. मे नं ४, ५, ६ पर क्रमसे धृति, पूर्वविदेह और हरिविजय नामक कूटदेव कहे है।

७ नील पर्वत—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर)

(ति प /४/२३२८+२३३१); (रा.वा /३/११/८/१८३/२४), (ह. पु /५/९९–१०१), (त्रि. सा /७२६), (ज. प./३/४३) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	६	नारी	नारी
२	नील	नील	७	अपर विदेह	अपर विदेह
३	पूर्व विदेह	पूर्व विदेह	८	रम्यक	रम्यक
४	सीता	सीता	९	अपदर्शन	अपदर्शन
५	कीर्ति	कीर्ति			

नोट—रा वा. व त्रि. सा. मे नं. ६ पर नरकान्ता नामक कूट व देवी कहा है।

८. रुक्मि पर्वत—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर)

(ति प /४/२३४१+२३४३); (रा वा /३/११/१०/१८३/३१); (ह.पु./५/१०२–१०४), (त्रि. सा /७२७); (ज. प./३/४४) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	५	बुद्धि	बुद्धि
२	रुक्मि (रूप्य)	रुक्मि (रूप्य)	६	रूप्यकूला	रूप्यकूला
३	रम्यक	रम्यक	७	हैरण्यवत	हैरण्यवत
४	नरकान्ता*	नरकान्ता*	८	मणिकाचन (कांचन)	मणिकाचन (काचन)

नोट—रा. वा. व त्रि. सा में नं. ४ पर नारी नामक कूट व देव रहता है।

९ शिखरी पर्वत—(पूर्वसे पश्चिमकी ओर)

(ति. प./४/२३५३–२३५६+२३४३); (रा. वा./३/११/१२/१८४/४), (ह. पु /५/१०५–१०८), (त्रि. सा./७२८), (ज. प /३/४५) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	७	काचन (सुवर्ण)*	काचन*
२	शिखरी	शिखरी	८	रक्तवती*	रक्तवती देवी
३	हैरण्यवत	हैरण्यवत	९	गन्धवती* (गान्धार)	गन्धवती देवी*
४	रस देवी		१०	रैवत (ऐरावत)*	रैवत*
५	रक्ता	रक्तादेवी	११	मणिकाचन*	मणिकाचन*
६	लक्ष्मी*	लक्ष्मी देवी			

* नोट—रा. वा. में नं. ६, ७, ८, ९, १०, ११ पर क्रमसे प्लक्षणकूला, लक्ष्मी, गन्धदेवी, ऐरावत, मणि व कांचन नामक कूट व देव देवी कहे है।

१० विदेहके १६ वक्षार—

(ति॰ प./४/२३१०), (रा वा./३/१०/१३/१७७/११), (ह. पु./–५/२३४–२३५), (त्रि सा./७४३) ।

क्रम	कूट	देव	क्रम	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	३	पहले क्षेत्रका नाम	कूट सदृश नाम
२	स्व वक्षारका नाम	कूट सदृश नाम	४	पिछले क्षेत्रका नाम	कूट सदृश नाम*

* नोट—ह पु मे नं. ४ कूटपर दिक्कुमारी देवीका निवास बताया है।

११ सौमनस गजदन्त—(मेरुसे कुलगिरिकी ओर)

(ति. प /४/२०३१+२०४३–२०४४), (रा.वा./३/१०/१३/१७५/१३); (ह पु./५/२२१,२२७), (त्रि. सा./७३९) ।

(ति प., ह पु.; त्रि. सा.)			(रा. वा.)		
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर
२	सौमनस	सौमनस	२	सौमनस	सौमनस
३	देवकुरु	देवकुरु	३	देवकुरु	देवकुरु
४	मगल	मगल	४	मगलावत	मंगल
५	विमल	वत्समित्रा देवी	५	पूर्वविदेह	पूर्वविदेह
६	काचन	सुवत्सा (सुमित्रा देवी)	६	कनक	सुवत्सा
			७	काचन	वत्समित्रा
७	विशिष्ट	विशिष्ट	८	विशिष्ट	विशिष्ट

१२. विद्युत्प्रभ गजदन्त—(मेरुसे कुलगिरिकी ओर)

(ति. प./४/२०४५–२०४६+२०५३+२०५४); (रा. वा./३/१०/१३/१७५/१८), (ह. पु./५/२२२, २२७); (त्रि. सा./७३९–७४०)।

सं	कूट	देव	सं	कूट	देव
	(ति. प.; ह. पु., व त्रि. सा.)			(रा. वा.)	
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर
२	विद्युत्प्रभ	विद्युत्प्रभ	२	विद्युत्प्रभ	विद्युत्प्रभ
३	देवकुरु	देवकुरु	३	देवकुरु	देवकुरु
४	पद्म	पद्म	४	पद्म	पद्म
५	तपन	वारिषेणादेवी	५	विजय	वारिषेणादेवी
६	स्वस्तिक	बलादेवी*	६	अपर विदेह	बलादेवी
७	शतउज्ज्वल	शतउज्ज्वल	७	स्वस्तिक	स्वस्तिक
	(शतज्वाल)	(शतज्वाल)	८	शतज्वाल	शतज्वाल
८	सीतोदा	सीतोदा	९	सीतोदा	सीतोदा
९	हरि	हरि	१०	हरि	हरि

*नोट—ह. पु. में बलादेवीके स्थानपर अचलादेवी कहा है।

१३. गन्धमादन गजदन्त—(मेरुसे कुलगिरिकी ओर)

(ति. प./४/२०५७–२०५९); (रा. वा./३/१०/१३/१७३/२४); (ह. पु./५/२१७–२१८+२२७), (त्रि. सा./७४०–७४१)।

सं	कूट	देव	सं	कूट	देव
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	५	लोहित*	भोगवती
२	गन्धमादन	गन्धमादन	६	स्फटिक*	भोगहति
३	देवकुरु*	देवकुरु*			(भोगंकरा)
४	गन्धव्यास (गन्धमालिनी)	गन्धव्यास	७	आनन्द	आनन्द

*नोट—त्रि. सा. मे सं ३ पर उत्तरकुरु कहा है। और रा. वा. मे लोहितके स्थान पर स्फटिक व स्फटिकके स्थानपर लोहित कहा है।

१४. माल्यवान् गजदन्त—(मेरुसे कुलगिरिकी ओर)

(ति. प./४/२०६०–२०६२); (रा. वा./३/१०/१३/१७३/३०), (ह. पु./५/२१९–२२०+२२४); (त्रि. सा./७३८)।

सं	कूट	देव	सं	कूट	देव
	(ति. प., ह. पु.; त्रि. सा.)			(रा. वा.)	
१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर	१	सिद्धायतन	जिनमन्दिर
२	माल्यवान्	माल्यवान्	२	माल्यवान्	माल्यवान्
३	उत्तरकुरु	उत्तरकुरु	३	उत्तरकुरु	उत्तरकुरु
४	कच्छ	कच्छ	४	कच्छ	कच्छ
५	सागर	भोगवतीदेवी (सुभोगा)	५	विजय	विजय
६	रजत	भोगमालिनी देवी	६	सागर	भोगवती
७	पूर्णभद्र	पूर्णभद्र	७	रजत	भोगमालिनी
८	सीता	सीतादेवी	८	पूर्णभद्र	पूर्णभद्र
९	हरिसह	हरिसह	९	सीता	सीता
			१०	हरि	हरि

५. सुमेरु पर्वतके वनोंमें कूटोंके नाम व देव

(ति. प./४/१९६९–१९७७); (रा. वा./३/१०/१३/१७९/१९); (ह. पु./५/३२९); (त्रि. सा./६२७); (ज. प./४/१०५)।

सं.	कूट	देव	सं.	कूट	देव
	(ति. प.) सोमनस वनमें			(शेष ग्रन्थ) नन्दन वनमें	
१	नन्दन	मेघंकरा	१	नन्दन	मेघकरी
२	मन्दर	मेघवती	२	मन्दर	मेघवती
३	निषध	सुमेघा	३	निषध	सुमेघा
४	हिमवान्	मेघमालिनी	४	हैमवत*	मेघमालिनी
५	रजत	तोयंधरा	५	रजत*	तोयन्धरा
६	रुचक	विचित्रा	६	रुचक*	विचित्रा
७	सागरचित्र	पुष्पमाला	७	सागरचित्र	पुष्पमाला*
८	वज्र	अनिन्दिता	८	वज्र	आनन्दिता

*नोट—ह. पु. मे सं. ४ पर हिमवत; सं. ६ पर रजत; सं. ८ पर चित्रक नाम दिये हैं। ज. प. में सं. ४ पर हिमवान्, सं. ५ पर विजय नामक कूट कहे है। तथा सं. ७ पर देवीका नाम मणिमालिनी कहा है।

६. जम्बूद्वीपके द्रहों व वापियोंके नाम

१. हिमवान् आदि कुलाचलोंपर—

[क्रमसे पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक व पुण्डरीक द्रह है। ति. प. में रुक्मि पर्वतपर महापुण्डरीकके स्थानपर पुण्डरीक तथा शिखरी पर्वतपर पुण्डरीकके स्थानपर महापुण्डरीक कहा है। (दे० लोक/३/१,४ व लोक/३/९)।

२. सुमेरु पर्वतके वनोंमें—आग्नेय दिशाको आदि करके (ति. प./४/१९४६,१९६२–१९६३), (रा. वा./३/१०/१३/१७९/२६); (ह. पु./५/३३४–३४६), (त्रि. सा./६२८–६२९), (ज. प./४/११०–११३)।

	सौमनसवन (ति. प.)	नन्दन वन (रा. वा.)		सौमनसवन (ति. प.)	नन्दनवन (रा. वा.)
१	उत्पलगुल्मा	उत्पलगुल्मा	७	कज्जला	कज्जला
२	नलिना	नलिना	८	कज्जलप्रभा	कज्जलप्रभा
३	उत्पला	उत्पला	९	श्रीभद्रा	श्रीकान्ता
४	उत्पलोज्ज्वला	उत्पलोज्ज्वला	१०	श्रीकान्ता	श्रीचन्द्रा
५	भृंगा	भृंगा	११	श्रीमहिता	श्रीनिलया
६	भृंगनिभा	भृंगनिभा	१२	श्रीनिलया	श्रीमहिता

सं०	सौमनसवनमे ति प.	नन्दनवनमे रा. वा.	सं०	सौमनसवनमें ति. प.	नन्दनवनमे रा. वा.
१३	नलिना (पद्मा)	नलिना (पद्मा)	१५	कुमुदा	कुमुदा
१४	नलिनगुल्मा (पद्मगुल्मा)	नलिनगुल्मा (पद्मगुल्मा)	१६	कुमुद्रप्रभा	कुमुद्रप्रभा

नोट—ह. पु., त्रि. सा. व ज. प. में नन्दनवनकी अपेक्षा ति. प. वाले ही नाम दिये है।

३. देव व उत्तरकुरुमे

(ति. प./४/२०९१,२१२६); (रा. वा /३/१०/१३/१७४/२९ + १७५/५,६, ९, २८), (ह. पु /५/१९४-१९६); (त्रि. सा./६५७), (ज. प./६/ २८, ८३) ।

सं.	देवकुरुमें दक्षिणसे उत्तर-की ओर	उत्तरकुरुमे उत्तरसे दक्षिण-की ओर	सं.	देवकुरुमे दक्षिणसे उत्तर-की ओर	उत्तरकुरुमे उत्तरसे दक्षिणकी ओर
१	निषध	नील	४	सुलस	ऐरावत
२	देवकुरु	उत्तरकुरु	५	विद्युत् (तडित्प्रभ)	माल्यवान्
३	सूर	चन्द्र			

३. विदेह क्षेत्रकी १२ विभंगा नदियोंके नाम

(ति. प /४/२२१५-२२१६), (रा वा /३/१०/१३/१७५/३३ + १७७/७, १७,२५). (ह पु./५/२३९-२४३), (त्रि सा /६६६-६६९), (ज. प / ८-९वाँ अधिकार) ।

अवस्थान	सं.	नदियोके नाम: ति प.	रा वा	त्रि सा	ज. प.
उत्तरीपूर्व विदेह-मे पश्चिमसे पूर्वकी ओर	१	द्रहवती	ग्राहवती	गाध-वती	ग्रहवती
	२	ग्राहवती	ह्रदया-वती	द्रहवती	द्रहवती
	३	पंकवती	पंकावती	पकवती	पकवती
दक्षिणी पूर्व विदेहमे पूर्वसे पश्चिमकी ओर	१	तप्तजला	तप्तजला	तप्तजला	तप्तजला
	२	मत्तजला	मत्तजला	मत्तजला	मत्तजला
	३	उन्मत्त जला	उन्मत्तज.	उन्मत्तज.	उन्मत्तज.
दक्षिणी अपर विदेहमे पूर्वसे पश्चिमकी ओर	१	क्षीरोदा	क्षीरोदा	क्षीरोदा	क्षीरोदा
	२	सीतोदा	सीतोदा	सीतोदा	सीतोदा
	३	औषध वाहिनी	स तान्तर वाहिनी	सोतो-वाहिनी	सोतो-वाहिनी
उत्तरी अपर विदेहमे पश्चिम-से पूर्वकी ओर	१	गंभीरमालिनी	गंभीरमा.	गंभीरमा.	गंभीरमा.
	२	फेनमालिनी	फेनमा.	फेनमा	फेनमा.
	३	ऊर्मिमालिनी	ऊर्मिमा.	उर्मिमा	उर्मिमा

७. महाद्रहोंके कूटोंके नाम

१ पद्मद्रहके तटपर ईशान आदि चार विदिशाओमे वैश्रवण, श्रीनिचय, क्षुद्रहिमवान् व ऐरावत ये तथा उत्तर दिशामे श्रीसंचय ये पाँच कूट है। उसके जलमे उत्तर आदि आठ दिशाओमे जिनकूट, श्रीनिचय, वैडूर्य, अकमय, आश्चर्य, रुचक, शिखरी व उत्पल ये आठ कूट है। (ति. प /४/१६६०-१६६५) । २ महापद्म आदि द्रहोके कूटोके नाम भी इसी प्रकार हैं। विशेषता यह है कि हिमवान्के स्थानपर अपने-अपने पर्वतोके नामवाले कूट है। (ति. प /४/१७३०-१७३४,१७६५-१७६६)।

८. जम्बूद्वीपकी नदियोंके नाम

१. भरतादि महाक्षेत्रोंमें

क्रमसे गंगा-सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित् हरिकान्ता; सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता-रक्तोदा ये १४ नदियाँ है। (दे० लोक/३/१.७ व लोक/३/११) ।

२. विदेहके ३२ क्षेत्रोंमें

गंगा-सिन्धु नामकी १६ और रक्ता-रक्तोदा नामकी १६ नदियाँ है। (दे० लोक/३/११) ।

९. लवणसागरके पर्वत पाताल व तन्निवासी देवोंके नाम

(ति. प./४/२४१० + २४६०-२४६६); (ह. पु /५/४४३,४६०); (त्रि. सा./८९७ + ९०५-९०७); (ज. प./१०/६ + ३०-३३) ।

दिशा	सागरके अभ्यन्तर भागकी ओर: पर्वत	देव	मध्यवर्ती पातालका नाम	सागरके बाह्यभागकी ओर: पर्वत	देव
पूर्व	कौस्तुभ	कौस्तुभ	पाताल	कौस्तुभावास	कौस्तुभावास
दक्षिण	उदक	शिव	कदम्ब	उदकावास	शिवदेव
पश्चिम	शंख	उदकावास	बडवामुख	महाशंख	उदक
उत्तर	दक	लोहित (रोहित)	यूपकेशरी	दकवास	लोहितांक

नोट—त्रि. सा. में पूर्वादि दिशाओमें क्रमसे बडवामुख, कदंबक, पाताल व यूपकेशरी नामक पाताल बताये है।

१०. मानुषोत्तर पर्वतके कूटों व देवोंके नाम

(ति. प./४/२७६६+२७७६-२७८२); (रा. वा./३/३५/६/१९७/१४); (ह. पु./५/६०२-६१०); (त्रि. सा./९४२) ।

दिशा	सं०	कूट	देव
पूर्व	१	वैडूर्य	यशस्वान्
	२	अश्मगर्भ	यशस्कान्त
	३	सौगन्धी	यशोधर
दक्षिण	४	रुचक	नन्द (नन्दन)
	५	लोहित	नन्दोत्तर
	६	अंजन	अशनिघोष
पश्चिम	७	अंजनमूल	सिद्धार्थ
	८	कनक	वैश्रवण (क्रमण)
	९	रजत	मानस (मानुष्य)
उत्तर	१०	स्फटिक	सुदर्शन
	११	अंक	मेघ (अमोघ)
	१२	प्रवाल	सुप्रबुद्ध
आग्नेय	१३	तपनीय	स्वाति
	१४	रत्न	वेणु
ईशान	१५	प्रभंजन*	वेणुधारी
	१६	वज्र	हनुमान
वायव्य	१७	वेलम्ब*	वेलम्ब
नैऋ त्य	१८	सर्वरत्न*	वेणुधारी (वेणुनीत)

नोट—रा. वा. व ह. पु. में सं. १५, १७ व १८ के स्थानपर क्रमसे सर्वरत्न, प्रभंजन व वेलम्ब नामक कूट हैं। तथा वेणुतालि, प्रभंजन व वेलम्ब ये क्रमसे उनके देव हैं।

११. नन्दीश्वर द्वीपकी वापियाँ व उनके देव

पूर्वादि क्रमसे

(ति. प./५/६३-७८); (रा. वा./३/३५/-/१९८/१); (ह. पु./५/६५९-६६५); (त्रि. सा./९६९-९७०) ।

दिशा	सं.	ति. प. व. त्रि. सा.	रा. वा.	ह. पु.
पूर्व	१	नन्दा	नन्दा	सौधर्म
	२	नन्दवती	नन्दवती	ऐशान
	३	नन्दोत्तरा	नन्दोत्तरा	चमरेन्द्र
	४	नन्दिघोष	नन्दिघोष	वैरोचन
दक्षिण	१	अरजा	विजया	वरुण
	२	विरजा	वैजयन्ती	यम
	३	अशोका	जयन्ती	सोम
	४	वीतशोका	अपराजिता	वैश्रवण
पश्चिम	१	विजया	अशोका	वेणु
	२	वैजयन्ती	सुप्रबुद्धा	वेणुताल
	३	जयन्ती	कुमुदा	वरुण (धरण)
	४	अपराजिता	पुण्डरीकिणी	भूतानन्द
उत्तर	१	रम्या	प्रभंकरा	वरुण
	२	रमणीय	सुमना	यम
	३	सुप्रभा	आनन्दा	सोम
	४	सर्वतोभद्रा	सुदर्शना	वैश्रवण

नोट – दक्षिणके कूटोंपर सौधर्म इन्द्रके लोकपाल, तथा उत्तरके कूटोंपर ऐशान इन्द्रके लोकपाल रहते हैं।

१२. कुण्डलवर पर्वतके कूटों व देवोंके नाम

दृष्टि सं० १—(ति. प /५/१२२-१२५); (त्रि. सा./९४४-९४५);
दृष्टि सं० २—(ति. प./५/१३३); (रा. वा./३/३५/-/१९९/१०) (ह. पु./५/६९०-६९४) ।

दिशा	कूट	देव	
		दृष्टि सं. १	दृष्टि सं. २
पूर्व	वज्र		विशिष्ट (त्रिशिरा)
	वज्रप्रभ		पंचशिर
	कनक		महाशिर
	कनकप्रभ		महाबाहु
दक्षिण	रजत	कूट सदृश नाम	पद्म
	रजतप्रभ (रजताभ)		पद्मोत्तर
	सुप्रभ		महापद्म
	महाप्रभ		वासुकी
पश्चिम	अंक		स्थिरहृदय
	अंकप्रभ		महाहृदय
	मणि		श्री वृक्ष
	मणिप्रभ		स्वस्तिक
उत्तर	रुचक*		सुन्दर
	रुचकाभ*		विशालनेत्र
	हिमवान्*		पाण्डुक*
	मन्दर*		पाण्डुर*

नोट—रा. वा. व. ह. पु. में उत्तर दिशाके कूटोका नाम क्रमसे स्फटिक, स्फटिकप्रभ, हिमवान् व महेन्द्र बताया है। अन्तिम दो देवोंके नामोंमें पाण्डुकके स्थानपर पाण्डुर और पाण्डुरके स्थानपर पाण्डुक बताया है।

१३. रुचकवर पर्वतके कूटों व देवोंके नाम

१. दृष्टि सं० १ की अपेक्षा

(ति. प./५/१४५-१६३), (रा. वा /३/३५/-/१९९/२८), (ह पु /५/-७०५-७१७), (त्रि. सा./९४८-९५८)।

दिशा	स.	ति प.; त्रि सा. कूट	देवी	देवियोंका काम	रा. वा., ह पु कूट	देवी	देवियोंका काम
पूर्व	१	कनक	विजया	जन्म कल्याणकपर झारी धारण करना	वैडूर्य	विजया	जन्म कल्याणकपर झारी धारण करना
	२	काचन	वैजयन्ती		काचन	वैजयन्ती	
	३	तपन	जयन्ती		कनक	वैजयन्ती	
	४	स्वतिक-दिशा	अपराजिता		अरिष्टा	अपराजिता	
	५	सुभद्र	नन्दा		दिकूस्वतिक	नन्दा	
	६	अजनमूल	नन्दवती		नन्दन	नन्दोत्तरा	
	७	अजन	नन्दोत्तर		अंजन	आनन्दा	
	८	वज्र	नन्दिषेणा		अजनमूल	नन्दिवर्धना	
दक्षिण	१	स्फटिक	इच्छा	जन्म कल्याणकपर दर्पण धारण करना	अमोघ	सुस्थिता	दर्पण धारण करना
	२	रजत	समाहार		सुप्रबुद्ध	सुप्रणिधि	
	३	कुमुद	सुप्रकोर्णा		मन्दिर	सुप्रबुद्धा	
	४	नलिन	यशोधरा		विमल	यशोधरा	
	५	पद्म	लक्ष्मी		रुचक	लक्ष्मीवती	
	६	चन्द्र	शेषवती		रुचकोत्तर	कीर्तिमती	
	७	वैश्रवण	चित्रगुप्ता		चन्द्र	वसुन्धरा	
	८	वैडूर्य	वसुन्धरा		सुप्रतिष्ठ	चित्रा	
पश्चिम	१	अमोघ	इला	जन्म कल्याणकपर छत्र धारण करना	लोहिताक्ष	इला	जन्म कल्याणकपर छत्र धारण करना
	२	स्वस्तिक	सुरादेवी		जगत्कुसुम	सुरा	
	३	मन्दर	पृथिवी		पद्म	पृथिवी	
	४	हैमवत्	पद्मा		नलिन (पद्म)	पद्मावती	
	५	राज्य	एकनासा		कुमुद	कानना (कांचना)	
	६	राज्योत्तम	नवमी		सौमनस	नवमिका	
	७	चन्द्र	सीता		यश	यशस्वी (शीता)	
	८	सुदर्शन	भद्रा		भद्र	भद्रा	
उत्तर	१	विजय	अलभूषा	जन्म कल्याणकपर चँवर धारण करना	स्फटिक	अलभूषा	जन्म कल्याणकपर चँवर धारण करना
	२	वैजयन्त	मिश्रकेशी		अक	मिश्रकेशी	
	३	जयन्त	पुण्डरीकिणी		अजन	पुण्डरीकिणी	
	४	अपराजित	वारुणी		कांचन	वारुणी	
	५	कुण्डलक	आशा		रजत	आशा	
	६	रुचक	सत्या		कुण्डल	ह्री	
	७	रत्नकूट	ह्री		रुचिर (रुचक)	श्री	
	८	सर्वरत्न	श्री		सुदर्शन	धृति	

दिशा	स	ति. प, त्रि, सा कूट	देवी	देवियोंका काम	ति. प., त्रि. सा. कूट	देवी	देवियोंका काम
उपरोक्तकी अभ्यन्तर दिशाओमे	१	विमल	कनका	दिशाएँ निर्मल करना	×	×	
	२	नित्यालोक	शतपदा (शतह्रदा)				
	३	स्वयप्रभ	कनकचित्रा				
	४	नित्योद्योत	सौदामिनी				
उपरोक्तकी अभ्यन्तर दिशाओमे	१	रुचक	रुचककीर्ति	जातकर्म करना			
	२	मणि	रुचककान्ता				
	३	राज्योत्तम	रुचकप्रभा				
	४	वैडूर्य	रुचका				

२ दृष्टि सं २ की अपेक्षा—

(ति प /५/१६९–१७७); (रा वा /३/३५/-/१९९/२४); (ह. पु /–५/७०२–७२७)।

दिशा	सं	(ति प.) कूट	देवी	देवीका काम	रा. वा.; ह पु. कूट	देवी	देवीका काम
चारो दिशाओ में	१	नन्द्यावर्त	पद्मोतर	दिग्गजेन्द्र	←	←	
	२	स्वस्तिक	सुभद्र		←	सहस्ती	
	३	श्रीवृक्ष	नील		←	←	
	४	बर्धमान	अंजनगिरि		←	←	
अभ्यंतर दिशामें ३२ दे० पूर्वोक्त दृष्टि सं. १ में प्रत्येक दिशाके आठ कूट							
विदिशामें प्रदक्षिणा रूपसे	१	वैडूर्य	रुचका	जातकर्म करनेवाली महत्तर	←	←	जातकर्म करनेवाली महत्तरिका
	२	मणिभद्र	विजया		रत्न	विजया	
	३	रुचक	रुचकाभा		←	←	
	४	रत्नप्रभ	वैजयन्ती		←	←	
	५	रत्न	रुचकान्ता		मणिप्रभ	रुचककान्ता	
	६	शखरत्न	जयन्ती		सर्वरत्न	जयन्ती	
	७	रुचकोत्तम	रुचकोत्तमा		←	रुचकप्रभा	
	८	रत्नोच्चय	अपराजिता		←	←	
उपरोक्तके अभ्यन्तर भागमें चारो दिशाओमें	१	विमल	कनका	दिशाओंमें उद्योत करना	←	चित्रा	दिशाओंमें उद्योत करना
	२	नित्यालोक	शतपदा (शतह्रदा)		←	कनकचित्रा	
	३	स्वयंप्रभ	कनकचित्रा		←	त्रिशिरा	
	४	नित्योद्योत	सौदामिनी		←	सूत्रमणि	

१४. पर्वतों आदिके वर्ण—

सं.	नाम	प्रमाण					वर्ण	
		ति.प./४/ गा. सं.	रा.वा/३/सू./ वा./पृ/पंक्ति	ह.पु./५/ श्लो. सं.	त्रि. सा./ गा. सं.	ज.प./ अधि./गा.	उपमा	वर्ण
१	हिमवान्	९५	१२/-/१८४/११		५६६	३/३	सुवर्ण	पीत (रा. वा.)
२	महाहिमवान्	"	त. सू/३/१२			"	चाँदी	शुक्ल (रा. वा.)
३	निषध	"	"		"	"	तपनीय	तरुणादित्य (रक्त)
४	नील	"	"		"	"	वैडूर्य	मयूरग्रीव (रा वा.)
५	रुक्मि	"	"		"	"	रजत	शुक्ल
६	शिखरी	"	"		"	"	सुवर्ण	पीत (रा. वा.)
७	विजयार्ध	१०७	१०/४/१७१/१५	२१		२/३२	रजत	शुक्ल
८	विजयार्धके कूट				६७०		सुवर्ण	पीत
९	सुमेरु :—	← दे० लोक/३/६.४ तथा ३/७ →						
	पाण्डुकशिला	१८२०	१०/१३/१८०/१८	३४७	६३३	४/१३	अर्जुन सुवर्ण	श्वेत
	पाण्डुकम्बला	१८३०	"	"	"	"	रजत	विद्रुम (श्वेत)
	रक्तकम्बला	१८३४	"	"	"	"	रुधिर	लाल
	अतिरक्त	१८३२	"	"	"	"	सुवर्ण तपनीय	रक्त
१०	नाभिगिरि				७१९		दधि	श्वेत
	मतान्तर					३/२१०	सुवर्ण	पीत
११	वृषभगिरि	२२९०			७१०		"	"
१२	गजदन्त :—							
	सौमनस	२०१६	१०/१३/१७५/११	२१२	६६३		चाँदी	स्फटिक रा. वा.
	विद्युत्प्रभ	"	१०/१३/१७५/१७	"	"		तपनीय	रक्त
	गन्धमादन	"	१०/१३/१७३/१६	२१०	"		कनक	पीत
	माल्यवान्	"		२११	"		वैडूर्य	(नीला)
१३	कांचन		१०/१३/१७५/१	२०२			काचन	पीत
	मतान्तर				६५९		तोता	हरा
१४	वक्षार				६७०		सुवर्ण	पीत
१५	वृषभगिरि	२२९०			७१०		"	पीत
१६	गंगाकुंडमें—							
	शैल	२२१					वज्र	श्वेत
	गंगाकूट	२२३					सुवर्ण	पीत
१७	पद्मद्रहका कमल:—							
	मृणाल	१६६७	१७/-/१८५/६				रजत	श्वेत
	कन्द	"	"				अरिष्टमणि	ब्राउन
	नाल	"	"		५७०	३/७५	वैडूर्य	नील
	पत्ते		२२/२/१८८/३				लोहिताक्ष	रक्त
	कर्णिका		"				अर्कमणि	केशर
	केसर		"				तपनीय	रक्त
१८	जम्बूवृक्षस्थल:—							
	सामान्य स्थल	२१५२		१७५			सुवर्ण	पीत
	इसकी वापियोंके		१०/१३/१७४/२२					
	कूट		"				अर्जुन	श्वेत
	स्कन्ध	२१५५					पुखराज	पीत
	पीठ	२१५२					रजत	श्वेत
१९	वेदियाँ:—							
	जम्बूद्वीपकी जगती	१६					सुवर्ण	पीत
	भद्रशालवन (वेदी)	२११४	१०/१३/१७८/५				"	पद्मवर (रा. वा)
	नन्दनवन वेदी	१९८६	१०/१३/१७९/६				"	"

सं.	नाम	प्रमाण					वर्ण	
		ति. प /४/-गा. स.	रा वा /३/सूत्र/-वा./पृ /पंक्ति	ह.पु./५/-श्लो. सं.	त्रि. सा./-गा. सं.	ज. प./-अधि /गा	उपमा	वर्ण
	सौमनसवन (वेदी)	१९३८	१०/१३/१८०/२				सुवर्ण	पद्मवर (रा. वा.)
	पाण्डुकवन वेदी		१०/१३/१८०/१२					"
	जम्बूवृक्ष वेदी		७/१/१६६/१८				(जाम्बूनद सुवर्ण)	रक्ततायुक्त पीत
	जम्बूवृक्षकी १२ वेदियाँ	२१५१	७/१/१६६/२० तथा १०/१३/१७४/१७		६४१		सुवर्ण	पद्मवर
	सर्व वेदियाँ				६७१	१/५२,६४	सुवर्ण	पीत
२०	**नदियोंका जल—**							
	गगा-सिन्धु					३/१६६	हिम	श्वेत
	रोहित-रोहितास्या					"	कुंदपुष्प	"
	हरित-हरिकान्ता					"	मृणाल	हरित
	सीता-सीतोदा					"	शख	श्वेत
२१	**लवणसागरके पर्वत—**	२४६१		४६०	९०८		रजत	धवल
	पूर्व दिशा वाले					१०/३०	सुवर्ण	पीत
	दक्षिण दिशा वाले					१०/३१	अकरत्न	
	पश्चिम दिशा वाले					१०/३२	रजत	श्वेत
	उत्तर दिशा वाले					१०/३३	वैडूर्य	नील
२२	इष्वाकार				९२५		सुवर्ण	पीत
२३	मानुषोत्तर	२७५१		५९५	९२७		"	"
२४	अंजनगिरि	५७		६५४	९६८		इन्द्रनीलमणि	काला
२५	दधिमुख	६५		६६९	"		दही	सफेद
२६	रतिकर	६७		६७३	"		सुवर्ण	रक्ततायुक्त पीत
२७	कुण्डलगिरि				९४३		"	"
२८	रुचकवर पर्वत	१४१	३/३५/–/१९९/२२		९४३		"	"

६. द्वीप क्षेत्र पर्वत आदिका विस्तार

१. द्वीप सागरोंका सामान्य विस्तार

१. जम्बूद्वीपका विस्तार १००,००० योजन है। तत्पश्चात् सभी समुद्र व द्वीप उत्तरोत्तर दुगुने-दुगुने विस्तारयुक्त है। (त.सू./३/८); (ति.प./५/३२)

२. लवणसागर व उसके पातालादि

१. सागर

सं.	स्थलविशेष	विस्तारादिमें क्या	प्रमाण यो.
	दृष्टि सं. १—(ति. प /४/२४००–२४०७); (रा. वा /३/३२/३/१९३/८), (ह. पु./५/४३४), (त्रि. सा./९१५); (ज. प./१०/२२)।		
१	पृथिवीतल पर	विस्तार	२००,०००
२	किनारोसे ९५००० योजन भीतर जानेपर तलमे	"	१०,०००
३	" " " " " आकाशमें	"	१०,०००
४	" " " " "	गहराई	१०००
५	" " " " " आकाशमे	ऊँचाई	७००
	दृष्टि स. २—		
६	लोगायणीके अनुसार उपरोक्त प्रकार आकाशमें अवस्थित (ति. प./४/२४४५), (ह. पु./५/४३४)।	"	११०००
	दृष्टि सं. ३—		
७	सग्गायणीके अनुसार उपरोक्त प्रकार आकाशमें अवस्थित (ति. प./४/२४४८)।	"	१० ०००
८	तीनों दृष्टियोसे उपरोक्त प्रकार आकाशमे पूर्णिमाके दिन	ऊँचाई	दे० लोक/४/१

२. पाताल

पाताल विशेष	विस्तार यो.			गहराई	दीवारोंकी मोटाई	ति. प./४ गा.	रा वा /३/३२/४/१३३/ पृ.	ह. पु /५/गा०	त्रि सा./ गा.	ज. प /१०/ गा.
	मूलमें	मध्यमें	ऊपर							
ज्येष्ठ	१०,०००	१००,०००	१०,०००	१००,०००	५००	२४१२	१४	४४४	८९६	५
मध्यम	१०००	१०,०००	१०००	१०,०००	५०	२४१४	२६	४५१	,,	१३
जघन्य	१००	१०००	१००	१०००	५	२४३३	३१	४५६	,,	१२

३. पर्वत व द्वीप

नाम	विशेष	विस्तार	ऊँचाई	ति. प./४/ गा नं.	त्रि. सा./ गा. नं.	ज. प /१० गा. नं
पर्वत	सागरके विस्तारकी दिशामें	११६०००	१०००	२४५८	६०८	२८
गौतम द्वीप	गोलाईका व्यास	१२०००	१२०००	×	६१०	४०
		विस्तार				
		दृष्टि सं. १	दृष्टि स.२			
कुमानुष द्वीप	दिशाओ वाले	१००	१००	(दे० लोक/४/१)		
	विदिशा वाले	५५	५०			
	अन्तरदिशा वाले	५०	१००			
	पर्वतके पास वाले	२५	२५			

३. अढाई द्वीपके क्षेत्रोंका विस्तार—१. जम्बू द्वीपके क्षेत्र

नाम	विस्तार (योजन)	जीवा		पार्श्व भुजा (योजन)	प्रमाण			
		दक्षिण	उत्तर (योजन)		ति. प./४/ गा.नं.	ह पु./५/गा.	त्रि.सा./गा	ज. प / अ /गा
भरत सामान्य	५२६ ६/१९	अपने अपने पर्वतोंकी उत्तर जीवा	१४४७१ ५/१९	धनुषपृष्ठ १४५२८ ११/१९	१०५+१९२	१८+४०	६०४+७७१	२/१०
दक्षिण भरत	२३८ ३/१९		९७४८ १२/१९	धनुषपृष्ठ ९७६६ १/१९	१८४			
उत्तर भरत	,,		१४४७१ ५/१९	१८१२ १५/३८	१९१			
हैमवत	२१०५ ५/१९		३७६७४ १६/१९	६७५५ ३/१९	१६९८	५७	७७३	
हरिवर्ष	८४२१ १/१९		७३९०१ १७/१९	१३३६१ १३/१८	१७३९	७४	७७५	३/२२८
विदेह	३३६८४ ४/१९		मध्यमें १००,००० उत्तर व दक्षिणमें पर्वतोंकी जीवा	३३७६७ ७/१९	१७७५	६१	६०५+७७७	७/३
रम्यक	→		हरिवर्षवत्	←	२३३५	६७	७७८	२/२०८
हैरण्यवत्	→		हैमवतवत्	←	२३५०	,,	,,	,,
ऐरावत	→		भरतवत्	←	२३६५	,,	,,	,,
देवकुरु व उत्तर कुरु-								
दृष्टि सं. १	११५९२ २/१९		५३०००	६०४१८ १२/१९ (धनुष पृष्ठ)	२१४०			
दृष्टि सं. २	,,		५२०००	,,	२१२९			
दृष्टि सं. ३	११८४२ २/१९		५३०००	६०४१८ १२/१९ (धनुष पृष्ठ)	×	१६८	×	६/२
			←	(रा वा./३/१०/१३/१७४/३)	→			
३२ विदेह	पूर्वापर २२१२ ७/८		दक्षिण-उत्तर १६५९२ २/१९		२२१७+ २२३१	२५३	६०५	७/११+२०
			(←	(रा. वा /३/१०/१३/१७६/१८)	→			

२ धातकीखण्डके क्षेत्र

नाम	लम्बाई	विस्तार			प्रमाण
		अभ्यन्तर (योजन)	मध्यम (योजन)	बाह्य (योजन)	
भरत	द्वीपके विस्तार वत्	६६१४ १२९/२१२	१२५८१ ३६/२१२	१८५४७ १५५/२१२	(ति. प /४/२५६४-२५७२), (रा वा / ३/३३/२-७/१९२/२); (ह. पु /५/ ५०२-५०४); (त्रि सा./९२९), (ज. प./११/६-९७)
हैमवत		२६४५८ १२/२१२	५०३२४ १४४/२१२	७४१९० १९६/२१२	
हरिवर्ष		१०५८३३ १५६/२१२	२०१२२९८ १५२/२१२	२९६७६३ १४८/२१२	
विदेह		४२३३३४ २००/२१२	८०५१९४ १८४/२१२	११८७०५४ १६८/२१२	
रम्यक		→	हरिवर्षवत्	←	
हैरण्यवत्		→	हैमवतवत्	←	
ऐरावत		→	भरतवत्	←	
नाम		**बाण**	**जीवा**	**धनुषपृष्ठ**	**ति प./४ गा** / **ह पु./५/श्लो**
दोनों कुरु		३६६६८०	२२३१५८	६२५४८६	२५६३ / ५३५

नाम	पूर्व पश्चिम विस्तार	दक्षिण-उत्तर लम्बाई (योजन)			ति प /४/ गा.
		आदि	मध्यम	अन्तिम	
दोनों बाह्य विदेहोके क्षेत्र—(ति. प./४/गा. स); (ह पु /५/५४८-५४९); (त्रि. सा /६३१-६३३)					
कच्छा-गन्धमालिनी	प्रत्येक क्षेत्र = ९७०३ ३/८ यो० = (ति. प /४/२६०७)	५०९५७० २००/२१२	५१४१५४ २००/२१२	५१८७३८ २००/२१२	२६२२
सुकच्छा-गन्धिला		५१९६९३ १०८/२१२	५२४२७७ १०८/२१२	५२८८६१ १०८/२१२	२६३४
महाकच्छा-सुगन्धा		५२९१००	५३३६८४	५३८२६८	२६३८
कच्छकावती-गन्धा		५३९२२२ १२०/२१२	५४३८०६ १२०/२१२	५४८३९० १२०/२१२	२६४२
आवर्ता-वप्रकावती		५४८६२९ १२/२१२	५५३२१३ १२/२१२	५५७७९७ १२/२१२	२६४६
लांगलावती-महावप्रा		५५८७५१ १३२/२१२	५६३३३५ १३२/२१२	५६७९१९ १३२/२१२	२६५०
पुष्कला-सुवप्रा		५६८१५८ २४/२१२	५७२७४२ २४/२१२	५७७३२६ २४/२१२	२६५६
वप्रा-पुष्कलावती		५७८२८० १४४/२१२	५८२८६४ १४४/२१२	५८७४४८ १४४/२१२	२६५८
दोनों अभ्यन्तर विदेहोके क्षेत्र—(ति प./४/गा. स), (ह पु /५/५५५), (त्रि. सा /६३१-६३३)					
पद्मा-मंगलावती	प्रत्येक क्षेत्र = ९६०३ ३/८ (ति प /४/२६०७)	२९४६२३ १६६/२१२	२९००३९ १६६/२१२	२८५४५५ १६६/२१२	२६७०
सुपद्मा-रमणीया		२८४५०१ ७६/२१२	२७९९१७ ७६/२१२	२७५३३३ ७६/२१२	२६७४
महापद्मा-सुरम्या		२७५०९४ १८४/२१२	२७०५१० १८४/२१२	२६५९२६ १८४/२१२	२६७८
पद्मकावती-रम्या		२६४९७२ ६४/२१२	२६०३८८ ६४/२१२	२५५८०४ ६४/२१२	२६८२
शंखा-वत्सकावती		२५५५६५ १७२/२१२	२५०९८१ १७२/२१२	२४६३९७ १७२/२१२	२६८६
नलिना-महावत्सा		२४५४४३ ५२/२१२	२४०८५९ ५२/२१२	२३६२७५ ५२/२१२	२६९०
कुमुदा-सुवत्सा		२३६०३६ १६०/२१२	२३१४५२ १६०/२१२	२२६८६८ १६०/२१२	२६९४
सरिता-वत्सा		२२५९१४ ४०/२१२	२२१३३० ४०/२१२	२१६७४६ ४०/२१२	२६९८

३. पुष्करार्धके क्षेत्र

नाम	लम्बाई	विस्तार अभ्यन्तर (यो०)	विस्तार मध्यम (यो०)	विस्तार बाह्य (यो०)	प्रमाण
भरत	द्वीपके विस्तार वत्	४१५७९ १७३/२१२	५३५१२ १९९/२१२	६५४४६ १३/२१२	(ति. प /४/२८०५-२८२७); (रा. वा /३/३४/२-५/१९६/१३), (ह पु /५/५८०-५८४), (त्रि सा /९३९), (ज प /११/६७-७२)
हैमवत		१६६३१९ ५६/२१२	२१४०५१ १६०/२१२	२६१७८४ ५२/२१२	
हरि		६६५२७७ १२/२१२	८५६२०७ ४/२१२	१०४७१३६ २०८/२१२	
विदेह		२६६११०८ ४८/२१२	३४२४८२८ १६/२१२	४१८८५४७ १९६/२१२	
रम्यक		६६५२७७ १२/२१२	५३५१२ १९९/२१२	६५४४६ १३/२१२	
हैरण्यवत्		१६६३१९ ५६/२१२	२१४०५१ १६०/२१२	२६१७८४ ५२/२१२	
ऐरावत		४१५७९ १५३/२१२	८५६२०७ ४/२१२	१०४७१३६ २०८/२१२	
नाम		**वाण**	**जीवा**	**धनुषपृष्ठ**	**प्रमाण**
दोनों कुरु		१४८६९३१	४२६९१६	३६९६८३५	उपरोक्त

नाम	पूर्व पश्चिम विस्तार	दक्षिण उत्तर लम्बाई आदिम	दक्षिण उत्तर लम्बाई मध्यम	दक्षिण उत्तर लम्बाई अन्तिम	ति प./४/गा
दोनों बाह्य विदेहोंके क्षेत्र—(ति. प /४/गा. नं), (त्रि सा /९३१-९३३)					
कच्छा-गन्धमालिनी		१९२१८७४ ५६/२१२	१९३१३२२ ११२/२१२	१९४०७७० १६८/२१२	२८३७
सुकच्छा-गन्धिला		१९४२६७९ १९६/२१२	१९५२१२८ ४०/२१२	१९६१५७६ ९६/२१२	२८४८
महाकच्छा-सुवल्गु		१९६२०५३ १५६/२१२	१९७१५०२	१९८०९५० ५६/२१२	२८५२
कच्छकावती-गन्धा		१९८२८५९ ८४/२१२	१९९२३०७ १४०/२१२	२००१७५५ १९६/२१२	२८५६
आवर्ता-वप्रकावती		२००२२३३ ४४/२१२	२०११६८१ १००/२१२	२०२११२९ १५६/२१२	२८६०
लांगलावर्ती-महावप्रा		२०२३०३८ १८४/२१२	२०३२४८७ २८/२१२	२०४१९३५ ८४/२१२	२८६४
पुष्कला व सुवप्रा		२०४२४१२ १४४/२१२	२०५१८६० २००/२१२	२०६१३०९ ४४/२१२	२८६८
वप्रा व पुष्कलावती		२०६३२१८ ७२/२१२	२०७२६६६ १२८/२१२	२०८२११४ १८४/२१२	२८७२
दोनों अभ्यन्तर विदेहोके क्षेत्र-	(ति प /४/गा), (त्रि सा./९३१-९३३)				
पद्मा व मंगलावती		१५००९५३ २०४/२१२	१४९१५०५ १४८/२१२	१८४२०५७ ९२/२१२	२८८०
सुपद्मा व रमणीया		१४८०१४८ ६४/२१२	१४७०७०० ८/२१२	१४६१२५१ १६४/२१२	२८८४
महापद्मा-सुरम्या		१४६०७७४ १०४/२१२	१४५१३२६ ४८/२१२	१४४१८७७ २०४/२१२	२८८८
रम्या-पद्मकावती		१४३९९६८ १७६/२१२	१४३०५२० १२०/२१२	१४२१०७२ ६४/२१२	२८९२
शंखा-वप्रकावती		१४२०५९५ ४/२१२	१४१११४६ १६०/२१२	१४०१६९८ १०४/२१२	२८९६
महावप्रा-नलिन		१३९९७८९ ७६/२१२	१३९०३४१ २०/२१२	१३८०८९२ १७६/२१२	२९००
कुमुदा-सुवप्रा		१३८०४१५ ११६/२१२	१३७०९६७ ६०/२१२	१३६१५१९ ४/२१२	२९०४
सरिता-वप्रा		१३५९६०९ १८८/२१२	१३५०१६१ १३२/२१२	१३४०७१३ ७६/२१२	२९०८

४. जम्बू द्वीपके पर्वतों व कूटोंका विस्तार

१. लम्बे पर्वत

नोट—पर्वतोकी नीव सर्वत्र ऊँचाईसे चौथाई होती है।

(ह. पु/५/१०६); (त्रि. सा./१३६), (ज. प./३/३७)।

नाम	ऊँचाई यो०	नींव यो०	विस्तार यो०	दक्षिण जीवा यो०	उत्तर जीवा यो०	पार्श्व भुजा यो०	प्रमाण: ति. प./४/गा.	रा. वा./३/-/-/-/	ह. पु/५/गा.	त्रि.सा./गा.	ज. प/अ./गा.
कुलाचल—											
हिमवान्	१००	↓ ऊँचाईके चौथाई ↑	१०५२ १२/१९	↓ अपने अपने क्षेत्रकी उत्तर जीवा ↑	२४९३२ ६/१९	५३५० १५/३८	१६२४	११/२/१८२/११	४५	७७२	३/४
महाहिमवान्	२००		४२१० १०/१९		५३९३१ ६/१९	९२७६ ९/३८	१७१७	११/४/१८२/३२	६३	७७४	३/१७
निषध	४००		१६८४२ २/१९		९४१५६ २/१९	२०१६५ ५/३८	१७५०	११/६/१८३/१२	८०	७७६	३/२४
नील	→		→		निषधवत्	←	२३२७	११/८/१८३/२४	९७	"	"
रुक्मि	→		→		महाहिमवानवत्	←	२३४०	११/१०/१८३/३१	"	"	३/१७
शिखरी	→		→		हिमवानवत्		२३५५		"		३/४
भरत क्षेत्र—											
विजयार्ध	२५		५०		१०७२० ११/१९	४८८ ३३/३८	१०८+१८३	१०/४/१७१/१६	२१+३२	७७०	२/३३
गुफा	८ यो०		१२ यो०				१७५	१०/४/१७१/२८		५९२	२/८८
विदेह विजयार्ध	२५		५०		२२१२ ७/८	५०	२२५७	१०/१३/२७६/२०	२२५		८/७७

नाम	स्थल विशेष	ऊँचाई यो०	गहराई यो०	चौडाई यो०	लम्बाई यो०	ति. प./४/गा	रा वा/३/१०/१३/.../..	ह. पु./५/गा.	त्रि.सा./गा.	ज प./अ/गा.
वक्षार	सामान्य	—	↓ ऊँचाईके चौथाई ↑		१६५९२ २/१९	२२३१	१७६/३		६०५, ७४३	७/८
	नदीके पास	५००		५००		२३०७	१७६/१	२३३	७४५	७/१८
	पर्वतके पास	४००		५००		"	"	"	"	"
गजदन्त	सामान्य				३०२०९ ६/१९	२०२४		२१५	७५६	६/७
दृष्टि सं. १	कुलाचलोके पास	४००		५००		२०१७		२१३	७४५	६/३
	मेरुके पास	५००		५००				"	७५६	६/६
दृष्टि स. २	कुलाचलोके पास	४००		२५०		२०२७	१७३/१६			
	मेरुके पास	५००		५००		"	"			

२. गोल पर्वत—

नाम	ऊँचाई	गहराई	विस्तार मूलमे	विस्तार मध्यमें	विस्तार ऊपर	ति प./४/गा.	रा वा/३/१०/वा/पृ/पं.	ह. पु./५/गा.	त्रि सा/गा.	ज प/अ/गा.
	यो.		यो	यो.	यो.					
वृषभगिरि	१००		१००	७५	५०	२७०			७१०	
नाभिगिरि—										
दृष्टि सं १	१०००		१०००	१०००	१०००	१७०४	७/१८२/१२		७१८	३/२१०
दृष्टि स. २	१०००		१०००	७५०	५००	१७०६				
सुमेरु — पर्वत	९९०००	१०००	१०,०००	दे. लोक/३/६/१	१०००	१७८१	७/१७७/३२	२८३	६०६	४/२२
चूलिका	४०	×	१२	८	४	१७९५	७/१८०/१४	३०२	६२१	४/१३२
यमक —										
दृष्टि सं. १	२०००	ऊँचाईसे चौथाई	१०००	७५०	५००	२०७७				
दृष्टि स २	१०००		,,	,,	,,		७/१७४/२६	१९३	६५५	६/१६
कांचनगिरि	१००		१००	७५	५०	२०९४	७/१७५/१		६५९	६/४५
दिग्गजेन्द्र	१००		१००	७५	५०	२१०४, २११३			६६१	४/७६

३. पर्वतीय व अन्य कूट—

कूटोंके विस्तार सम्बन्धी सामान्य नियम—सभी कूटोंका मूल विस्तार अपनी ऊँचाईका अर्धप्रमाण है । ऊपरी विस्तार उससे आधा है । उनकी ऊँचाई अपने-अपने पर्वतोकी गहराईके समान है ।

अवस्थान	ऊँचाई	विस्तार मूलमें	विस्तार मध्यमें	विस्तार ऊपर	त्रि. प ४/गा.	रा. वा./३/सू. वा/पृ./प,	ह. पु/५/गा.	त्रि.सा/गा	ज. प./अ/गा.
	यो.	यो.	यो.	यो.					
भरत विजयार्ध	$6\frac{1}{4}$	$6\frac{1}{4}$	$4\frac{11}{16}$	$3\frac{1}{8}$	१४६		२८	७२३	३/४६
ऐरावत विजयार्ध	→	भरत विजयार्धवत्		←			११२	,,	,,
हिमवान्	२५	२५	$18\frac{3}{4}$	$12\frac{1}{2}$	१६३३		५५	,,	,,
महाहिमवान्	→	हिमवान्से दुगुना		←	१७२५		७२	,,	,,
निषध	→	हिमवान्से चौगुना		←	१७५९		९०	,,	,,
नील	→	निषधवत्		←	२३२७		१०१	,,	,,
रुक्मि	→	महाहिमवान्वत्		←	२३४०		१०४	,,	,,
शिखरी	→	हिमवान्वत्		←	२३५५		१०५	,,	,,
हिमवान्का सिद्धायतन	५००	५००	३७५	२५०		११/२/१८२/१६		×	×
शेष पर्वत	→	हिमवान्के समान		←					
	(रा. वा/३/११/४/१८३/५; ६/१८३/१८; ८/१८३/२५, १०/१८३/३२; १२/१८४/५)								
चारों गजदन्त	पर्वतसे चौथाई	उपरोक्त नियमानुसार जानना।			२०३२, २०४८, २०५८, २०६०	१०/१३/१७३/-२३	२२४	२७६	
पद्मद्रह	→	हिमवान् पर्वतवत्		←	१६६६				
अन्यद्रह	→	अपने अपने पर्वतोवत्		←					
भद्रशालवन	→	(दे. लोक/३/१२.५)		←					
नन्दनवन	५००	५००	३७५	२५०	१९९७		३३१	६२६	
सौमनसवन	२५०	२५०	$187\frac{1}{2}$	१२५	१९७१				
नन्दनवनका बलभद्रकूट	→	(दे० लोक/३/६.२)		←	१९९७				
सौमनस वनका बलभद्र कूट—	→	(दे० लोक/३/६.३)		←					
दृष्टि स. १	१००	१००	७५	५०	१९७८				
दृष्टि सं २	१०००	१०००	७५०	५००	१९८०	(१०/१३/१७६/१६)			

४ नदी कुण्ड द्वीप व पाण्डुक शिला आदि—

अवस्थान	ऊँचाई	गहराई	विस्तार	त्रि. प/४/गा.	रा वा/३/२२/वा/पृ/पं	ह. पु/५/गा	त्रि. सा./गा.	ज. प/अ./गा.
नदी कुण्डोंके द्वीप—								
गंगाकुण्ड	२ कोस	१० यो.	८ यो.	२२१	१/१८७/२६	१४३	५८७	३/१६५
सिन्धुकुण्ड	→	गंगावत्	←		२/१८७/३२			
शेष कुण्डयुगल	२ कोस	१० यो.	उत्तरोत्तर दूना		३-१४/१८८-१८९			
उपरोक्त द्वीपोके शैल—		विस्तार: मूल	मध्य / ऊपर					
गंगा कुण्ड	१० यो.	४ यो.	२ यो / १ यो.	२२२		१४४		३/१६५
		लम्बाई	चौडाई					
पाण्डुकशिला—								
दृष्टि स १	८ यो.	१०० यो.	५० यो.	१८१९		३४९	६३५	
दृष्टि सं. २	४ यो.	५०० यो.	२५० यो	१८२१	१८०/२०			४/१४२
		विस्तार: मूल	मध्य / ऊपर					
पाण्डुक शिलाके सिहासन व आसन	५०० ध.	५०० ध.	२७५ ध. / २५० ध.					

५ अढाई द्वीपोंकी सर्व बेदियाँ—

वेदियोंके विस्तार सम्बन्धी सामान्य नियम—देवारण्यक व भूतारण्यक वनोके अतिरिक्त सभी कुण्डो, नदियों, वनो, नगरो, चैत्यालयों आदिकी वेदियाँ समान होती हुई निम्न विस्तार-सामान्यवाली है। (ति प/४/२३८८-२३९१), (ज. प./१/६०-६६)

अवस्थान	ऊँचाई	गहराई	विस्तार	ति प./४/गा.	रा. वा./३/सू/वा./पृ/पं.	ह. पु/५/गा	त्रि. सा./गा.	ज. प./अ./गा.
सामान्य	१/२ यो.	ऊँचाईसे चौथाई	५०० धनुष	२३९०		११६		१/६६
भूतारण्यक	१ यो.	"	१००० "	२३९१				
देवारण्यक	"	"	"					
हिमवान्	→	सामान्य बेदीवत्	←	१६२६				
पद्मद्रह	→	"	←		१५/-/१८५/१			
शाल्मली वृक्षस्थल	→	"	←	२१६८				
गजदन्त	→	भूतारण्यक वत्	←	२१००,२१२८				
भद्रशालवन	→	"	←	२००६				
धातकीखण्डकी सर्व	→	उपरोक्त वत्	←			५११		
पुष्करार्धकी सर्व	→	"	←					
इष्वाकार	→	सामान्य वत्	←	२५३५				
मानुषोत्तर की—								
तटवेदी	→	सामान्य वत् १$\frac{१}{४}$ को	←	२७५४				
शिखरवेदी	४०००							
जम्बूद्वीपकी जगती		गहराई	विस्तार: मूल / मध्य / ऊपर					
	८ यो.	१/२ यो	१२ यो / ८ यो. / ४ यो	१५-२७	६/१/३७०/२६	३७८	८८५	१/२६
		प्रवेश	आयाम					
जगतीके द्वार—								
दृष्टि स १	८ यो.	४ यो	४ यो	४३				
दृष्टि सं २	७५० यो	×	५०० यो	७३				
लवणसागर	→	जम्बूद्वीपकी जगती वत्	←	२५१६				

५. शेष द्वीपोंके पर्वतों व कूटोंका विस्तार—

१. धातकीखण्डके पर्वत—

नाम	ऊँचाई	लम्बाई	विस्तार	ति. प./४/गा.	रा. वा./३/३३/वा/पृ/प.	ह पु/५/गा.	त्रि सा./गा.	ज प/अ./गा.
पर्वतोके विस्तार व ऊँचाई सम्बन्धी सामान्य नियम—								
कुलाचल	जम्बूद्वीपवत्	स्वदीपवत्	जम्बूद्वीपसे दूना	२५४४-२५४६	५/१९५/२०	४९७ ५०६		
विजयार्ध	,,	निम्नोक्त	,,	,,		,,		
वक्षार	,,	,,	,,	,,		,,		
गजदन्त दृष्टि स० १	,,	,,	,,	,,		,,		
दृष्टि सं. २	→	जम्बूद्वीपवत्	←	२५४७				
उपरोक्त सर्व पर्वत-	→	जम्बूद्वीपसे दूना	←					
वृषभगिरि	→	जम्बूद्वीपवत्	←			५११		
यमक	→	,,	←			,,		
कांचन	→	,,	←			,,		
दिग्गजेन्द्र	→	,,	←			,,		
		विस्तार						
		दक्षिण उत्तर	पूर्व पश्चिम					
इष्वाकार	४०० यो.	स्वद्वीपवत्	१००० यो.	२५३३	६/१९५/२६	४९५	९२५	११/४
विजयार्ध	जम्बूद्वीपवत्	जम्बूद्वीपसे दूना	स्वक्षेत्रवत्	२६०७+ उपरोक्त सामान्य नियमवत्				
वक्षार	जम्बूद्वीपवत्	निम्नोक्त	जम्बूद्वीपसे दूना	४०८+	उपरोक्त सामान्य	नियमवत्		
गजदन्त—								
अभ्यन्तर	,,	२५६२२७	,,	२५९१		५३३	७५६	
बाह्य	,,	५६९२५७	,,	२५९२		५३४	,,	
सुमेरु पर्वत—		गहराई	विस्तार: मूल / मध्य / ऊपर					
पृथिवीपर	८४०००	१०००	९४००० / दे लोक ३/६/३ / १०००	२५७७	६/१९५/२८	५१३		११/१८
पातालमें	दृष्टि स १ की अपेक्षा विस्तार=१०,००० ,, ,, २ ,, ,, ,, =९५००			,,		,,		
चूलिका	→ जम्बूद्वीपके मेरुवत् ←			२५८३				

नाम	ऊँचाई व चौडाई	दक्षिण उत्तर विस्तार			ति. पा ४/गा.	
		आदिम	मध्यम	अन्तिम		
दोनो बाह्य विदेहोके वक्षार —	दे० पूर्वोक्त सामान्य नियम					त्रि सा /९३२-९३३
चित्र व देवमाल कूट		५१८७३८ २००/२१२	५१९२१६ ४८/२१२	५१९६९३ १०८/२१२	२६३२	
नलिन व नागकूट		५३८२६८	५३८७४५ ६०/२१२	५३९२२२ १२०/२१२	२६४०	
पद्म व सूर्यकूट		५५७७९७ १२/२१२	५५८२७४ ७२/२१२	५५८७५१ १३२/२१२	२६४८	
एकशैल व चन्द्रनाग		५७७३२६ २४/२१२	५७७८०३ ८४/२१२	५७८२८० १४४/२१२	२६५६	
दोनो अभ्यन्तर विदेहोके वक्षार						
श्रद्धावान् व आत्माजन		२८५४५५ १२६/२१२	२८४९७८ १३६/२१२	२८४५०१ ७६/२१२	२६७२	
अंजन व विजयवान्		२६५९२६ १५४/२१२	२६५४४९ १२४/२१२	२६४९७२ ६४/२१२	२६८०	
आशीविष व वैश्रवण		२४६३९७ १७२/२१२	२४५९२० ११२/२१२	२४५४४३ ५२/२१२	२६८८	
सुखावह व त्रिकूट		२२६८६८ १६०/२१२	२२६३९१ १००/२१२	२२५९१४ ४०/२१२	२६९६	

२. पुष्कर द्वीपके पर्वत व कूट

नाम	ऊँचाई यो	लम्बाई यो	विस्तार यो.	ति.प./४/गा.	रा वा./३/३४/ वा/पृ./पं.	ह पु/५/गा	त्रि सा./गा.	ज.प./ अ/गा.
पर्वतोंके विस्तार व ऊँचाई सम्बन्धी सामान्य नियम								
कुलाचल	जम्बूद्वीपवत्	स्वद्वीप प्रमाण	जम्बूद्वीपसे चौगुना	२७८६-२७९०	५/१९७/२	५८८-५८६		
विजयार्ध	,,	निम्नोक्त	,,	,,		,,		
वक्षार	,,	,,	,,	,,		,,		
गजदन्त	,,	,,	,,	,,		,,		
नाभिगिरि	,,	,,	,,	,,		,,		
उपरोक्त सर्वपर्वत								
दृष्टि सं. २	→	जम्बूद्वीपवत्	←	२७९१				
वृषभगिरि	→	,,	←					
यमक	→	,,	←					
कांचन	→	,,	←					

नाम	ऊँचाई यो.	लम्बाई यो.	विस्तार यो	ति.प./४/गा.	रा.वा/३/३४/ वा/पृ./पं	ह.पु/५/ गा.	त्रि. सा./ गा	ज.प./अ/गा.
दिग्गजेन्द्र	→	जम्बूद्वीपवत्	←					
मेरु व इष्वाकार	→	धातकीवत्	←	२८१२	५/१९७/४	५८६		
		विस्तार						
		दक्षिण उत्तर यो	पूर्व पश्चिम यो.					
विजयार्ध	उपरोक्त	उपरोक्त नियम	स्व क्षेत्रवत्	२८२६	+ उपरोक्त सामान्य नियम			
वक्षार	जम्बूद्वीपवत्	निम्नोक्त	जम्बूद्वीपसे चौगुना	२८२७	+ उपरोक्त सामान्य नियम			
गजदन्त—								
अभ्यन्तर	,,	१६२६११६	,,	२८१३			२५७	
बाह्य	,,	२०४२२१६	,,	२८१४			,,	

नाम	ऊँचाई	विस्तार: गहराई	मूल	मध्य	ऊपर	ति.प./४/गा.	रा.वा/३/३४/ वा/पृ./पं	ह.पु/५/ गा.	त्रि. सा./ गा	ज.प./अ/गा.
मानुषोत्तरपर्वत	१७२१	चौथाई	१०२२	७२३	४२४	२७४६	६/१९७/८	५९१	९३७+९४२	११/५६
मानुषोत्तरके कूट—	लोक/६/४/३ में कथित नियमानुसार									
दृष्टि स. १	४३० १/४		४३० १/४		२१५ १/८					
दृष्टि स २	५००		५००	३७५	२५०		६/१९७/१६	६००		

नाम	ऊँचाई व चौड़ाई	विस्तार: आदिम	मध्यम	अन्तिम	ति प./ ४/गा	
दोनो बाह्य विदेहोके वक्षार—						त्रि. सा./९३२-९३३
चित्रकूट व देवमाल	पूर्वोक्त सामान्य नियम	१९४०७७० १६८/२१२	१९४१७२५ ७६/२१२	१९४२६७९ ११६/२१२	२८४६	
पद्म व वैडूर्य कूट		१९८०९५० ५६/२१२	१९८१९०४ १७६/२१२	१९८२८५९ ८४/२१२	२८५४	
नलिन व नागकूट		२०२११२९ १७६/२१२	२०२२०८४ ६४/२१२	२०२३०३८ १८४/२१२	२८६२	
एक शैल व चन्द्रनाग		२०६१३०९ ४४/२१२	२०६२२६३ १६४/२१२	२०६३२१८ ७२/२१२	२८७०	
दोनो अभ्यन्तर विदेहोके वक्षार—						
श्रद्धावान व आत्मांजन	पूर्वोक्त सामान्य नियम	१४८२०५७ १२/२१२	१४८११०२ १८४/२१२	१४८०१४८ ६/२१२	२८८२	
अंजन व विजयवान		१४४१८७७ २०४/२१२	१४४०९२३ ८४/२१२	१४३९९६८ १७६/२१२	२८९०	
आशीविष व वक्षवण		१४०१६९८ १०४/२१२	१४००७४३ १९६/२१२	१३९९७८९ ७६/२१२	२८९८	
महहृद व त्रिकूट		१३६१५१९ ८/२१२	१३६०५६४ ९६/२१२	१३५९६०९ १८८/२१२	२९०६	

३. नन्दीश्वर द्वीपके पर्वत

नाम	ऊँचाई	गहराई	विस्तार			ति प./५/गा.	रा.वा /३/३५/-पृ./पं	ह.पु./५/गा	त्रि सा / गा.
			मूल	मध्य	ऊपर				
	यो.	यो	यो.	यो.	यो.				
अंजनगिरि	८४०००	१०००	८४०००	८४०००	८४०००	५८	१९८/८	६५२	९६८
दधिमुख	१०,०००	१०००	१०,०००	१०,०००	१०,०००	६५	१९८/२५	६७०	"
रतिकर	१०००	२५०	१०००	१०००	१०००	६८	१९८/३१	६७४	"

४. कुण्डलवर पर्वत व उसके कूट

नाम	ऊँचाई	गहराई	विस्तार			ति.प./५/गा.	रा.वा /३/३५/-/पृ /प.	ह पु./५/गा	त्रि. सा./गा.
			मूल	मध्य	ऊपर				
	यो.	यो	यो.	यो.	यो.				
पर्वत—									
दृष्टि सं. १	७५०००	१०००	१०२२०	७२३०	४२४०	११८	१९९/८	६८७	९४३
दृष्टि स. २	४२०००	१०००	→	मानुषोत्तरवत	←	१३०			
इसके कूट	→	मानुषोत्तरके दृष्टि सं २ वत			←	१२४,१३१	१९९/१२		९६०
द्वीपके स्वामी देवोंके कूट	→	सर्वत्र उपरोक्तसे दूने			←	१३७		६९७	

५. रुचकवर पर्वत व उसके कूट

नाम	ऊँचाई	गहराई	विस्तार			ति.प./५/गा	रा.त्र '३/३५/-/पृ /पं	ह पु /५/गा.	त्रि सा /गा.
			मूल	मध्य	ऊपर				
पर्वत—									
दृष्टि स १	८४०००	१०००	८४०००	८४०००	८४०००	१४२			९४३
दृष्टि स २	८४०००	१०००	४२०००	४२०००	४२०००		१९९/२३	८००	
इसके कूट—									
दृष्टि स. १	→	मानुषोत्तरकी दृष्टि स २ वत			←	१४६			९६०
दृष्टि स. २	५००		१०००	७५०	५००	१६६, १७१	२००/२०	७०१	
३२ कूट	५००		१०००	१०००	१०००		१९९/२५		

६. स्वयम्भूरमण पर्वत

नाम	ऊँचाई	गहराई	विस्तार			ति.प./५/गा	रा वा /३/३५/-/पृ./पं	ह पु /५/गा	त्रि सा./गा.
			मूल	मध्य	ऊपर				
पर्वत		१०००				२३६			

६. अढाई द्वीपके वनखण्डोंका विस्तार

१. जम्बूद्वीपके वनखण्ड

नाम	विस्तार		ति प /४/गा.	रा.वा /३/१८/१३/पृ	ह पु /५/गा.	त्रि सा /गा	ज प /अ /गा.
जम्बूद्वीप जगतीके अभ्यन्तर भागमें	२ को		८७				
विजयार्धके दोनों पार्श्वोंमें	२ को.		१७१				
हिमवान्के दोनों पार्श्वोंमें	२ को.		१६३०		११५	७३०	
नाम	विस्तार						
	पूर्वापर	उत्तर दक्षिण					
देवारण्यक	२९२२ यो	१६५९२ $\frac{2}{19}$ यो	२२२०	१७७/२	२८२		७/१५
भूतारण्यक	→ देवारण्यकवत् ←						

नाम	विस्तार			ति. प./४/गा.	रा.वा./३/१०/१३/पृ./पं.	ह पु./५/गा.	त्रि सा /गा.	ज.प /अ /गा
	मेरुके पूर्व या पश्चिममें	मेरुके उत्तर या दक्षिणमें	उत्तर दक्षिण कुल विस्तार					
	यो.	यो.	यो.					
भद्रशाल	२२०००	२५०	विदेहक्षेत्रवत्	२००२	१७८/३	२३७	६१०+६१२	४/४३
	वलय व्यास	बाह्य व्यास	अभ्यन्तर व्यास					
	यो.	यो.	यो.					
नन्दनवन	५००	९९५४ $\frac{६}{११}$	८९५४ $\frac{६}{११}$	११८९	१७९/७	२९०	६१०	४/८२
सौमनसवन	५००	४२७२ $\frac{८}{११}$	३२७२ $\frac{८}{११}$	१९३८+१९८६	१८०/१	२९६	"	४/१२७
पाण्डुकवन	४९४	१०००		१८१०+१८१४	१८०/१२	३००	"	४/१३१

२. धातकीखण्डके वनखण्ड

सामान्य नियम—सर्ववन जम्बूद्वीप वालोंसे दूने विस्तार वाले है। (ह पु /५/५०९)

नाम	पूर्वापर विस्तार	उत्तर दक्षिण विस्तार			ति.प./४/गा.	रा.वा./३/३३/६/पृ./पं.	ह पु./५/गा.
		आदिम	मध्यम	अन्तिम			
	यो.	यो.	यो.	यो.			
बाह्य	५८४४	५८७४४८ $\frac{१४४}{२१२}$	५९०२३८ $\frac{२४}{२१२}$	५९३०२७ $\frac{११६}{२१२}$	२६०६+२६६०		
अभ्यन्तर	"	२१६७४६ $\frac{४०}{२१२}$	२१३९५६ $\frac{१६०}{२१२}$	२१११६७ $\frac{६८}{२१२}$	२६०६+२७००		
	मेरुसे पूर्व या पश्चिममें	मेरुके उत्तर या दक्षिणमें	उत्तर दक्षिण कुल विस्तार				
	यो.	यो.	यो.				
भद्रशाल	१०७८७९	नष्ट	१२२५ $\frac{७६}{८८}$		२५२८		५३१
	वलयव्यास	बाह्यव्यास	अभ्यन्तरव्यास				
	यो.	यो.	यो.				
नन्दन	५००	९३५०	८३५०			१९५/३१	५२०
सौमनस	५००	३८००	२८००			१९६/१	५२४
पाण्डुक	४९४	१०००	१२ चूलिका				५२७

३. पुष्करार्ध द्वीपके वनखण्ड

नाम	पूर्वापर विस्तार	उत्तर दक्षिण विस्तार			ति.प./४/गा
		आदिम	मध्यम	अन्तिम	
देवारण्यक—					
बाह्य	११६८८	२०८२११४ $\frac{१८४}{२१२}$	२०८७६९३ $\frac{१५६}{२१२}$	२०९३२७२ $\frac{१२८}{२१२}$	२८२८+२८७४
अभ्यन्तर	"	१३४०७१३ $\frac{७६}{२१२}$	१३३५१३४ $\frac{१०४}{२१२}$	१३२९५५५ $\frac{१३२}{२१२}$	२८२८+२९१०
	मेरुके पूर्व या पश्चिममें	मेरुके उत्तर या दक्षिणमें	उत्तर दक्षिण कुल विस्तार		ति.प./४/गा
भद्रशाल	२१५७५८	नष्ट	२४५१ $\frac{७०}{८८}$		२८२१
नन्दन आदि वन	→	धातकीखण्डवत्	←	(दे० लोक/४/४.४)	

४. नन्दीश्वरद्वीपके वन

वापियोके चारो ओर वनखण्ड है, जिनका विस्तार (१००,०००×५०,०००) योजन है।

७. अढाई द्वीपकी नदियोंका विस्तार

(ति प./४/६४); (रा. वा./३/३५/-/१९८/२८), (त्रि. सा./९७२)

१. जम्बूद्वीपकी नदियाँ

नाम	स्थल विशेष	चौडाई	गहराई	ऊँचाई	ति प./४/गा.	रा.वा./३/२२/-वा/पृ./पं.	ह.पु./५/गा	त्रि.सा./गा	ज.प./-अ./गा.
नदियोके विस्तार व गहराई आदि सम्बन्धी सामान्य नियम—भरत व ऐरावतक्षेत्रको नदियोका विस्तार प्रारम्भमें ६ १/४ यो, और अन्तमें उससे दशगुणा होता है। आगे-आगेके क्षेत्रोमें विदेह पर्यन्त वह प्रमाण दुगुना-दुगुना होता गया है। (त्रि. सा./६००), (ज. प./३/१६४)। नदियोका विस्तार उनकी गहराईसे ५० गुणा होता है। (ह. पु./५/५०७)।									
वृषभाकार प्रणाली—									
गगा-सिन्धु	हिमवान्	६ १/४ यो.	२ को प्रवेश	२ को. प्रवेश	२१४		१४०	५८४	३/१५०
आगेके नदी युगल	विदेह तक उत्तरोत्तर दुगुने						१५१	५९९	३/१५२
	ऐरावत तक उत्तरोत्तर आधे						१५६	„	३/१५३
गंगा—	उद्गम	६ १/४ यो.	१/२ को.		१९७		१३६	६००	३/१६४
	पर्वतसे गिरनेवाली धार			पर्वतकी ऊँचाई	२१३			५८६	
	दृष्टि सं. १	१०		„					
	दृष्टि सं. २	२५		„	२१७				३/१६८
	गुफा द्वार पर	८ यो.			२३६		१४८		७/९३
	समुद्र प्रवेश पर	६२ १/२ यो.		५ को.	२४६	१/१८७/२९	१४९	६००	३/१७७
सिन्धु	→	गगानदीवत्		←	२५२	२/१८७/३२	१५१	„	३/१६४
रोहितास्या	→	गगासे दूना		←	१६६६	३/१८८/६	१५१	५९९	३/१८०
रोहित	→	रोहितास्यावत्		←	१७३७	४/१८८/१७	„	„	„
हरिकान्ता	→	रोहितसे दुगुना (गंगासे चौगुना)		←	१७४८	५/१८८/२१	„	„	३/१८१
हरित	→	हरिकान्तावत्		←	१७७३	६/१८८/२९	„	„	„
सीतोदा	→	हरिकान्तासे दूना (गगासे आठ गुना)		←	२०७४	७/१८८/३३	„	„	३/१८२
सीता	→	सीतोदावत्		←	२१२२	८/१८९/६	„	„	„
उत्तरकी छः नदियाँ	→	क्रमसे हरितादिवत्		←		९–२४/१८९	१५६		
विदेहका ६४ नदियाँ	→	गगानदीवत्		←	→	(दे. लोक/३/१०)			←
विभगा	कुण्डके पास	५० को.	१६५९२ २/१९ (उत्तर दक्षिण)		२२१८			६०५	
	महानदीके पास	५०० को			२२१९				
	दृष्टि सं. २	→ सर्वत्र गगासे दूना ←				३/१०/१३/-१७६/१३			७/२७

२. धातकीखण्डकी नदियाँ

नाम	पूर्व पश्चिम	उत्तर दक्षिण लम्बाई			ति. प./४/गा.
		आदिम	मध्यम	अन्तिम	
सामान्य नियम—सर्व नदियाँ जम्बूद्वीपसे दुगुने विस्तार वाली है। (ति. प./४/२५४६)					
दोनो बाह्य विदेहोकी विभंगा—					
द्रहवती व ऊर्मिमालिनी	सर्वत्र २५० यो० (ति प./४/२६०८)	५२८८६१ १०८/२१२	५२८९८० १६०/२१२	५२९१००	२६३६
ग्रहवती व फेनमालिनी		५४८३९० १२०/२१२	५४८५०९ १७२/२१२	५४८६२९ १२/२१२	२६४४
गम्भीरमालिनी व पकावती		५६७९१९ १३२/२१२	५६८०३८ १८४/२१२	५६८१५८ २४/२१२	२६५२
दोनो अभ्यन्तर विदेहोकी विभंगा					
क्षीरोदा व उन्मत्तजला		२७५३३३ ७६/२१२	२७५२१४ २४/२१२	२७५०९४ १८४/२१२	२६७६
मत्तजला व सीतोदा		२५५८०४ ६४/२१२	२५५६८५ २/२१२	२५५५६५ १७२/२१२	२६८४
तप्तजला व औषधवाहिनी		२३६२७५ ४२/२१२	२३६१५६	२३६०३६ १६०/२१२	२६९२

३. पुष्करद्वीपकी नदियाँ

नाम	उत्तर दक्षिण लम्बाई			ति प /४/ गा
	आदिम	मध्यम	अन्तिम	
सामान्य नियम—सर्व नदियाँ जम्बूद्वीपवालीसे चौगुनी विस्तार युक्त है। (ति. प /४/२७८८)				
दोनो बाह्य विदेहोकी विभगा—				
द्रहवती व ऊर्मिमालिनी	१९६१५७६ ९६/२१२	१९६१८१५ २०/२१२	१९६२०५३ १५६/२१२	२८५०
ग्रहवती व फेनमालिनी	२००१७५५ १६६/२१२	२००१९९४ १२०/२१२	२००२२३३ ४४/२१२	२८५८
गम्भीरमालिनी व पंकावती	२०४१९३५ ८४/२१२	२०४२१७४ २/२१२	२०४२४१२ १४४/२१२	२८६६
दोनो अभ्यन्तर विदेहोकी विभगा—				
क्षीरोदा व उन्मत्तजला	१४६१२५१ १६४/२१२	१४६१०१३ २८/२१२	१४६०७७४ १०४/२१२	२८८६
मत्तजला व सीतोदा	१४२१०७२ ६४/२१२	१४२०८३३ १४०/२१२	१४२०५९५ ४/२१२	२८९४
तप्तजला व अन्तर्वाहिनी	१३८०८९२ १७६/२१२	१३८०६५४ ४०/२१२	१३८०४१५ ११६/२१२	२९०२

८. मध्यलोकको वापियों व कुण्डोंका विस्तार

१. जम्बूद्वीप सम्बन्धी—

नाम	लम्बाई	चौडाई	गहराई	ति. प /४/गा.	रा. वा./३/सू./वा./पृ./प.	ह. पु./५/गा.	त्रि. सा./गा.	ज. प./अ./गा
सामान्य नियम—सरोवरोका विस्तार अपनी गहराईसे ५० गुना है (ह. पु /५/५०७) द्रहोकी लम्बाई अपने-अपने पर्वतोकी ऊँचाईसे १० गुनी है, चौडाई ५ गुनी और गहराई दसवें भाग है। (त्रि. सा./५६८) ; (ज. प./३/७१)								
जम्बूद्वीप जगतीके मूलवाली—								
उत्कृष्ट	२०० ध.	१०० ध.	२० ध	२३				
मध्यम	१५० ,,	७५ ,,	१५ ,,	,,				
जघन्य	१०० ,,	५० ,,	१० ,,	,,				
पद्मद्रह	१००० ,,	५००	१०	१६५८	(त. सू./३/१५-१६)	१२६		
महापद्म		→ पद्मसे दुगुना ←		१७२७		१२६		
तिगिंछ		→ पद्मसे चौगुना ←		१७६१		,,		
केसरी		→ तिगिंछवत् ←		२३२३		,,	दे० उपरोक्त सामान्य नियम	दे० उपरोक्त सामान्य नियम
पुण्डरीक		→ महापद्मवत् ←		२३४४		,,		
महापुण्डरीक		→ पद्मवत् ←		२३५५		,,		
देवकुरुके द्रह		→ पद्मद्रहवत् ←		२०९०	१०/१३/१७४/३०	१९५	६५६	६/५७
उत्तरकुरुके द्रह		→ देवकुरुवत् ←		२१२६				
नन्दनवनकी वापियाँ	५० यो.	२५ यो.	१० यो.					
सौमनसवनकी वापियाँ								
दृष्टि स. १	२५ ,,	२५ ,,	५ यो.	१९४७				
दृष्टि सं. २		→ नन्दनवनवत् ←			१०/१३/१८०/७			
गगा कुण्ड —	गोलाईका व्यास		गहराई					
दृष्टि सं. १	१० यो.		१० यो.	२१६+२२१				
दृष्टि स. २	६० ,,		१० ,,	२१८	२२/१/१८७/२५	१४२	५८७	
दृष्टि सं. ३	६२½ ,,		१० ,,	२१९				
सिन्धुकुण्ड		→ गंगाकुण्डवत् ←			२२/५/१८७/३२			
आगे सीतासीतोदा तक		→ उत्तरोत्तर दुगुना ←			२२/३-८/१८९			
आगे रक्तारक्तोदा तक		→ उत्तरोत्तर आधा ←			२२/९-१४/१८९			
३२ विदेहोकी नदियोके कुण्ड	६३ यो.		१० यो.		१०/१३/१७६/२४			
विभंगाके कुण्ड	१२० यो.		१० यो.		१०/१३/१७६/१०			